: ज्ञान द्रव्यसे लाभार्थी :

पूज्य-गुरुभगवंतोकी प्रेरणा से श्राविका उपाश्रयकी ज्ञानद्रव्यकी उपजसे

JSBN code
ASHAP0003

॥ श्री सुधर्मास्वामीने नमः ॥

अहो ! श्रुतम् - स्वाध्याय संग्रह [१७]

बृहत् क्षेत्र समास

[गाथा और अर्थ]

—: प्रकाशक :—

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

साबरमती, अहमदाबाद

॥ श्री सुधर्मास्वामीने नमः ॥

अहो ! श्रुतम् - स्वाध्याय संग्रह [१७]

बृहत् क्षेत्र समास

[गाथा और अर्थ]

कर्ता :— श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणजी

अनुवाद :— पू.आ.श्री हेमचंद्रसूरिजी म.सा.

—: संकलन :—

श्रुतोपासक

—: प्रकाशक :—

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभण्डार

शा. वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, साबरमती, अमदाबाद-380005

Mo. 9426585904

email - ahoshrut.bs@gmail.com

प्रकाशक : श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभण्डार

प्रकाशन : संवत २०७६

आवृत्ति : प्रथम

ज्ञाननिधि में से
पू. संयमी भगवंतो और ज्ञानभण्डार को भेट...
गृहस्थ किसी भी संघ के ज्ञान खाते में
७५ रुपये अर्पण करके मालिकी कर सकते हैं।

प्राप्तिस्थान :

(१) सरेमल जवेरचंद फाईनफेब (प्रा.) ली.
672/11, बोम्बे मार्केट, रेलवेपुरा, अहमदाबाद-३८०००२
फोन : 22132543 (मो.) 9426585904

(२) कुलीन के. शाह
आदिनाथ मेडीसीन, Tu-02 शंखेश्वर कोम्पलेक्स, कैलासनगर, सूरत
(मो.) 9574696000

(३) शा. रमेशकुमार एच. जैन
A-901 गुंदेचा गार्डन, लालबाग, मुंबई-१२.
(मो.) 9820016941

(४) श्री विनीत जैन
जगद्गुरु हीरसूरीश्वरजी जैन ज्ञानभण्डार,
चंदनबाला भवन, १२९, शाहुकर पेठ के पास, मीन्ट स्ट्रीट, चेन्नाई-१
फोन : 044-23463107 (मो.) 9381096009

(५) शा. हसमुखलाल शान्तीलाल राठोड
७/८ वीरभारत सोसायटी, टीम्बर मार्केट, भवानीपेठ, पूना.
(मो.) 9422315985

मुद्रक : विरति ग्राफिक्स, अहमदाबाद, मो. **8530520629**
Email Id: mishrahemantkumar28@gmail.com

बृहत् क्षेत्र समास

मूळगाथा और अर्थ

प्रथम अधिकार

जंबूद्वीप

नमिउण सजलजलहर-निभस्सणं वद्धमाणजिणवसहं।
समयखेत्तसमासं, वोच्छामि गुरुवएसेणं ॥ १ ॥

अर्थ - पानीवाले बादल जैसी आवाजवाले वर्धमान जिनेश्वर को प्रणाम करके समयक्षेत्र के संक्षेप को मैं गुरु के उपदेश से कहूँगा। (१)

जंबुद्दीवाइया, सयंभुरयणायरावसाणाओ।
सव्वे वि असंखिज्जा, दीवोदहिणो तिरियलोए ॥ २ ॥

अर्थ - तिर्च्छालोक में जंबूद्वीप आदिवाले और स्वयंभूरमण-समुद्र अन्तवाले सभी असंख्य द्वीप-समुद्र हैं। (२)

उद्धारसागराणं, अड्ढाइज्जाण जत्तिआ समया।
दुगुणादुगुणापवित्थर-दीवोदहि रज्जु एवइया ॥ ३ ॥

अर्थ - १ राज में दोगुने-दोगुने विस्तारवाले, ढाई उद्धार सागरोपम के जितने समय हैं, उतने द्वीप-समुद्र हैं। (३)

अड्ढाइज्जा दीवा, दोन्नि समुद्दा य माणुसं खेत्तं।
पणयालसयसहस्सा, विक्खंभायामओ भणियं ॥ ४ ॥

अर्थ - ढाई द्वीप और दो समुद्र ये मनुष्यक्षेत्र हैं। वे लम्बाई-चौड़ाई में ४५ लाख योजन कहे गए हैं। (४)

एगा जोयणकोडी, लक्खा बायाल तीस सहस्सा य।
समयखेत्तपरिरओ, दो चेव सया अउणपन्ना ॥ ५ ॥

अर्थ - १,४२,३०,२४९ योजन समयक्षेत्र की परिधि है। (५)

अब्भिंतरओ दीवो-दहीण पडिपुन्नचंदसंठाणो।
जंबूद्दीवो लक्खं, विक्खंभायामओ भणिओ ॥ ६ ॥

अर्थ - द्वीप-समुद्रों के मध्य में, सम्पूर्ण चन्द्र के आकारवाला, लम्बाई-चौड़ाई में १ लाख योजन का जम्बूद्वीप कहा गया है। (६)

विक्खंभवग्गदहगुण-करणी वट्टस्स परिरओ होइ।
विक्खंभपायगुणिओ, परिरओ तस्स गणियपयं ॥ ७ ॥

अर्थ - चौड़ाई के वर्ग को १० से गुणा कर वर्गमूल करें, यह वृत्त की परिधि है। चौड़ाई के चौथे भाग से गुणा की गई परिधि उसका क्षेत्रफल है। (७)

परिही तिलक्ख सोलस-सहस्स दो य सय सत्तवीसहिया।
कोसतियट्ठावीसं, धणुसय तेरंगुलद्धहियं ॥ ८ ॥

अर्थ - जम्बूद्वीप की परिधि ३,१६,२२७ योजन ३ गाउ १२८ धनुष्य १३ १/२ अंगुल से अधिक है। (८)

सत्तेव य कोडिसया, णउया छप्पन्नसयसहस्सा य।
चउणउइं च सहस्सा, सयं दिवड्ढं च साहियं ॥ ९ ॥
गाउयमेगं पनरस-धणुसया तह धणुणि पन्नरस।
सट्ठिं च अंगुलाइं, जंबुद्दीवस्स गणियपयं ॥ १० ॥

अर्थ - जम्बूद्वीप का क्षेत्रफल साधिक ७,९०,५६,९४,१५० योजन, १ गाउ, १,५२५ धनुष्य, ६० अंगुल है। (९-१०)

एगाइतिलक्खंते, पणुवीससहस्स संगुणे काउं।
दुग छन्नउइ दुसहस्स, चउरं गुणभागहारेहिं ॥ ११ ॥

अर्थ – एक (अर्धांगुल) से तीन लाख (योजन) तक की संख्या को २५००० से गुणा कर गुणा की गई संख्या को २-९६-२०००-४ भाजक के द्वारा भाग देने से क्षेत्रफल आता है। (११)

वयरामइए जगइए, परिगओ अट्ठजोयणुच्चाए।
बारस अट्ठ य चउरो, मूले मज्झुवरि रुंदाए ॥ १२ ॥

अर्थ – वज्रमय, ८ योजन ऊँची, मूल में, मध्य में और ऊपर १२-८-४ योजन चौड़ी जगती से (जम्बूद्वीप) घिरा हुआ है। (१२)

जत्थिच्छसि विक्खंभं, जगइसिहराउ ओवइत्ताणं।
तं एगभागलद्धं, चउहि जुयं जाण विक्खंभं ॥ १३ ॥

अर्थ – जगती के शिखर से उतरकर जहाँ चौड़ाई जानना चाहते हैं, उसे १ से भाग देकर प्राप्त और ४ से युक्त यह चौड़ाई जानें। (१३)

एमेव उप्पइत्ता, जं लद्धं सोहयाहि मूलिल्ला।
वित्थारा जं सेसं, सो वित्थारो तहिं तस्स ॥ १४ ॥

अर्थ – इसी प्रकार ऊपर चढ़कर (१ से भाग देकर) जो प्राप्त हो, उसे मूल के विस्तार में से कम करने के बाद जो शेष है, वह वहाँ उसका विस्तार है। (१४)

पंचेव धणुसयाइं, वित्थिण्णा अद्धजोयणुच्चिट्ठा।
वेइ वणसंडा उण, देसूणदुजोयणे रुंदा ॥१५ ॥

अर्थ – वेदिका ५०० धनुष्य चौड़ी और १/२ योजन ऊँची है। वनखण्ड देशोन २ योजन चौड़ा है। (१५)

एएहिं परिखित्ता, दीवसमुद्दा हवंति सव्वे वि।
चत्तारि दुवारा पुण, चउदीसिं जंबूद्दीवस्स ॥ १६ ॥

अर्थ – यह (जगती, उसके ऊपर वेदिका और वनखंड) से सभी द्वीप-समुद्र घिरे हुए हैं। जम्बूद्वीप की चार दिशाओं में चार द्वार हैं। (१६)

चउजोयणवित्थिन्ना, अट्ठेव य जोयणाइ उच्चिट्ठा।
उभओ वि कोसकोसं, कुड्डा बाहल्लओ तेसिं ॥१७॥

अर्थ – (वह) ४ योजन चौड़ा और ८ योजन ऊँचा है। उसकी दोनों तरफ चौड़ाई से १-१ गाउ का द्वारशाख है। (१७)

पुव्वेण होइ विजयं, दाहिणओ होइ वेजयंतं तु।
अवरेणं तु जयंतं, अवराइयं उत्तरे पासे ॥ १८ ॥

अर्थ – पूर्व में विजय (द्वार) है, दक्षिण में वैजयन्त (द्वार) है, पश्चिम में जयन्त (द्वार) है और उत्तर की तरफ अपराजित (द्वार) है। (१८)

पलिओवमठिइया, सुरगणपरिवरिया सदेवीया।
एएसु दारनामा, वसंति देवा महड्ढिया ॥ १९ ॥

अर्थ – इन द्वारों में पल्योपम के आयुष्यवाले, देवों के समूह से घिरे हुए, देवीवाले, द्वार के नामवाले, महर्द्धिक देव निवास करते हैं। (१९)

कुड्ड-दुवारपमाणं, अट्ठारसजोयणाइ परिहीए।
सोहिय चउहि विभत्ते, इणमो दारंतरं होइ ॥ २० ॥

अर्थ – द्वारशाख और द्वारों का प्रमाण १८ योजन परिधि में से कम करके चार से भाग देने के पर द्वारों का यह अन्तर है। (२०)

अउणासीइ सहस्सा, बावन्ना अद्धजोयणं चूणं।
दारस्स य दारस्स य, अंतरमेयं विणिद्दिट्ठं ॥ २१ ॥

अर्थ – न्यून ७९,०५२ १/२ योजन द्वार का और द्वार का यह अन्तर कहा गया है। (२१)

वासहरपरिच्छिन्ना, पुव्वावरलवणसागरं फिडिया।
वासा सत्त उ इणमो, वासहरा छच्च बोधव्वा ॥ २२ ॥

अर्थ – वर्षधर पर्वतों से विभाजित, पूर्व-पश्चिम में लवणसमुद्र को स्पर्श किए हुए, ये सात क्षेत्र और छः वर्षधर पर्वत जानें। (२२)

भरहं हेमवयं ति य, हरिवासं ति य महाविदेहं ति ।
रम्मयं हेरण्णवयं, एरावयं चेव वासाइं ॥ २३ ॥

अर्थ – भरत, हिमवंत, हरिवर्ष, महाविदेह, रम्यक्, हिरण्यवंत और ऐरवत ये क्षेत्र हैं। (२३)

हिमवंत-महाहिमवंत, पव्वया निसढनीलवंता य ।
रुप्पी सिहरी एए, वासहरगिरी मुणेयव्वा ॥ २४ ॥

अर्थ – लघुहिमवंत, महाहिमवंत निषध, नीलवंत, रुक्मी व शिखरी – इन्हें वर्षधर पर्वत जानें। (२४)

वेयड्ढनगवरेणं, पुव्वावरलवणसागरगएणं ।
भरहं दुहा विहत्तं, दाहिणभरहद्धमियरं च ॥ २५ ॥

अर्थ – पूर्व में और पश्चिम में लवणसमुद्र को स्पर्श किए हुए वैताढ्यपर्वत के द्वारा भरतक्षेत्र दो भागों में विभाजित है– दक्षिण भरतार्ध और इतर (उत्तरभरतार्ध)। (२५)

विक्खंभो भरहद्धे, दोन्नि सए जोयणाण अडतीसे ।
तिन्नि (य) कलाओ अवरा, एरवयद्धेऽवि एमेव ॥ २६ ॥

अर्थ – भरतार्ध की चौड़ाई २३८योजन और अन्य ३ कलाएँ हैं। ऐरवतार्ध में भी इसी प्रकार जानें। (२६)

भरहेरवयप्पभिइ, दुगुणा दुगुणो उ होइ विक्खंभो ।
वासावासहराणं, जाव य वासं विदेह त्ति ॥ २७ ॥

अर्थ – भरत और ऐरवत से लेकर महाविदेह क्षेत्र तक के क्षेत्र – वर्षधर पर्वतों की चौड़ाई क्रमशः दोगुनी है। (२७)

एगाइ दुगुणेहिं, चउसट्ठि तेहिं गुणिय विक्खंभं ।
खित्तनगाणं कमसो, सएण नउएण हियभागे ॥ २८ ॥

अर्थ – १ इत्यादि दोगुने ६४ तक के द्वारा (जंबूद्वीप की) चौड़ाई को गुणाकर १९० से भाग देने पर क्षेत्र पर्वतों की क्रमशः चौड़ाई आती है। (२८)

पंचसए छव्वीसे, छच्च कला वित्थडं भरहवासं ।
दस सय बावन्नहिया, बारस य कलाओ हिमवंते ॥ २९ ॥

अर्थ – भरतक्षेत्र ५२६ योजन ६ कला विस्तृत है। लघु हिमवन्त पर्वत की चौड़ाई १,०५२ योजन १२ कला है। (२९)

हेमवए पंचहिया, इगवीससयाइ पंच य कलाउ ।
दसहिय बायालसया, दस य कलाओ महाहिमवे ॥ ३० ॥

अर्थ – हिमवंतक्षेत्र की चौड़ाई २,१०५ योजन ५ कला है। महाहिमवंतपर्वत की चौड़ाई ४,२१० योजन १० कला है। (३०)

हरिवासे इगवीसा, चुलसीइ सया कला य एक्का य ।
सोलस सहस्स अट्ठसय, बायाला दो कला निसढे ॥ ३१ ॥

अर्थ – हरिवर्षक्षेत्र की चौड़ाई ८,४२१ योजन १ कला है। निषधपर्वत की चौड़ाई १६,८४२ योजन २ कला है। (३१)

तेत्तीसं च सहस्सा, छच्च सया जोयणाण चुलसीया ।
अउणावीसइभागा, चउरो य विदेहविक्खंभो ॥ ३२ ॥

अर्थ – महाविदेहक्षेत्र की चौड़ाई ३३,६८४ ४/१९ योजन है। (३२)

दाहिणभरहद्ध उसू, पणयाल सया कला पणुवीसा ।
वेयड्ढे पणसयरी, चउपन्न सया कलाणं तु ॥ ३३ ॥

अर्थ – दक्षिणभरतार्ध का इषु ४,५२५कला है। वैताढ्यपर्वत का इषु ५,४७५ कला है। (३३)

एग तिग सत्त पन्नरस, इगतीस तिसठि होइ पणनउइ ।
सयवग्गसंगुणंसो, वियाण भरहाइणं उसुणो ॥ ३४ ॥

अर्थ – सोना वर्ग (१०,०००) से गुणा किया हुआ १-३-७-१५-३१-६३-९५ वह भरत इत्यादि का इषु जानें।(३४)

भरहाइउसू सोहिय, विक्खंभ इगुणवीसइगुणाओ ।
भागोऽवि य दायव्वो, एगुणवीसा य सव्वत्थ ॥ ३५ ॥
ओगाहूण विक्खंभमो य, ओगाहसंगुणं कुज्जा ।
चउहिं गुणियस्स मूलं, मंडलखित्तस्स सा जीवा ॥ ३६ ॥

अर्थ – १९ गुणी (जंबूद्वीप की) चौड़ाई में से भरत इत्यादि का इषु कम करके अवगाह (इषु) से न्यून चौड़ाई को अवगाह (इषु) से गुणा करें। चार से गुणा किया गया उसका वर्गमूल उस मंडलक्षेत्र की जीवा है। सभी जगह १९ से भाग करना। (३५-३६)

जोयणसहस्स नवगं, सत्तेव सया हवंति अडयाला ।
बारस य कला सकला, दाहिणभरहद्धजीवाओ ॥ ३७ ॥

अर्थ – दक्षिणभरतार्ध की जीवा ९,७४८ योजन १२ कला है। (३७)

जीवावग्गं उसुणा, चउरब्भत्थेण विभय जं लद्धं ।
तं उसुसहियं जाणसु, नियमा वट्टस्स विक्खंभं ॥ ३८ ॥

अर्थ – जीवा के वर्ग को ४ से गुणा किये गये इषु के द्वारा भाग दें। जो संख्या प्राप्त हो, वह इषु सहित वृत्त की चौड़ाई अवश्य जानें। (३८)

उसुवग्गं छग्गुणियं, जीवावग्गम्मि पक्खिवित्ताणं ।
जं तस्स वग्गमूलं, तं धणुपट्ठं वियाणाहि ॥ ३९ ॥

अर्थ – ६ गुणा इषु वर्ग को जीवावर्ग में डालकर उसका जो वर्गमूल हो, उसे धनुःपृष्ठ जानें। (३९)

धणुवग्गाओ नियमा, जीवावग्गं विसोहित्ताणं ।
सेसस्स य छब्भाए, जं मूलं तं उसू होइ ॥ ४० ॥

अर्थ – धनुःपृष्ठ के वर्ग में से अवश्य जीवावर्ग को कम करके शेष को छः से भाग करने पर जो वर्गमूल आए, वह इषु है। (४०)

जीवाविक्खंभाणं, वग्गविसेसस्स वग्गमूलं जं ।
विक्खंभाओ सुद्धं, तस्सद्धमिसुं वियाणाहि ॥ ४१ ॥

अर्थ – जीवा और विष्कम्भ के वर्ग के अन्तर का जो वर्गमूल हो, उसे चौड़ाई में से कम करके उसका आधा इषु जानें। (४१)

गुणवीसलक्खतग्गुण, जीवावग्गं विसोहिऊणित्तो ।
मूलं लक्खेगुणवीससुद्ध-दल सव्व उसुकरणं ॥ ४२ ॥

अर्थ – १९,००,००० को उतना गुणा (१९,००,०००) करके उसमें से जीवावर्ग को कम करके (शेष के) वर्गमूल को १९,००,००० में से कम करके उसे आधा करें – यह सबका इषुकरण है। (४२)

नव चेव सहस्साइं, छावट्ठाइं सयाइं सत्तेव ।
सविसेस कला चेगा, दाहिणभरहद्ध धणुपट्ठं ॥ ४३ ॥

अर्थ – दक्षिणभरतार्ध का धनुःपृष्ठ ९,७६६ योजन साधिक १ कला है। (४३)

दस चेव सहस्साइं, जीवा सत्त सयाइं वीसाइं ।
बारस य कला ऊणा, वेयड्ढगिरिस्सि विन्नेया ॥ ४४ ॥

अर्थ – वैताढ्यपर्वत की जीवा १०,७२० योजन और न्यून १२ कला जानें। (४४)

दस चेव सहस्साइं, सत्तेव सया हवंति तेयाला ।
धणुपट्ठं वेयड्ढे, कला य पन्नरस हवंति ॥ ४५ ॥

अर्थ – वैताढ्यपर्वत का धनुःपृष्ठ १०,७४३ योजन १५ कला है। (४५)

महया धणुपट्ठाओ, डहरागं सोहियाहि धणुपट्ठं ।
जं तत्थ हवइ सेसं, तस्सद्धे निद्दिसे बाहं ॥ ४६ ॥

अर्थ – बड़े धनुःपृष्ठ में से छोटे धनुःपृष्ठ को कम करें। फिर जो शेष बचे उसके आधे को बाहा कहा जाता है। (४६)

जीवाण विसेसदलं, वग्गियमोलंबवग्गसंजुत्तं ।
जं तस्स वग्गमूलं, सा बाहा होइ नायव्वा ॥ ४७ ॥

अर्थ – जीवाओं का विशेष करके (बड़ी जीवा में से छोटी जीवा को कम करके) उसके आधे को वर्ग करके अवलंब (विस्तार) के वर्ग से युक्त का जो वर्गमूल है, वह बाहा है, ऐसा जानें। (४७)

सोलस चेव कलाओ, अहियाओ हुंति अद्धभागेणं ।
बाहा वेयड्ढस्स उ, अट्ठासीया सया चउरो ॥ ४८ ॥

अर्थ – वैताढ्यपर्वत की बाहा ४८८ योजन १६ १/२ कला है। (४८)

चउद्दस य सहस्साइं, सयाइ चत्तारि एगसयराइं ।
भरहुत्तरद्धजीवा, छच्च कला ऊणिया किंचि ॥ ४९ ॥

अर्थ – भरत के उत्तरार्ध की जीवा १४,४७१ योजन और कुछ कम ६ कला है। (४९)

चोद्दस य सहस्साइं, सयाइं पंचेव अट्ठवीसाइं ।
एक्कारस य कलाओ, धणुपट्ठं उत्तरद्धस्स ॥ ५० ॥

अर्थ – भरत के उत्तरार्ध का धनुःपृष्ठ १४,५२८ योजन ११ कला है। (५०)

भरहद्धुत्तर बाहा, अट्ठारस हुंति जोयणसयाइं ।
बाणउइ जोयणाणि य, अद्ध कला सत्त य कलाओ ॥ ५१ ॥

अर्थ – भरत के उत्तरार्ध की बाहा १,८९२ योजन ७ १/२ कला है। (५१)

चउवीस सहस्साइं, नव य सया जोयणाण बत्तीसा ।
चुल्लहिमवंत-जीवा, आयामेणं कलद्धं च ॥ ५२ ॥

अर्थ – लघुहिमपर्वत की जीवा लम्बाई से २४,९३२ योजन और १/२ कला है। (५२)

धणुपट्ठं कलचउक्कं, पणुवीससहस्स दु सय तीसहिया ।
बाहा सोलद्धकला, तेवन्न सया य पन्नहिया ॥ ५३ ॥

अर्थ – (लघुहिमवंतपर्वत का) धनुःपृष्ठ २५,२३० योजन ४ कला है, बाहा ५,३५० योजन १६ १/२ कला है। (५३)

सत्ततीस सहस्सा, छच्च सया जोयणाण चउसयरा ।
हेमवयवासजीवा, किंचूणा सोलस कला य ॥ ५४ ॥

अर्थ – हिमवंतक्षेत्र की जीवा ३७,६७४ योजन और कुछ कम १६ कला है। (५४)

चत्तारि य सत्तसया, अडतीस सहस्स दस कला य ।
धणु बाहा सत्तट्ठिसया, पणपन्ना तिन्नि य कलाओ ॥ ५५ ॥

अर्थ – (हिमवंतक्षेत्र का) धनुःपृष्ठ ३८,७४० योजन १० कला है, बाहा ६,७५५ योजन ३ कला है। (५५)

तेवन्न सहस्साइं, नव य सया जोयणाण इगतीसा ।
जीवा महाहिमवए, अद्ध कला छक्कलाओ य ॥ ५६ ॥

अर्थ – महाहिमवंतपर्वत की जीवा ५३,९३१ योजन ६ १/२ कला है। (५६)

सत्तावन्न सहस्सा, धणुपट्ठ तेणउय दुसय दस य कला ।
बाहा बाणउइ सया, छसत्तरा नव कलद्धं च ॥ ५७ ॥

अर्थ – (महाहिमवंतपर्वत का) धनुःपृष्ठ ५७,२९३ योजन १०कला है, बाहा ९,२७६ योजन ९ १/२ कला है। (५७)

एगुत्तरा नव सया, तेवत्तरिमेव जोयणसहस्सा ।
जीवा सत्तरस कला, अद्धकला चेव हरिवासे ॥ ५८ ॥

अर्थ – हरिवर्षक्षेत्र की जीवा ७३,९०१ योजन १७ १/२ कला है। (५८)

बाहा तेर सहस्सा, एगट्ठा तिसय छक्कलऽद्धकला ।

धणुपट्ठं कलं चउक्कं, चुलसीइ सहस्स सोलहिया ॥ ५९ ॥

अर्थ – (हरिवर्षक्षेत्र की) बाहा १३,३६१ योजन ६ १/२ कला है, धनु:पृष्ठ ८४,०१६ योजन ४ कला है। (५९)

चउणउइ सहस्साइं, छप्पन्नहियं सयं च कला दो य ।

जीवा निसहस्सेया, धणुपट्ठं से इमं होइ ॥ ६० ॥

अर्थ – ९४,१५६ योजन २ कला इस निषधपर्वत की जीवा है। उसका धनु:पृष्ठ यह है– (६०)

लक्खं चउवीस सहस्स, तिसय छायाल नव कलाओ य ।

बाहा पन्नट्ठसयं, सहस्स वीसं दुकल अद्धं ॥ ६१ ॥

अर्थ – १,२४,३४६ योजन ९ कला, बाहा २०,१६५ योजन २ १/२ कला। (६१)

सत्तट्ठा सत्तसया, तेत्तीस सहस्स सत्त य कलद्धं ।

बाहा विदेहवासे, मज्झे जीवा सयसहस्सं ॥ ६२ ॥

अर्थ – महाविदेहक्षेत्र की बाहा ३३,७६७ योजन ७ १/२ कला है, मध्य में जीवा १,००,००० योजन है। (६२)

उभओ से धणुपट्ठं, लक्खं अडपन्न जोयणसहस्सा ।

सयमेगं तेरहियं, सोलस य कला कलद्धं च ॥ ६३ ॥

अर्थ – दोनों तरफ उसका धनु:पृष्ठ १,५८,११३ योजन १६ १/२ कला है। (६३)

खित्तस्स पयरगणिए, जिट्ठ-कणिट्ठाण तस्स जीवाणं ।

काउं समासमद्धं, गुणेहिं तस्सेव वासेणं ॥ ६४ ॥

अर्थ – क्षेत्रों के प्रतरगणित में उसकी बड़ी-छोटी जीवा को एकत्र कर उसके आधे को उसीके व्यास से गुणा करें। (६४)

पयरं उस्सेहगुणं, घणगणियं पव्वयाण जे उ समा ।

पयरं उव्वेहगुणं, लवणविवज्जाण उयहीणं ॥ ६५ ॥

अर्थ – जो पर्वत समान हैं उनका घनगणित ऊँचाई से गुणा किया गया प्रतर है। लवणसमुद्र के सिवाय के समुद्रों का घनगणित गहराई से गुणा किया गया प्रतर है। (६५)

जीवावग्गं जिट्ठमियरं च, मेलेउ तस्स अद्धस्स ।

मूलं बाहा विक्खंभ-गुणिय पयरं हवइ ताहे ॥ ६६ ॥

अर्थ – बड़े और छोटे जीवावर्ग को इकट्ठा कर उसके आधे का जो वर्गमूल है, वह बाहा है। चौड़ाई से गुणा किया गया वह बाहा वहाँ प्रतर होता है। (६६)

तीसहिया चउत्तीसं, कोडिसया लक्खसीइ भरहद्धे ।

सत्ताणवइ सहस्सा, पंच सया जीववग्गो उ ॥ ६७ ॥

अर्थ – भरतार्ध में जीवावर्ग ३४,३०,८०,९७,५०० योजन है। (६७)

वेयड्ढे जीववग्गो, सत्ताणउइ सहस्स पंच सया ।

अउणापन्नं कोडी, इगयालीसं च कोडिसया ॥ ६८ ॥

अर्थ – वैताढ्यपर्वत का जीवावर्ग ४१,४९,००,९७,५०० योजन है। (६८)

भरहद्ध जीववग्गो, पणसयरी छच्च अट्ठ सुन्नाइं ।

चुल्ले जीवावग्गो, दुवीस चोयाल सुन्नट्ठ ॥ ६९ ॥

अर्थ – (उत्तर) भरतार्ध का जीवावर्ग ७५,६०,००,००,००० योजन है। लघुहिमपर्वत पर्वत का जीवावर्ग २,२४,४०,००,००,००० योजन है। (६९)

जीवावग्गिगवन्ना, चउवीसं अट्ठ सुन्न हेमवए ।

पंचहियं सयमेगं, महाहिमवे दस य सुन्नाइं ॥ ७० ॥

अर्थ – हिमवंतक्षेत्र का जीवावर्ग ५,१२,४०,००,००,००० योजन है। महाहिमवंतपर्वत का जीवावर्ग १०,५०,००,००,००,००० योजन है। (७०)

हरिवास-जीववग्गो, उणवीसं सत्त सोल सुन्नट्ठ।
बत्तीसं दो सुन्ना, चउरो सुन्नट्ठ निसहम्मि ॥ ७१ ॥

अर्थ – हरिवर्ष क्षेत्र का जीवावर्ग १९,७१,६०,००,००,००० योजन है। निषधपर्वत का जीवावर्ग ३२,००,४०,००,००,००० योजन है। (७१)

छत्तीसेक्कग दस सुन्न, जीवावग्गो विदेहमज्झम्मि।
एएसि समासद्धे, मूलं बाहा उ विन्नेया ॥ ७२ ॥

अर्थ – महाविदेह क्षेत्र के मध्य में जीवावर्ग ३६,१०,००,००,००,००० योजन है। इसका समास करके आधे के वर्गमूल को बाहा जानें। (७२)

वेयड्ढ-जम्मभरहद्ध-जीववग्गो दुवेऽवि मेलेउं।
तस्सद्धे जं मूलं, सो कलारासी इमो होइ ॥ ७३ ॥

अर्थ – वैताढ्यपर्वत और दक्षिणभरतार्ध के दोनों जीवावर्गों को जोड़कर उसके आधे का जो वर्गमूल होगा, वह कलाराशि है। (७३)

चउणउइ सहस्साइं, लक्खो छावत्तरा सया छच्च।
सेस दुछक्कोवट्टिय, दोनवतिगसत्तसत्तंसा ॥ ७४ ॥
छेओ तिग-दुग-चउचउ छक्का, वेयड्ढ बाहा लद्धेसा।
पन्नास जोयणगुणा, पयरं गुणवीसहिय लद्धं ॥ ७५ ॥

अर्थ – १,९४,६७६ शेष को २ छः (१२) से भाग दें। २९,३७७ अंश, छेदराशि ३२, ४४६ होता है। यह मिलकर वैताढ्यपर्वत की बाहा है। ५० योजन से गुणा करके १९ से हरी प्रतर मिलता है। (७४-७५)

सत्तहिया तिन्नि सया, बारस य सहस्स पंच लक्खा य।
बारस य कला पयरं, वेयड्ढगिरिस्स धरणितले ॥ ७६ ॥

अर्थ – वैताढ्यपर्वत का पृथ्वीतल पर प्रतर ५,१२,३०७ योजन १२ कला है। (७६)

दसजोयणुस्सए पुण, तेवीस सहस्स लक्ख इगवन्नं।
जोयण छावत्तरि छक्कला य, वेयड्ढघणगणियं ॥ ७७ ॥

अर्थ – १० योजन ऊँचाई में वैताढ्यपर्वत का घनगणित ५१,२३,०७६ योजन ६ कला है। (७७)

जोयण तीसे वासे, पढमाए मेहलाए पयरमिमं।
लक्ख तिग तिसयरिसया, चुलसी इक्कारस कलाओ ॥ ७८ ॥

अर्थ – ३० योजन के व्यास में प्रथम मेखला में यह प्रतर है – ३,०७,३८४ योजन ११ कला। (७८)

अट्ठ सया पणयाला, तीसं लक्खा तिसत्तरि सहस्सा।
पन्नरस कला य घणो, दसुस्सए होइ बीयम्मि ॥ ७९ ॥

अर्थ – १० योजन ऊँचाईवाले दूसरे खंड में ३०,७३,८४५ योजन १५ कला घनगणित है। (७९)

दस जोयण विक्खंभे, बीयाए मेहलाए पयरमिमं।
लक्खा चउवीससया, एगट्ठा दस कलाओ य ॥ ८० ॥

अर्थ – १० योजन चौडाइवाली दूसरी मेखला में यह प्रतर है – १,०२,४६१ योजन १० कला। (८०)

सत्तहिया तिन्निसया, बारस य सहस्स पंच लक्खा य।
अवरा य बारस कला, पणुस्सए होइ घणगणियं ॥ ८१ ॥

अर्थ – ५ योजन ऊँचाईवाले तीसरे खंड में घनगणित ५,१२,३०७ योजन १२ कला है। (८१)

सत्तासीइ लक्खा, उणत्तीस हिया य बिनवइ सयाइं।
अउणावीसइ भागा, चोद्दस वेयड्ढ घणगणियं ॥ ८२ ॥

अर्थ – वैताढ्यपर्वत का घनगणित ८७,०९,२२९ १४/१९ योजन है। (८२)

कल लक्खदुगं इयालसहस्सा, नव सया य सट्ठहिया।
सुन्नमवणेउ अंस चउ, सुन्नग सत्त एग पण ॥ ८३ ॥
छेओ चउ अड तिग नव, दुगा य बाहेस उत्तरद्धस्स।
गुणिया पणवीसेहिं, पणयालसएहिं होइ इमं ॥ ८४ ॥

अर्थ – उत्तरभरतार्ध की बाहा २,४१,९६० कला है। शून्य को दूर करके शेष ४०,७१५ अंश है, छेदराशि ४८,३९२ है। वह ४,५२५ से गुणा करने पर इस प्रकार होता है। (८३-८४)

कोडीसयं नव कोडी, अउणत्तरि सहस्स लक्ख अडयाला।
हिट्ठिल्ले पण सत्तग, तिग पण तिग दुग चउट्ठिक्को ॥८५॥
छेयहियलद्धमुवरिं, पक्खिव एगट्ठतिसयभइए य।
लद्धडसिय अट्ठसया, बत्तीस सहस्स तीसं च ॥ ८६ ॥
लक्खा बारस य कला, अहिया एक्कारसेहिं भागेहिं।
उणवीस छेयकए, उत्तरभरहद्धपयरं तु ॥ ८७ ॥

अर्थ – १,०९,४८,६९,००० कला। नीचे के अंश १८,४२,३५,३७५ है। छेद से भाग करने पर जौ मिले उसे ऊपर जोड़ें। ३६१ से भाग देने पर ३०,३२,८८८ योजन १२ कला और १९ के छेद से किए गए ११ भागों से अधिक मिलता है। वह उत्तरभरतार्ध का प्रतर है। (८५-८६-८७)

कलारासी तिन्नि लक्खा, सत्तासीइ सहस्सा दो य सया।
अडनउया सेसे पुण, चउक्कउव्वट्टिय अंसा ॥ ८८ ॥
छच्चउ सत्तग नव नव, छेओ इगनवतिगा य छ चउ नव।
बाहेस चुल्लहिमवे, पयरं से निययवासगुणं ॥ ८९ ॥

अर्थ – कलाराशि ३,८७,२९८ है। शेष में ४ से विभाजित अंश है ६४,७९९। छेदराशि १,९३,६४९ है। वह लघुहिमवंतपर्वत की बाहा है। अपने व्यास से गुणा किया गया वह उसका प्रतर है। (८८-८९)

सट्ठि सहस्सा अउणट्ठि लक्ख, चउसयरि कोडी सत्त सया।
हेट्ठिल्ले इग दुग नव, पण नव अट्ठ सुन्न चउ ॥ ९० ॥
छेयहियलद्धमुवरिं, पक्खिव एगट्ठि तिसय भइए य।
लद्धिगसत्तरि नवसय, छप्पन्न सहस्स चउद्दस य ॥ ९१ ॥
लक्खा दु कोडि अट्ठ य, कला उ दस अउणवीस भागा उ।
चुल्लहिमवंतपयरं, घणगणियं उस्सहेण गुणं ॥ ९२ ॥

अर्थ – ७,७४,५९,६०,००० कला नीचे के अंश १,२९,-५९,८०,००० है। छेद से भाग देकर प्राप्तांक ऊपर जोड़ें। ३६१ से भाग देने पर २,१४,५६,९७१ योजन ८ कला और १ कला के १० उन्नीसी भाग। वह लघुहिमवंतपर्वत का प्रतर है। ऊँचाई से गुणा किया गया वह घनगणित है। (९०-९१-९२)

दो चेव य कोडिसया, चउद्दस कोडिओ लक्ख छपन्ना।
सत्ताणउइ सहस्सा, चोयालसयं च घणगणियं ॥ ९३ ॥
सोलस चेव कलाओ, अहिया एगुणवीस भागेहिं।
बारसहिं चेव सया, चुल्लहिमवंते वियाणाहि ॥ ९४ ॥

अर्थ – २,१४,५६,९७,१४४ योजन १६ कला १ कला के १२ उन्नीसी भाग से अधिक लघुहिमवंतपर्वत का घनगणित जानें। (९३-९४)

अउणट्ठा उणसत्तरि, सया उ छ लक्ख चेव य कलाणं।
सेसे सत्तग सत्तग, दुग तिग इग नव य अंसा उ ॥ ९५ ॥
छेओ इग दुग एक्कग, तिग नव एक्को य अट्ठ बाहेसा।
हेमवए विन्नेया, पयरं से निययवासगुणं ॥ ९६ ॥

अर्थ – ६,०६,९५९ कला, शेष में अंश ७७२३१९ है। छेदराशि १२,१३,९१८ है। इसे हिमवंतक्षेत्र की बाहा जानें। उसके स्वयं के व्यास से गुणा किया गया वह प्रतर है। (९५-९६)

उवरिमरासी दुग चउ, दुग सत्तट्ठ तिग छक्क सुन्न चउ।
हेट्ठे तिग सुन्नट्ठ नव, दुग सत्तग छक्क सुन्न चउ ॥ ९७ ॥

अर्थ – ऊपर की राशि २४,२७,८३,६०,००० है। नीचे की राशि ३०,८९,२७,६०,००० है। (९७)

छेयहियलद्धमुवरिं, पक्खिव एगट्ठतिसय भइए य।
लद्धा छक्कोडीओ, बावत्तरिसयसहस्सा य ॥ ९८ ॥
तेवन्नं च सहस्सा, पणयालसयं च पंच य कलाउ।
हेमवयवासपयरं, अट्ठ य उणवीस भागा य ॥ ९९ ॥

अर्थ – छेद से विभाजित किए जाने पर प्राप्त अंक ऊपर डालें, ३६१ से भाग देने पर ६,७२,५३,१४५ योजन ५ कला और १ कला के ८ उन्नीसी भाग प्राप्त हुआ। वह हिमवंतक्षेत्र का प्रतर है। (९८-९९)

पणपन्ना अट्ठ सया, तेसीइ सहस्स अट्ठलक्खा य।
कलारासेसो सेसो, पणतीसोवट्टिए अंसा ॥ १०० ॥
नव छ अड पण छेओ, पंच य सुन्न पण सुन्न छक्को य।
बाहेस महाहिमवे, पयरं स निययवासगुणं ॥ १०१ ॥

अर्थ – ८,८३,८५५ – यह कलाराशि है। शेष को ३५ से भाग देने पर अंश ९,६८५ है, छेदराशि ५०५०६ है। महाहिमवंतपर्वत की यह बाहा है। वह अपने व्यास से गुणा किया गया उसका प्रतर है। (१००-१०१)

चुलसीइ सयसहस्सा, सत्तरि कोडि य सत्त सहस्सा।
हिट्ठा सत्तग सत्तग, चउ अड पंचेव सुन्नाइं ॥ १०२ ॥
छेयहियलद्धमुवरिं, पक्खिव एगट्ठ तिसयभइए य।
गुणवीसं कोडीओ, लद्धा अडपन्न लक्खा य ॥ १०३ ॥

अट्ठट्ठि सहस्साणि य, छासी य सयं च दस कलाओ य।
पंच उणवीसभागा, कलाइ पयरं महाहिमवे ॥ १०४ ॥

अर्थ – ७०,७०,८४,००,००० कला। नीचे ७७,४८,००,००० है। छेद से भाग देने पर प्राप्त अंक ऊपर डालें। ३६१ से भाग देने पर १९,५८,६८,१८६ योजन १० कला और १ कला के ५ उन्नीसी भाग प्राप्त हुए। वह महाहिमवंतपर्वत का प्रतर है। (१०२-१०३-१०४)

सत्तत्तीस सहस्सा, छत्तीसं लक्ख तिसय अट्ठहिया।
कोडीणूयाल सया, सत्तरिस य कोडि घणगणियं ॥ १०५ ॥

अर्थ – ३९,१७,३६,३७,३०८ योजन (महाहिमवंतपर्वत का) घनगणित है। (१०५)

छायालसयं गुणतीस, सहस्सा लक्खा बारस कलाणं।
चउरोवट्टिय सेसे, दो सत्त छ सत्त एगंसा ॥ १०६ ॥
छेओ छ एक्क चउ पण, सत्तग तिग एस बाह हरिवासे।
विक्खंभनियगुणिया, पयरं गुणिए इमो रासी ॥ १०७ ॥

अर्थ – १२,२९,१४६ कला। शेष चार से विभाजित होने पर २७,६७१ अंश है और छेदराशि ६,१४,५७३ है। यह हरिवर्षक्षेत्र की बाहा है। वह अपनी चौड़ाई से गुणा की गई प्रतर है। गुणा करने पर यह राशि प्राप्त होती है। (१०६-१०७)

एक्क नव छक्क छक्कग, छक्कग ति ति छक्क सुन्न चत्तारि।
हेट्ठा चउ चउ दोन्नि य, सत्त तिगो छक्क सुन्न चउ ॥ १०८ ॥
छेयहियलद्ध सत्तग, दुगं च सुन्नं चउक्क किंचूणो।
पक्खिय उवरिं विभए, एगट्ठहिएहिं तिसएहिं ॥ १०९ ॥
चउपन्नं कोडिओ, लक्खा सीयाल तिसयरि सहस्सा।
अडसय सत्तरि सत्त य, कलाउ पयरं तु हरिवासे ॥ ११० ॥

अर्थ – १,९६,६६,३३,६०,००० नीचे ४,४२,७३,६०,००० है। छेद से भाग देने पर प्राप्त कुछ कम ७,२०४ ऊपर डालकर ३६१ से भाग दें। उस हरिवर्षक्षेत्र का प्रतर ५४,४७,७३,८७० योजन और ७ कला है। (१०८-१०९-११०)

सोलस लक्ख कलाणं, इगसीइ सया चउत्तरा निसढे।
सोलस विहत्त सेसे, नव पण तिग दोन्नि चउरंसा ॥ १११ ॥
छेओ दुग सुन्नेक्कग, सुन्नेक्क य तिन्नि निसह बाहेसा।
विक्खंभनिययगुणिया, पयरं गुणिए इमो रासी ॥ ११२ ॥

अर्थ – निषधपर्वत में १६,०८,१०४ कला। शेष १६ से भाग देने पर ९५,३२४ अंश है। छेदराशि २,०१,०१३ है। यह निषधपर्वत की बाहा है। वह अपनी चौड़ाई से गुणा की गई प्रतर है। गुणा करने पर यह राशि होती है। (१११-११२)

उवरिं पणेग चउ पण, नव तिग दुग अट्ठ सुन्नचत्तारि।
हेट्ठा ति सुन्न पंच य, सुन्न ति छक्कट्ठ सुन्न चउ ॥ ११३ ॥

अर्थ – ऊपर ५,१४,५९,३२,८०,००० है। नीचे ३०,५०,-३६,८०,००० है। (११३)

छेयहियलद्धमिग पण, इग सत्तग चेव अउणपन्न कला।
पक्खिव उवरिं विभए, एगट्ठहिएहिं तिसएहिं ॥ ११४ ॥
बायालं कोडिसयं, छावट्ठिसहस्स लक्ख चउपन्नं।
अउणुत्तर पंचसया, पयरं अट्ठारस कलाओ ॥ ११५ ॥

अर्थ – छेद से भाग देने पर मिली १,५१,७४९ कला। वह उपर डालें। ३६१ से भाग देने पर १,४२,५४,६६,५६९ योजन १८ कला (निषधपर्वत का) प्रतर है। (११४-११५)

उणसीइ नवसयट्ठार कोडि, छावट्ठि लक्ख घणगणियं।
सत्तावीस सहस्सा, सगपन्न सहस्स कोडीणं ॥ ११६ ॥

अर्थ – ५७,०१८,६६,२७,९७९ योजन (निषधपर्वत का) घनगणित है। (११६)

लक्खट्ठारस पणयाल-सहस्स तिन्नि कला सयट्ठारा।
चउरोवट्टिय सेसं, तिग छग नव सत्त एग नव ॥ ११७ ॥
छेओ नव दुग दुगओ, छ पंच नव बाह एस बोधव्वा।
विदेहद्धवासगुणिया, पयरं विदेहद्धवासस्स ॥ ११८ ॥

अर्थ – १८,४५,३१८ कला। ४ से विभाजित शेष ३,६९,७१९ है। शेष ९,२२,६५९ है। इसे (विदेहार्ध की) बाहा जानें। उस विदेहार्ध के व्यास से गुणा किया गया विदेहार्धक्षेत्र का प्रतर है। (११७-११८)

पंच नव सुन्न पण सुन्न, एग सत्तेव छच्च सुन्नचउ।
हेट्ठिग इग अड तिग इग, सुन्नदुगं अट्ठ सुन्नचउ ॥ ११९ ॥

अर्थ – (ऊपर) ५,९०,५०,१७,६०,००० है। नीचे १८,३१,-००,८०,००० है। (११९)

छेयहियलद्धमिग दुग, अड दुग दुग सत्त किंचि सविसेसा।
पक्खिव उवरिं विभए, एगट्ठहिएहिं तिसएहिं ॥ १२० ॥
तेवट्ठं कोडिसयं उयाला, सहस्स लक्ख सगवन्ना।
दुयहियतिसया पयरं, किंचूणिक्कारस कला य ॥ १२१ ॥

अर्थ – छेद से भाग देने पर प्राप्त हुआ साधिक १,२८,२२७ कला। उसे ऊपर डालें। ३६१ से भाग देने पर १,६३,५७,३९,३०२ योजन कुछ न्यून ११ कला (विदेहार्ध का) प्रतर है। (१२०-१२१)

दाहिणभरहद्धस्स उ, उसुएणं संगुणित्तु जीवंसे।
वग्गिय दससंगुणियं, करणी से पयरगणियं तु ॥ १२२ ॥

अर्थ – दक्षिणभरतार्ध की जीवा के अंश को इषु से गुणकर (४ से भाग देकर) उसका वर्ग कर १० से गुणा करके वर्गमूल करें। वह उसका प्रतरगणित है। (१२२)

जम्मभरहद्ध जीवा, कलाण लक्खं सहस्स पणसीइ ।
दो य सया चउवीसा, रूवद्धहिएण पणुवीसा ॥ १२३ ॥

अर्थ – दक्षिणभरतार्ध की जीवा १,८५,२२४ कला है। १/२ कला अधिक होने से १,८५,२२५ कला है। (१२३)

एसा उसुएण गुणा, चउभइया जाय दुन्नि सुन्न नव ।
पण तिग पण सत्तट्ठिक्कगा य, मुक्को इत्थ चउभागो ॥१२४॥

अर्थ – इषु से गुणा की गई और ४ से विभाजित वह २०,९५,३५,७८१ हुई। यहाँ चौथा भाग छोड़ दिया है। (१२४)

एयस्स किइ दसगुण, चउ तिग नव सुन्न पण दु चउ तिन्नि ।
पण इग नव दुग सत्तग, नव नव छक्केक्कगो सुन्नं ॥ १२५ ॥

अर्थ – इसका वर्ग करके १० से गुणा करने पर ४,३९,०५,२४,३५,१९,२७,९९,६१० होता है। (१२५)

मलं छक्कग छक्कग, दु छक्क इग सुन्न तिन्नि एग नव ।
तिसएगट्ठविहत्ते, लद्धा किर जोयणा इणमो ॥ १२६ ॥

अर्थ – उसका वर्गमूल ६६,२६,१०,३१९ है। उसे ३६१ से भाग देने पर यह योजन मिले। (१२६)

लक्खट्ठारस पणतीस, सहस्सा चउ सया य पणसीया ।
बारस कल छच्च कला, दाहिणभरतद्धपयरं तु ॥ १२७ ॥

अर्थ – १८,३५,४८५ योजन १२ कला ६ विकला दक्षिणभरतार्ध प्रतर है। (१२७)

खेत्ताण पयरगणियं, संववहारेण एच्चियं होइ ।
संपुन्नरासिगुणणे, अहियतरागं पि हुज्जाहि ॥ १२८ ॥

अर्थ – क्षेत्रों का प्रतरगणित व्यवहार से इतना है। सम्पूर्ण राशि गुणा करने पर अधिक भी हो सकता है। (१२८)

विक्खंभुसु जीवा धणु, बाहा पयरं च दाहिणाण जहा ।
तह चेव उत्तराण वि, एरवयाइण बोधव्वा ॥ १२९ ॥

अर्थ – जिस प्रकार दक्षिण के (क्षेत्रों की) चौड़ाई, इषु, जीवा, धनुःपृष्ठ, बाहा, प्रतर है, उसी प्रकार उत्तर के भी ऐरवत आदि के जानें। (१२९)

जोयणसयमुव्विद्धा, कणगमया सिहरि चुल्लहिमवंता ।
रूप्पिमहाहिमवंता, दुसउच्चा रुप्पकणगमया ॥ १३० ॥

अर्थ – लघुहिमवंत और शिखरी पर्वत १०० योजन ऊँचे हैं और सुवर्णमय हैं। रुक्मी और महाहिमवंत पर्वत २०० योजन ऊँचे और रुक्मसुवर्णमय (सफेदसुवर्णमय) हैं। (१३०)

चत्तारि जोयणसए, उव्विद्धा निसहनीलवंताऽवि ।
निसहो तवणिज्जमओ, वेरुलिओ नीलवंतगिरि ॥ १३१ ॥

अर्थ – निषध-नीलवंतपर्वत भी ४०० योजन ऊँचे हैं। निषधपर्वत तपनीय (लालसुवर्ण)मय हैं और नीलवंतपर्वत वैडूर्यरत्नमय हैं। (१३१)

वेयड्ढ मालवंते, विज्जुप्पभनिसढनीलवंते य ।
नव नव कुडा भणिया, एक्कारस सिहरिहिमवंते ॥ १३२ ॥

अर्थ – वैताढ्य, माल्यवंत, विद्युत्प्रभ, निषध तथा नीलवंत पर्वतों के ऊपर ९-९ कूट कहे गये हैं। लघुहिमवंत और शिखरी पर्वतों के ऊपर ११ कूट हैं। (१३२)

रुप्पिमहाहिमवंते, सोमणसे गंधमायणे कुडा ।
अट्ठट्ठ सत्त सत्त य, वक्खारगिरीसु चत्तारि ॥ १३३ ॥

अर्थ – रुक्मी, महाहिमवंत, सौमनस और गंधमादन पर्वतों के ऊपर ८, ८, ७, ७ और वक्षस्कार पर्वतों के ऊपर ४ कूट हैं। (१३३)

सिद्धे भरहे खंडग-मणिभद्दे पुन्नभद्दे वेयड्ढे ।
तिमिसगुहुत्तरभरहे, वेसमणे कूड वेयड्ढे ॥ १३४ ॥

अर्थ - सिद्ध, दक्षिणभरतार्ध, खंडप्रपात गुफा, माणिभद्र, पूर्णभद्र, वैताढ्य, तिमिस्रगुफा, उत्तरभरतार्ध, वैश्रमण-वैताढ्यपर्वत के ऊपर ये छः कूट हैं। (१३४)

सिद्धे य चुल्लहिमवे, भरहे य इलाए होइ देवीए।
गंगावत्तणकूडे, सिरिकूडे रोहियंसे य ॥ १३५ ॥
तत्तो य सिंधुयावत्तणे य, कूडे सुराए देवीए।
हेमवए वेसमणे, एक्कारस कूड हिमवंते ॥ १३६ ॥

अर्थ - सिद्ध, लघुहिमवंत, भरत, इलादेवी का, गंगावर्तन कूट, श्रीदेवी कूट, रोहितांशादेवी का, फिर सिंध्वावर्तन कूट, सुरादेवी का, हिमवंत, वैश्रमण-लघुहिमवंतपर्वत के ऊपर ये ११ कूट हैं। (१३५-१३६)

सिद्धे य महाहिमवे, हेमवए रोहियाहिरीकूडे।
हरिकंता हरिवासे, वेरुलिए अट्ठ महाहिमवे ॥ १३७ ॥

अर्थ - सिद्ध, महाहिमवंत, हिमवंत, रोहिता, ह्रीकूट, हरिकांता, हरिवर्ष, वैडूर्य-महाहिमवंत पर्वत के ऊपर ये ८ कूट हैं। (१३७)

सिद्धे निसहे हरिवासे, विदेहे हरि धिइ य सीयोया।
अवरविदेहे रुयगे, नव कूडा होंति निसहम्मि ॥ १३८ ॥

अर्थ - सिद्ध, निषध, हरिवर्ष, पूर्वविदेह, हरि, धृति, सीतोदा, पश्चिमविदेह, रुचक-निषधपर्वत के ऊपर ये ९ कूट हैं। (१३८)

सिद्धे य गंधमायण, गंधिय तह उत्तरा फलिह कूडे।
तह लोहियक्खकूडे, आणंदे चेव सत्तमए ॥ १३९ ॥

अर्थ - सिद्ध, गंधमादन, गंधिलावती, उत्तरकुरु, स्फटिक कूट, लोहिताक्ष कूट और सातवाँ आनन्द (-गंधमादन पर्वत के ऊपर ये कूट हैं) । (१३९)

सिद्धे य मालवंते, उत्तरकुरु कच्छसागरे रुयगे।
सीयाए पुन्नभद्दे, हरिस्सहे चेव नव कूडा ॥ १४० ॥

अर्थ - सिद्ध, माल्यवंत, उत्तरकुरु, कच्छ, सागर, रुचक, सीता का, पूर्णभद्र, हरिस्सह - ये ९ कूट (माल्यवंत पर्वत के ऊपर) हैं। (१४०)

सिद्धे सोमणसेऽवि य, कूडे तह मंगलावइ चेव।
देवकुरु विमल कंचण, वसिट्ठ कूडे य सत्तमए ॥ १४१ ॥

अर्थ - सिद्ध, सौमनस कूट, मंगलावती, देवकुरु, विमल, कांचन और सातवाँ वशिष्ट कूट (-सौमनस पर्वत के ऊपर यै कूट हैं।) (१४१)

सिद्धायणे य विज्झुप्पभे य, देवकुरु बंभकणगे य।
सोवत्थी सीओया, सयंजल हरी नवमए उ ॥ १४२ ॥

अर्थ - सिद्धायतन, विद्युत्प्रभ, देवकुरु, ब्रह्म, कनक, सौवस्तिक, सीतोदा, शतज्वल और नौवाँ हरिकूट (- विद्युत्प्रभ पर्वत के ऊपर ये कूट हैं ।) (१४२)

उभओ विजयसनामा, दो कूडा तइय उ गिरीसनामा।
चउत्थो य सिद्धकूडो, वक्खारगिरीसु चत्तारि ॥ १४३ ॥

अर्थ - दोनों तरफ के विजयों के नामवाले दो कूट, तीसरा पर्वत के नाम का और चौथा सिद्धकूट - वक्षस्कारपर्वत के ये ४ कूट हैं। (१४३)

सिद्धे य नीलवंते, पुव्वविदेहे य सीयकीत्ति य।
नारीकंतविदेहे, रम्मय उवदंसणे नवमे ॥ १४४ ॥

अर्थ - सिद्ध, नीलवंत, पूर्वविदेह, सीता, कीर्ति, नारीकांता, पश्चिमविदेह, रम्यक् और नौवाँ उपदर्शन (-नीलवंतपर्वत के ऊपर ये ९ कूट हैं।) (१४४)

सिद्धे य रुप्पि रम्मय, नरकंता बुद्धि रुप्पिकूला य।
हेरण्णवए मणिकंचणे य, रुप्पिम्मि अट्ठेए ॥ १४५ ॥

अर्थ - सिद्ध, रुक्मी, रम्यक्, नरकांता, बुद्धि, रुक्मीकूला, हिरण्यवंत, मणिकांचन - रुक्मीपर्वत के ऊपर ये ८ कूट हैं। (१४५)

सिद्धे य सिहरिकूडे, हेरण्णवए सुवन्नकूडे य ।
सिरिदेवी रत्तआवत्तणे य, तह लच्छिकूडे य ॥ १४६ ॥
रत्तावइआवत्ते, गंधावइदेवि एरवयकूडे ।
तिगिच्छीकूडेऽवि य, इक्कारस होंति सिहरिम्मि ॥ १४७ ॥

अर्थ – सिद्ध, शिखरी कूट, हिरण्यवंत, सुवर्णकूला कूट, श्रीदेवी, रक्तावर्तन, लक्ष्मी कूट, रक्तवत्यावर्तन, गंधावती देवी, ऐरवत कूट, तिगिच्छि कूट – शिखरीपर्वत के ऊपर ये ११ कूट हैं। (१४६-१४७)

एरवए विजयेसु य, दो दो जम्मुत्तरद्धसरिसनामा ।
वेयड्ढेसुं कूडा, सेसा ते चेव जे भरहे ॥ १४८ ॥

अर्थ – ऐरवत और विजयों में वैताढ्यपर्वत के दो-दो कूट दक्षिण-उत्तर अर्ध के समान नामवाले हैं। शेष वे ही हैं, जो भरत में हैं। (१४८)

जत्थिच्छसि विक्खंभं, कूडाणं उवइत्तु सिहराहिं ।
तं दुभइयमुस्सेहद्ध-संजुयं जाण विक्खंभं ॥ १४९ ॥

अर्थ – कूटों के शिखर पर से उतरकर जहाँ चौड़ाई चाहता हो, वह दो से विभाजित और ऊँचाई के अर्ध से युक्त चौड़ाई जानें। (१४९)

जत्थिच्छसि विक्खंभं, मूलाउ उप्पइत्तु कूडाणं ।
तं दुभइय मूलिल्ला, विसोहिए जाण विक्खंभं ॥ १५० ॥

अर्थ – कूटों के मूल से ऊपर चढ़कर जहाँ चौड़ाई चाहते हैं, वह दो से विभाजित मूल की चौड़ाई में से कम करने पर चौड़ाई जानें। (१५०)

छ जोयणे सक्कोसे, वेयड्ढनगाण हुंति कूडा उ ।
उच्चिट्ठा वित्थिन्ना, तावइयं चेव मूलम्मि ॥ १५१ ॥

अर्थ – वैताढ्यपर्वतों के कूट ६ योजन और १ गाउ ऊँचे हैं और मूल में उतने ही चौड़े हैं। (१५१)

अद्धं से उवरितले, मज्झे देसूणगा भवे पंच ।
देसूणा वीसं पन्नरस, दस परिरउ जहासंखं ॥ १५२ ॥

अर्थ – ऊपर उसकी अपेक्षा आधा चौड़ा है, बीच में देशोन ५ योजन चौड़ा है, परिधि क्रमशः देशोन २० योजन, १५ योजन और १० योजन है। (१५२)

कोसायामा कोसद्ध-वित्थडा कोसमूणमुव्विद्धा ।
जिणभवणा वेयड्ढेसु, होंति आययणकूडेसु ॥ १५३ ॥

अर्थ – वैताढ्यपर्वतों पर सिद्धायतन कूटों के ऊपर १ गाउ लम्बे, १/२ गाउ चौड़े और न्यून १ गाउ ऊँचे जिनभवन हैं। (१५३)

पंचेव धणुसयाइं, उव्विद्धा वित्थरेण तस्सद्धं ।
तावइयं च पवेसे, दारा तेसिं तओ तिदिसिं ॥ १५४ ॥

अर्थ – उसकी ३ दिशाओं में ५००धनुष्य ऊँचे, उसके आधे विस्तारवाले और उतने ही प्रवेशद्वार हैं। (१५४)

कूडेसु सेसएसु य, पासायवडिंसया मणभिरामा ।
उच्चत्तेणं कोसं, कोसद्धं होंति वित्थिन्ना ॥ १५५ ॥

अर्थ – शेष कूटों के ऊपर सुन्दर, ऊँचाई से १ गाउ, १/२ गाउ विस्तारवाले प्रासादावतंसक हैं। (१५५)

विज्जुप्पभि हरिकूडो, हरिस्सहो मालवंतवक्खारे ।
नंदणवणबलकूडो, उव्विद्धो जोयणसहस्सं ॥ १५६ ॥
मूले सहस्समेगं, मज्झे अद्धट्ठमा सया हुंति ।
उवरिं पंच सयाइं, वित्थिन्ना सव्वकणगमया ॥ १५७ ॥

अर्थ – विद्युत्प्रभ के ऊपर हरिकूट, माल्यवंत वक्षस्कार पर्वत के ऊपर हरिस्सह कूट और नंदनवन का बलकूट १,००० योजन ऊँचा, मूल में १,००० योजन – मध्य में ७५० योजन और ऊपर ५०० योजन विस्तारवाला सर्वसुवर्णमय है। (१५६-१५७)

नंदणवणरुंधिता, पंचसए जोयणाइं नीसरिउं ।
आयासे पंच सए, रुंभित्ता भाइ बलकूडो ॥ १५८ ॥

अर्थ - बलकूट नंदनवन के ५०० योजन रोककर बाहर निकलकर आकाश में ५०० योजन रोककर सुशोभित होता है। (१५८)

इगतीस जोयणसए, बासट्ठे मूलपरिरओ तेसिं ।
तेवीस सए बावत्तरे उ, मज्झे परिरओ तेसिं ॥ १५९ ॥

अर्थ - उसकी मूल परिधि ३,१६२ योजन है। उसके मध्य में परिधि २,३७२ योजन है। (१५९)

उवरिं पन्नरस सए, इगसीए साहिए परिरएणं ।
सेसनगाणं कूडा, पंच सए होंति उव्विद्धा ॥ १६० ॥

अर्थ - ऊपर परिधि से साधिक १,५८१ योजन है। शेष पर्वतों के कूट ५०० योजन ऊँचे हैं। (१६०)

तावइअं वित्थिन्ना, मूले तस्सद्धमेव उवरितले ।
तिन्नेव जोयणसए, मज्झे पणसत्तरा हुंति ॥ १६१ ॥

अर्थ - (वे) मूल में उतने ही विस्तारवाले, ऊपर उसके आधे विस्तारवाले, मध्य में ३७५ योजन विस्तारवाले हैं। (१६१)

पन्नरसेक्कासीए, किंचिहिएक्कारसे च छलसीए ।
सत्तसएक्काणउए, किंचूणे परिरओ कमसो ॥ १६२ ॥

अर्थ - (उसके मूल में, मध्य में और ऊपर) १,५८१ योजन, साधिक १,१८६ योजन और कुछ कम ७९१ योजन क्रमशः परिधि है। (१६२)

जिणभवणा वित्थिन्ना, पणवीसायामओ य पन्नासं ।
छत्तीसइमुव्विद्धा, सिद्धनामेसु कूडेसु ॥ १६३ ॥

अर्थ - सिद्ध नामक कूटों के ऊपर २५ योजन विस्तारवाले, लम्बाई से ५० योजन और ३६ योजन ऊँचे जिनभवन हैं। (१६३)

चत्तारि जोयणाइं, विक्खंभपवेसओ दुगुणमुच्चा ।
उत्तरदाहिणपुव्वेण, तेसिं दारा तओ हुंति ॥ १६४ ॥

अर्थ - उसके उत्तर-दक्षिण-पूर्व में चौड़ाई और प्रवेश से ४ योजन, उससे दोगुने ऊँचे तीन द्वार हैं। (१६४)

कुडेसु सेसएसु य, बावट्ठी जोयणाणि अद्धं च ।
उव्विद्धा पासाया, तस्सद्धं होंति वित्थिन्ना ॥ १६५ ॥

अर्थ - शेष कूटों के ऊपर ६२ १/२ योजन ऊँचे, उससे आधे चौड़े प्रासाद है। (१६५)

मज्झे वेयड्ढाण उ, कणगमया तिन्नि तिन्नि कूडाओ,
सेसा पव्वयकूडा, रयणमया होंति नायव्वा ॥ १६६ ॥

अर्थ - वैताढ्यपर्वत के मध्य के ३ - ३ कूट सुवर्णमय हैं। शेष पर्वतकूट रत्नमय है, ऐसा जानें। (१६६)

वेयड्ढाइसु पुव्वेण, कुरुगिरिसु सुदंसणो जत्तो ।
सीयासीओयाओ, जत्तो वक्खार जिणकूडा ॥ १६७ ॥

अर्थ - वैताढ्यपर्वतों के ऊपर पूर्व में, कुरु के पर्वतों के ऊपर जिस तरफ सुदर्शन (मेरु) है उस तरफ, वक्षस्कार पर्वतों के ऊपर जिस तरफ सीता-सीतोदा है उस तरफ सिद्धकूट है। (१६७)

पउमे य महापउमे, तिगिच्छी केसरी दहे चेव ।
हरए महपुंडरीए, पुंडरीए चेव य दहाओ ॥ १६८ ॥

अर्थ - पद्म, महापद्म, तिगिच्छी, केसरी द्रह, महापुंडरीक ह्रद और पुंडरीक - ये द्रह हैं। (१६८)

जोयणसहस्स दीहा, बाहिरहरया तयद्ध वित्थिन्ना ।
दो दो अब्भिंतरया, दुगुणा दुगुणप्पमाणेणं ॥ १६९ ॥

अर्थ - बाहर के ह्रद १,००० योजन लम्बे, उससे आधे चौड़े हैं। अन्दर के दो - दो ह्रद प्रमाण से दोगुने - दोगुने हैं। (१६९)

एएसु सुरवहूओ, वसंति पलिओवमट्ठियाओ ।
सिरिहिरिधिइ कित्तीओ, बुद्धी लच्छी सनामाओ ॥ १७० ॥

अर्थ – इसमें एक पल्योपम स्थितिवाली श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी नाम की देवियाँ निवास करती हैं। (१७०)

गंगासिंधू तह रोहियंस-रोहियनइ य हरिकंता।
हरिसलिला सीओया, सत्तेया हुंति दाहिणओ ॥ १७१ ॥

अर्थ – गंगा, सिंधु, रोहितांशा, रोहिता नदी, हरिकांता, हरिसलिला, और सीतोदा – ये सात नदियाँ दक्षिण की तरफ हैं। (१७१)

सीया य नारिकंता, नरकंता चेव रुप्पिकूला य।
सलिला सुवन्नकूला, रत्तवइ रत्ता उत्तरओ ॥ १७२ ॥

अर्थ – सीता, नारीकांता, नरकांता, रुक्मीकूला, सुवर्णकूला नदी, रक्तवती, रक्ता – ये उत्तर तरफ की नदियाँ हैं। (१७२)

हेमवएरन्नवए, हरिवासे रम्मए य रयणमया।
चत्तारि वट्टवेयड्ढ-पव्वया पल्लयसरिच्छा ॥ १७३ ॥

अर्थ – हिमवंत, हिरण्यवंत, हरिवर्ष और रम्यक् क्षेत्रों में रत्न के, प्याला के समान, चार वृत्तवैताढ्यपर्वत हैं। (१७३)

सद्दावइ वियडावइ, गंधावइ मालवंत परियाये।
जोयणसहस्समुच्चा, तावइयं चेव वित्थिन्ना ॥ १७४ ॥

अर्थ – (उनके) क्रमशः शब्दापाती, विकटापाती, गंधापाती व माल्यवंत नाम हैं। वे १,००० योजन ऊँचे और उतने ही चौड़े हैं। (१७४)

इगतीस जोयणसए, बावट्ठे परिरएण नायव्वा।
साइ अरुणे पउमे, पहास देवा अहिवइ एसिं ॥ १७५ ॥

अर्थ – वह परिधि से ३,१६२ योजन जानें। उसके अधिपति स्वाति, अरुण, पद्म और प्रभास देव हैं। (१७५)

चोद्दसहियं सयं जोयणाण, एक्कारसेव य कलाओ।
वेयड्ढदाहिणेणं, गंतुं लवणस्स उत्तरओ ॥ १७६ ॥

नव जोयण वित्थिन्ना, बारसदीहा पुरी अउज्झत्ति।
जम्मद्धभरहमज्झे, एरवयद्धेऽवि एमेव ॥ १७७ ॥

अर्थ – वैताढ्य के दक्षिण में, लवणसमुद्र के उत्तर में ११४ योजन ११ कला जाकर नौ योजन चौड़ी, १२ योजन लम्बी, दक्षिण भरतार्ध के मध्य में अयोध्या नामकी नगरी है। इसी प्रकार ऐरवतार्ध में भी है। (१७६-१७७)

पणुवसईमुव्विद्धो, पन्नासजोयणाणि वित्थिन्नो।
वेयड्ढो रययमओ, भारहखित्तस्स मज्झम्मि ॥ १७८ ॥

अर्थ – भरतक्षेत्र के मध्य में २५ योजन ऊँचा, ५० योजन चौड़ा, रजतमय वैताढ्यपर्वत है। (१७८)

पन्नास जोयणाइं, दीहाओ अट्ठ जोयणुच्चाओ।
बारस वित्थाराओ, वेयड्ढगुहाउ दो होंति ॥ १७९ ॥

अर्थ – वैताढ्य की दो गुफाएँ ५० योजन लम्बी, ८ योजन ऊँची और १२ योजन चौड़ी है। (१७९)

तिमिसगुहा अवरेणं, पुव्वेण नगरस्स खंडगपवाया।
चउ जोयणवित्थिन्ना, तद्दुगुणुच्चा य सिं दारा ॥ १८० ॥

अर्थ – पर्वत के पश्चिम में तमिस्रागुफा और पूर्व में खंडप्रपात गुफा है। उनके द्वार ४ योजन चौड़े और उनसे दोगुने ऊँचे हैं। (१८०)

तिमिसगुह पुरच्छिम-पच्छिमेसु कडएसु जोयणंतरिया।
तरणिसमसंठियाइं, पंचधणुसयायामविक्खंभा ॥ १८१ ॥
जोयण उज्जोयकरा, रविमंडलपडिनिकासतेयाइं।
इगुवन्न मंडलाइं, आलिहमाणो इहं पविसे ॥ १८२ ॥

अर्थ – तमिस्रागुफा के पूर्वी और पश्चिमी दीवारों पर १ योजन के अन्तरवाले, सूर्य जैसे आकारवाले, ५०० धनुष्य लम्बे-चौड़े, १ योजन तक

प्रकाश करनेवाले, सूर्यमंडल के समान तेजवाले ४९ मंडलों का आलेखन करते हुए इस गुफा में (चक्रवर्ती) प्रवेश करतै है। (१८१-१८२)

पलिओवमठिइया, एएसिं अहिवइ महिड्ढीया।
कयमालनट्टमालत्ति, नामया दोन्नि देवाओ ॥ १८३ ॥

अर्थ - इन गुफाओं के अधिपति, १ पल्योपम स्थितिवाले, कृतमाल-नृत्तमाल नामक दो महर्द्धिक देव हैं। (१८३)

सत्तरस जोयणाइं, गुहदाराणोभयोऽवि गंतूणं।
जोयण दुगंतराओ, विउलाओ जोयणे तिन्नि ॥ १८४ ॥
गुहविपुलायामाओ, गंगं सिंधु च ता समप्पिंति।
पव्वयकडगपवूढा, उमग्गनिमग्गसलिलाओ ॥ १८५ ॥

अर्थ - गुफा के द्वारों से (४-४ योजन के तोड्डुकों के बाद) दोनों तरफ १७ योजन जाकर, दो योजन के अन्तरवाली, ३ योजन चौड़ी, गुफा की चौड़ाई जितनी लम्बी, पर्वत की दीवार से निकली हुई, उन्मग्नजला-निमग्नजला (नामकी दो नदियाँ हैं)। वे गंगा और सिन्धु में पूरी होती हैं। (१८४-१८५)

दो दाहिणोत्तराओ, सेढीओ जोयणे दसुप्पइओ।
दस जोयण पिहुलाओ, गिरिवरसमदीहभागाओ ॥ १८६ ॥

अर्थ - (वैताढ्यपर्वत के ऊपर) १० योजन ऊपर जाकर १० योजन चौड़ी और पर्वत के समान लम्बी दक्षिण और उत्तर दो श्रेणियाँ हैं। (१८६)

विज्जाहरनगराइं, पन्नासं दक्खिणाए सेढिए।
जणवयपरिणिद्धाइं, सट्ठिं पुण उत्तरिल्लाए ॥ १८७ ॥

अर्थ - दक्षिण श्रेणी में देशों से युक्त विद्याधरों के ५० नगर हैं। उत्तर की श्रेणी में ६० नगर हैं। (१८७)

विज्जाहरसेढीओ, उड्ढं गंतूण जोयणे दसओ।
दस जोयण पिहुलाओ, सेढीओ सक्करायस्स ॥ १८८ ॥

सोमजमकाइयाणं, देवाणं वरुणकाइयाणं च।
वेसमणकाइयाणं, देवाणं आभिओगाणं ॥ १८९ ॥

अर्थ - विद्याधरों की श्रेणी से १० योजन ऊपर जाकर १० योजन चौड़ी शक्रराज के सोम-यम-वरुण-वैश्रमण कायिक आभियोगिक देवों की श्रेणियाँ हैं। (१८८-१८९)

पंचेव जोयणाइं, उड्ढं गंतूण होइ उवरितलं।
दस जोयण वित्थिन्नं, मणिरयणविभूसियं रम्मं ॥ १९० ॥

अर्थ - ५ योजन ऊपर जाकर १० योजन चौड़ा, मणिरत्नों से विभूषित, ऊपर का सुन्दर तल है। (१९०)

एस गमो सेसाण वि, वेयड्ढगिरीण नवरुदीयाणं।
ईसाण लोगपालाण, होंति अभिओगसेढीओ ॥ १९१ ॥

अर्थ - यही बात शेष वैताढ्य पर्वतों की की भी जानें, परन्तु उत्तर की वैताढ्य पर्वतों की आभियोगिक श्रेणियाँ ईशान के लोकपालों की है। (१९१)

जीवाधणुपट्ठबाहा-रहिया य हवंति विजयवेयड्ढा।
पणपन्नं पणपन्नं, विज्जाहरसेढीनगराइं ॥ १९२ ॥

अर्थ - विजय के वैताढ्य पर्वत जीवा, धनु:पृष्ठ और बाहा से रहित है। उसमें विद्याधर श्रेणी के ५५-५५ नगर हैं। (१९२)

सव्वेऽवि उसभकूडा, उव्विद्धा अट्ठ जोयणा होंति।
बारस अट्ठ य चउरो, मूले मज्झुवरि वित्थिन्ना ॥ १९३ ॥

अर्थ - सभी ऋषभ कूट ८ योजन ऊँचे. मूल में, मध्य में और ऊपर क्रमश: १२, ८ और ४ योजन चौड़े हैं। (१९३)

सत्तत्तीसइरेगे, मूले पणुवीसजोयणा मज्झे।
अइरेगाणि दुवालस, उवरितले होंति परिहिम्मि ॥ १९४ ॥

अर्थ – (उसकी) जड़ में साधिक ३७ योजन, मध्य में २५ योजन और ऊपर साधिक १२ योजन परिधि है। (१९४)

ओसप्पिणीउ उसप्पिणीओ, भरहे तहेव एरवए।

परियट्टंति कमेणं, सेसेसु अवट्ठिओ कालो ॥ १९५ ॥

अर्थ – भरत में और ऐरवत में क्रमशः अवसर्पिणियाँ–उत्सर्पिणियाँ चलती हैं। शेष (क्षेत्रों) में अवस्थित काल है। (१९५)

हिमवंतसेलसिहरे, वरारविंदद्दहो सलिलपुन्नो।

दसजोयणावगाढो, वित्थिण्णो दाहिणुत्तरओ ॥ १९६ ॥

अर्थ – लघुहिमवंत पर्वत के शिखर पर पानी से भरा हुआ १० योजन गहरा, दक्षिण–उत्तर चौड़ा, श्रेष्ठ कमलोंवाला पद्मद्रह है। (१९६)

पउमद्दहस्स मज्झे, चउकोसायामवित्थरं पउमं।

तं तिगुणं सविवेसं, परिही दो कोस बाहल्लं ॥ १९७ ॥

अर्थ – पद्मद्रह के मध्य में ४ गाउ लम्बा–चौड़ा कमल है। वह (लम्बाई–चौड़ाई) साधिक ३ गुणा (करें इतनी) परिधि है, २ गाउ मोटाई है। (१९७)

दसजोयणावगाढं, दो कोसे ऊसियं जलंताओ।

वइरामयमूलागं, कंदोऽवि य तस्स रिट्ठमओ ॥ १९८ ॥

अर्थ – वह १० योजन अवगाढ, पानी के ऊपर २ गाउ ऊँचा, वज्रमय मूलवाला है। उसका कंद भी रिष्टरत्नमय है। (१९८)

वेरुलियमओ नालो, बाहिरपत्ता य तस्स तवणिज्जा।

जंबूनयामया पुण, पत्ता अब्भिंतरा तस्स ॥ १९९ ॥

अर्थ – उसकी नाल वैडूर्यमय, बाहर के पत्ते तपनीय सुवर्ण के और अन्दर के पत्ते जांबूनदमय हैं। (१९९)

सव्वकणगामइ कण्णिगा य, तवणिज्ज केसरा भणिया।

तीसे य कण्णिगाए, दोकोसायामविक्खंभा ॥ २०० ॥

अर्थ – (उसकी) सर्वकनकमय कर्णिका और उस कर्णिका के ऊपर २ गाउ लम्बी–चौड़ी तपनीयमय केसरा कही गई है। (२००)

तं तिगुणं सविसेसं, परिही से कोसमेग बाहल्लं।

मज्झम्मि तीइ भवणं, कोसायामद्धवित्थिन्नं ॥ २०१ ॥

अर्थ – वह (लम्बाई–चौड़ाई) साधिक ३ गुणा उसकी परिधि है, १ गाउ मोटाई है। उसके मध्य में १ गाउ लम्बा और आधा चौड़ा भवन है। (२०१)

देसूणकोसमुच्चं, दारा से तिदिसि धणुसए पंच।

उव्विद्धा तस्सद्धं, वित्थिन्ना तत्तियपवेसे ॥ २०२ ॥

अर्थ – वह देशोन १ गाउ ऊँचा है। उसकी तीन दिशाओं में ५०० धनुष्य ऊँचे, उससे आधे चौड़े, उतने प्रवेशद्वार हैं। (२०२)

भवणस्स तस्स मज्झे, सिरीए देवीए दिव्वसयणिज्जं।

मणिपीढियाइ उवरिं, अड्ढाइयधणुसउच्चाए ॥ २०३ ॥

अर्थ – उस भवन के मध्य में २५० धनुष्य ऊँची मणिपीठिका के ऊपर श्रीदेवी की दिव्य शय्या है। (२०३)

तं पउमं अन्नेणं, तत्तो अद्धप्पमाणमित्ताणं।

आवेढियं समंता, पउमाणट्ठसयएणं तु ॥ २०४ ॥

अर्थ – वह कमल उसके आधे प्रमाणवाले अन्य १०८ कमलों से चारों ओर से घिरा हुआ है। (२०४)

सिरिसामन्नसुराणं, चउण्हं साहस्सिणं सहस्साइं।

चत्तारि पंकयाणं, वायव्वीसाणुइणेणं ॥ २०५ ॥

अर्थ – वायव्य, ईशान और उत्तर में श्रीदेवी के ४,००० सामानिक देवों के ४,००० कमल हैं। (२०५)

मयहरियाण चउण्हं, सिरिए पउमस्स तस्स पुव्वेणं।

महुयरिगणोवगीया, चउरो पउमा मणभिरामा ॥ २०६ ॥

अर्थ - उस कमल के पूर्व में श्रीदेवी के ४ महत्तरिकाओं के भ्रमरों से गुंजायमान सुन्दर चार कमल हैं। (२०६)

अट्ठण्ह सहस्साणं, देवाणब्भिंतराए परिसाए।
दाहिणपुरत्थिमेणं, अट्ठसहस्साइ पउमाणं ॥ २०७ ॥

अर्थ - अग्निकोण में अभ्यंतर पर्षदा के ८,००० देवों के ८,००० कमल हैं। (२०७)

पउमस्स दाहिणेणं, मज्झिमपरिसाए दस सहस्साणं।
दस पउमसहस्साइं, सीरिदेवीए सुरवराणं ॥ २०८ ॥

अर्थ - कमल के दक्षिण में श्रीदेवी के मध्यमपर्षदा के १०,००० देवों के १०,००० कमल हैं। (२०८)

बारस पउमसहस्सा, दक्खिणपच्चत्थिमेण पउमस्स।
परिसाए बाहिराए, दुवालसण्हं सहस्साणं ॥ २०९ ॥

अर्थ - कमल के नैऋत्य कोने में बाह्यपर्षदा के १२,००० देवों के १२,००० कमल हैं। (२०९)

अरविंदस्सवरेणं, सत्तण्हणियाहिवाण देवाणं।
वियसियसहस्सपत्ताणि, सत्त पउमाणि देवीए ॥ २१० ॥

अर्थ - कमल के पश्चिम में श्रीदेवी के ७ सेनापति देवों के विकसित ७ कमल हैं। (२१०)

चाउद्दिसिं पि पउमस्स, तस्स सिरिदेविआयरक्खाणं।
सोलस पउमसहस्सा, तिन्नि य अन्ने परिक्खेवा ॥ २११ ॥

अर्थ - उस कमल की चारों दिशाओं में श्रीदेवी के आत्मरक्षक देवों के १६,००० कमल हैं और अन्य ३ वलय हैं। (२११)

बत्तीस सयसहस्सा, पउमाणब्भिंतरे परिक्खेवे।
चत्तालीसं लक्खा, मज्झिमए परिरए होंति ॥ २१२ ॥

अर्थ - अभ्यंतर वलय में ३२,००,००० कमल हैं, मध्य वलय में ४०,००,००० कमल हैं। (२१२)

अडयालीसं लक्खा, बाहिरए परिरयम्मि पउमाणं।
एवमेसिं पउमाणं, कोडी वीसं च लक्खाइं ॥ २१३ ॥

अर्थ - बाह्य वलय में ४८,००,००० कमल हैं। इस प्रकार ये कमल १,२०,००,००० हैं। (२१३)

एयाओ हरयाओ, पुव्वद्दारेण निग्गया गंगा।
पुव्वाभिमुहं गंतूण, जोयणाणं सए पंच ॥ २१४ ॥
गंगावत्तणकूडे, आवत्ता दाहिणामुहं तत्तो।
पंचसए गंतूणं, तेवीसे तिन्नि उ कलाउ ॥ २१५ ॥
निवडइ गिरिसिहराओ, गंगाकुंडम्मि जिब्भियाए उ।
मगरवियट्टाहरसं-ठियाए वइरामयतलम्मि ॥ २१६ ॥

अर्थ - इन ह्रदों के पूर्वद्वार से गंगा निकलकर पूर्वाभिमुख ५०० योजन जाकर गंगावर्तनकूट से दक्षिण की ओर मुड़कर वहाँ से ५२३ योजन ३ कला जाकर पर्वत के शिखर पर से वज्रमय तलवाले गंगाकुंड में मगर के चौड़े होठ जैसी जिह्विका से गिरती है। (२१४-२१५-२१६)

छ जोयणे सकोसे, विक्खंभेणद्धकोसबाहल्लं।
दो कोसायामेणं, वइरामइ जिब्भिया सा उ ॥ २१७ ॥

अर्थ - वह जिह्विका विष्कंभ से ६ योजन १ गाउ है, १/२ गाउ मोटी है, लम्बाई में २ गाउ है और वज्रमय है। (२१७)

आयामो विक्खंभो, सट्ठिं कुंडस्स जोयणा हुंति।
नउयसयं किंचूणं, परिही दसजोयणोगाहो ॥ २१८ ॥

अर्थ - कुंड की लम्बाई-चौड़ाई ६० योजन है, परिधि कुछ कम १९० योजन है और गहराई १० योजन है। (२१८)

कुंडस्स मज्झयारे, दो कोसे ऊसिओ जलंताओ ।
गंगादीवो रम्मो, विस्थिन्नो जोयणे अट्ठ ॥ २१९ ॥

अर्थ - कुंड के बीच पानी से २ गाउ ऊँचा और ८ योजन चौड़ा सुन्दर गंगाद्वीप है। (२१९)

वयरामयस्स तस्स उ, परिही पणुवीस जोयणा अहिया ।
मज्झम्मि तस्स भवणं, गंगादेवीए सिरिसरिसं ॥ २२० ॥

अर्थ - वज्रमय उस गंगाद्वीप की परिधि साधिक २५ योजन है। उसके मध्य में श्रीदेवी जैसा गंगादेवी का भवन है। (२२०)

गंगापवायकुंडा, निग्गंतू दाहिणिल्लदारेणं ।
चोद्दससहस्स सहिया, सलिलाणं उयहिमवगाढा ॥ २२१ ॥

अर्थ - गंगाप्रपातकुंड के दक्षिणी द्वार से निकलकर १४,००० नदियों के साथ (गंगानदी) समुद्र में उतरती है। (२२१)

छज्जोयणे सकोसे, पवहे गंगानइए वित्थारो ।
कोसद्धं ओगाहो, कमसो परिवड्ढमाणीओ ॥ २२२ ॥

अर्थ - प्रारम्भ में गंगानदी का विस्तार ६ योजन और १ गाउ है, गहराई १/२ गाउ है, जो क्रमशः बढ़ती जाती है। (२२२)

मुहमूले वित्थिन्ना, बासट्ठिं जोयणाणि अद्धं च ।
उव्वेहेण सकोसं, जोयणमेगं मुणेयव्वं ॥ २२३ ॥

अर्थ - (गंगानदी) मुखमूल में (अंत में) ६२ १/२ योजन चौड़ी है, और इसकी गहराई १ योजन १ गाउ जानें। (२२३)

मंदरदाहिणपासे, जा सलिला ओरुहंति सेलाहिं ।
पवहे जो वित्थारो, तासिं करणाणि वोच्छामि ॥ २२४ ॥

अर्थ - मेरुपर्वत के दक्षिण तरफ जो नदियाँ पर्वत पर से उतरती हैं, उनका जो प्रारम्भिक विस्तार है, उसका करण कहूँगा। (२२४)

पवहे दहवित्थारो, असीइभइओ उ दाहिणमुहीणं ।
स च चालीसइ भइओ, सो चेव य उत्तरमुहीणं ॥ २२५ ॥

अर्थ - ८० से विभाजित द्रह का विस्तार दक्षिणमुखी नदियों का प्रारम्भिक विस्तार है। ४० से विभाजित वही उत्तरमुखी नदियों का प्रारम्भिक विस्तार है। (२२५)

जो उण उत्तरपासे, एसेव गमो हवेज्ज नायव्वो ।
जो दाहिणाभिमुहीणं, सो नियमो उत्तरमुहीणं ॥ २२६ ॥

अर्थ - जो उत्तर तरफ की नदियाँ हैं, उन्हें इसी प्रकार जानें। दक्षिणमुखी नदियों का जो नियम है, वही उत्तरमुखी नदियों का भी है। (२२६)

जो जीसे वित्थारो, सलिलाए होइ आढवंतीए ।
सो दसहिं पडुप्पन्नो, मुहवित्थारो मुणेयव्वो ॥ २२७ ॥

अर्थ - प्रारम्भ होनेवाली नदियों का जो विस्तार है, वह १० से गुणित मुखविस्तार (समुद्र में प्रवेश करते समय का विस्तार) जानें। (२२७)

जो जत्थ उ वित्थारो, सलिलाए होइ जंबूद्दीवम्मि ।
पन्नासइमं भागं, तस्सुव्वेहं वियाणाहि ॥ २२८ ॥

अर्थ - जंबूद्वीप में नदियों का जहाँ जो विस्तार हो उसका ५०वाँ भाग उसकी गहराई जानें। (२२८)

पवहमुहवित्थराणं, विसेसमद्धं भयाहि सरियाणं ।
सरियायामेणं च उ, सा वुड्ढी एगपासम्मि ॥ २२९ ॥

अर्थ - नदियों के प्रारम्भिक और मुख के विस्तारों के अन्तर के आधे को नदी की लम्बाई से भाग दें। वह एक तरफ की वृद्धि है। (२२९)

सा चेव दोहि गुणिया, उभओ पासम्मि होइ परिवुड्ढी ।
जावइया सलिलाओ, माणुसलोगम्मि सव्वम्मि ॥ २३० ॥

पणयालीस सहस्सा, आयामो होइ सव्वसरियाणं ।
एसेव भागहारो, सरियाणं वुड्ढिहाणीसुं ॥ २३१ ॥

अर्थ - दोसे गुण की गई वही दोनों तरफ की वृद्धि है । सर्व मनुष्यलोक में जितनी नदियाँ हैं, उन सभी नदियों की लम्बाई ४५,००० योजन है । नदियों की वृद्धि-हानि में यही भागाकार है । (२३०-२३१)

जा जाओ उ पवूढा, सलिला सेलेहिं तेसिं विक्खंभो ।
दहवित्थारेणूणो, सेसद्धं सलिल गच्छंति ॥ २३२ ॥

अर्थ - जो नदी जिस पर्वत पर से शुरु हुई, वे नदियाँ (पर्वत के ऊपर) द्रह के विस्तार से न्यून उस पर्वत की चौड़ाई कर शेष का आधा करें, इतना जाता है । (२३२)

एस विही सिंधूए, अवराभिमुहीए होइ नायव्वो ।
सलिलाऽवि रोहियंसा, हरया उ उत्तरदिसाए ॥ २३३ ॥
जोयणसयाणि दुन्नि उ, गंतुं छावत्तराणि छच्च कला ।
नगसिहराओ निवडिय, नियए कुंडम्मि वइरतले ॥ २३४ ॥

अर्थ - यह विधि पश्चिमाभिमुख सिन्धु नदी का जानें । रोहितांशा नदी भी ह्रद से उत्तर दिशा में २७६ योजन ६ कला जाकर पर्वत के शिखर पर से गिरकर अपने वज्र के तलवाले कुंड में गिरती है । (२३३-२३४)

कुंडुव्वेहो दीवुस्सओ य, गंगासमो मुणेयव्वो ।
जिब्भियमाइ सेसो, दुगुणो पुण रोहियंसाए ॥ २३५ ॥

अर्थ - कुंड की गहराई और द्वीप की ऊँचाई गंगानदी के समान जानें । शेष जिह्विका आदि रोहितांशा की अपेक्षा दोगुणा है । (२३५)

तोरणवरेणुदीणेण, निग्गया निययकुंडओ साऽवि ।
सद्दावइं नगवरं, अप्पत्ता दोहिं कोसेहिं ॥ २३६ ॥
अवरेण परावत्ता, अडवीसनइसहस्सपरिवारा ।
गंगादुगुणपमाणा, अवरेणुदहिं अणुप्पत्ता ॥ २३७ ॥

अर्थ - अपने कुंड में से उत्तर के सुन्दर तोरण से निकलकर वह भी शब्दापाती पर्वत से २ गाउ पहले पश्चिम की तरफ मुड़कर २८,००० नदी के परिवारवाली, गंगा से दोगुणी प्रमाणवाली पश्चिम में समुद्र में मिलती है । (२३६-२३७)

सिहरिम्मि वि एस कमो, पुंडरियदहम्मि लच्छिनिलयम्मि ।
नवरं सलिला रत्ता, पुव्वेणवरेण रत्तवइ ॥ २३८ ॥

अर्थ - शिखरी पर्वत के ऊपर लक्ष्मी के निलयरूप पुंडरीक द्रह में भी यह क्रम है । परन्तु पूर्व में रक्तानदी और पश्चिम में रक्तवती नदी है । (२३८)

सलिला सुवण्णकूला, दाहिणओ चेव दोहिं कोसेहिं ।
वियडावइमप्पत्ता, पुव्वेणुदहिं समोगाढा ॥ २३९ ॥

अर्थ - दक्षिण में सुवर्णकूला नदी विकटापाती पर्वत के २ गाउ पहले पूर्व की तरफ (मुड़कर) समुद्र में उतरती है । (२३९)

हिमवंते य महंते, हरयाओ दाहिणुत्तरपवूढा ।
रोहियहरिकंताओ, मज्झेणं पव्वयवरस्स ॥ २४० ॥
सोलस सयाणि पंचुत्तराणि, पंच य कला उ गंतूणं ।
नगसिहरा पडियाओ, कुंडेसुं निययनामेसुं ॥ २४१ ॥

अर्थ - महाहिमवंत पर्वत के ऊपर ह्रद में से दक्षिण-उत्तर की ओर निकली हुई रोहिता और हरिकांता नदियाँ पर्वत के मध्य भाग से १,६०५ योजन ५ कला जाकर पर्वत के शिखर पर से अपने नाम के कुंड में गिरती है । (२४०-२४१)

कुंडुव्वेहो दीवुस्सओ य, सव्वत्थ होइ अणुसरिसो ।
जिब्भियमाइ सेसो, दुगुणो दुगुणो उ नायव्वो ॥ २४२ ॥

अर्थ - कुंड की गहराई और द्वीप की ऊँचाई सर्वत्र एक समान है । शेष जिह्विका आदि को क्रमशः दोगुणा जानें । (२४२)

दोण्हं दोण्हं नइणं, उभओऽवि य जाव सीया सीओया ।
खेत्ते खेत्ते य गिरिं, अप्पत्ता दुगुणदुगुणेणं ॥ २४३ ॥

अर्थ - दोनों तरफ सीता-सीतोदा तक दो-दो नदियाँ प्रत्येक क्षेत्र में पर्वत को दोगुने-दोगुने प्रमाण से प्राप्त नहीं की हुई है। (२४३)

हेमवए मज्झेणं, पुव्वोदहिं रोहिया गया सलिला ।
हरिकंता हरिवासं, मज्झेणवरोयहिं पत्ता ॥ २४४ ॥

अर्थ - रोहितानदी हिमवंतक्षेत्र के मध्य से पूर्व समुद्र में गई । हरिकांता नदीं हरिवर्ष क्षेत्र के मध्य से पश्चिम समुद्र को प्राप्त हुई। (२४४)

सलिलाऽवि रुप्पकूला, रुप्पीओ उत्तरेण ओवइओ ।
अवरोयहिं अइगया, पुव्वोदहिमवि य नरकांता ॥ २४५ ॥

अर्थ - रूप्यकूला नदी भी रुक्मी पर्वत पर से उत्तर में उतरकर पश्चिम समुद्र में जाती है । नरकांता नदी भी पूर्व समुद्र में जाती है। (२४५)

हरि सीओया निसहे, गच्छंति नदी उ दाहिणुत्तरओ ।
चउहत्तरिं सयाइं, इगवीसाइं कलं चेगं ॥ २४६ ॥

अर्थ - निषध पर्वत के ऊपर दक्षिण में और उत्तर में हरिसलिला और सीतोदा नदी ७,४२१ योजन और १ कला जाती है। (२४६)

हरिवासं मज्झेणं, हरिसलिला पुव्वसागरं पत्ता ।
कुंडाओ सीओया, उत्तरदिसि पत्थिया संती ॥ २४७ ॥
देवकुरुं पज्जंती, पंच वि हरए दुहा विभयमाणी ।
आपूरमाणसलिला, चुलसीइ नइसहस्सेहिं ॥ २४८ ॥
मेरुवणं मज्झेणं, अट्ठहिं कोसेहिं मेरुमप्पत्ता ।
विज्जुप्पभस्स हिट्ठेणवराभिमुही अह प्पयाया ॥ २४९ ॥

विजया वि य एक्केक्का, अट्ठावीसाइ नइसहस्सेहिं ।
आऊरमाणसलिला, अवरेणुदहिं अणुप्पत्ता ॥ २५० ॥

अर्थ - हरिवर्ष क्षेत्र के मध्य में से हरिसलिला पूर्वसमुद्र में पहुँची । कुंड में से सीतोदा नदी उत्तर में निकलती हुई देवकुरु के मध्य में जा रही पाँचो ह्रदों को दो भागों में विभाजित करती हुई ८४,००० नदियों के द्वारा पानी से भराती हुई मेरुवन के मध्य में से मेरुसे ८ गाउ पहले विद्युत्प्रभ पर्वत के नीचे से पश्चिम की तरफ गई । प्रत्येक विजयों में से भी २८,००० नदियों के द्वारा पानी से भराती हुई वह पश्चिम में समुद्र को मिली । (२४७-२४८-२४९-२५०)

सीयाऽवि दाहिणदिसं, हरए उत्तरकुरा उ दालिंती ।
अप्पत्ता मेरुगिरिं, पुव्वेणं सागरमइइ ॥ २५१ ॥

अर्थ - सीता भी ह्रद में दक्षिण दिशा में निकलकर उत्तरकुरु को दो भागों में विभाजित करती हुई मेरुपर्वत से पहले पूर्व में मुड़कर सागर में जाती है। (२५१)

सलिलाऽवि नारिकंता, उत्तरओ मालवंतपरियागं ।
चउक्कोसेहिं अपत्ता, अवरेणं सागरमइइ ॥ २५२ ॥

अर्थ - नारीकांता नदी भी उत्तर में माल्यवंत पर्वत से ४ गाउ पहले पश्चिम में मुड़कर सागर में जाती है। (२५२)

गाउयमुच्चा पलिओ-वमाउणो वज्जरिसहसंघयणा ।
हेमवएरन्नवए, अहमिंद नरा मिहुणवासी ॥ २५३ ॥

अर्थ - हिमवंत-हिरण्यवंत में १ गाउ ऊँचे, १ पल्योपम आयुष्यवाले वज्रऋषभ संघयणवाले, अहमिन्द्र, युगलिक मनुष्य हैं। (२५३)

चउसट्ठी पिट्ठकरंडयाण, मणुयाण तेसिमाहारो ।
भत्तस्स चउत्थस्स य, गुणसीदिणवच्चपालणया ॥ २५४ ॥

अर्थ – ६४ पुष्ठकरंडकवाले उन मनुष्यों का आहार चोथभक्त में (एकांतर में) होता है और ७९ दिन तक सन्तान का पालन होता है। (२५४)

हरिवास–रम्मएसु उ, आउपमाणं सरीरमुस्सेहो ।
पलिओवमाणि दोन्नि उ, दोन्नि य कोसूसिया भणिया ॥२५५॥
छट्ठस्स य आहारो, चउसट्ठिदिणाणि पालणा तेसिं ।
पिट्ठकरंडाण सयं, अट्ठावीसं मुणेयव्वं ॥ २५६ ॥

अर्थ – हरिवर्ष और रम्यक में आयुष्य प्रमाण २ पल्योपम, शरीर की ऊँचाई २ गाउ कही गई है। उनका छठभत (दो दिनों के अन्तर पर) आहार होता है, ६४ दिनों तक सन्तान का पालन होता है, पृष्ठकरंडक १२८ जानें। (२५५–२५६)

मज्झे महाविदेहस्स, मंदरो तस्स दाहिणुत्तरओ ।
चंदद्धसंठियाओ, दो देवकुरूत्तरकुराओ ॥ २५७ ॥

अर्थ – महाविदेह के मध्य में मेरुपर्वत है। उसके दक्षिण में और उत्तर में अर्ध चन्द्राकार में स्थित दो देवकुरु–उत्तरकुरु हैं। (२५७)

विज्जुप्पभ सोमणसा, देवकुराए पइन्नपुव्वेण ।
इयरीए गंधमायण, एवं चिय मालवंतो वि ॥ २५८ ॥

अर्थ – देवकुरु के पश्चिम में और पूर्व में विद्युत्प्रभ–सौमनस पर्वत हैं। इसी प्रकार उत्तरकुरु में गंधमादन और माल्यवंत पर्वत हैं। (२५८)

वक्खारपव्वयाणं, आयामो तीसजोयणसहस्सा ।
दोन्नि य सया नवहिया, छच्च कलाओ चोण्हंपि ॥ २५९ ॥

अर्थ – चारों वक्षस्कार पर्वतों की लम्बाई ३०,२०९ योजन ६ कला है। (२५९)

वासहरगिरंतेणं, रुंदा पंचेव जोयणसयाइं ।
चत्तारिसय उव्विद्धा, ओगाढा जोयणाण सयं ॥ २६० ॥

अर्थ – वह वर्षधर पर्वत के पास ५०० योजन चौड़ा, ४०० योजन ऊँचा और १०० योजन गहरा है। (२६०)

पंचसए उव्विद्धा, ओगाढा पंच गाउयसयाइं ।
अंगुलअसंखभागं, वित्थिन्ना मंदरंतेणं ॥ २६१ ॥

अर्थ – वह मेरुपर्वत के पास ५०० योजन ऊँचा, ५००गाउ गहरा और अंगुल के असंख्यातवें भाग जितने चौड़े हैं। (२६१)

गिरि गंधमायणो पीयओ य, नीलो य मालवंतगिरी ।
सोमणसो रययमओ, विज्जुप्पभ जच्चतवणिज्जो ॥ २६२ ॥

अर्थ – गंधमादन पर्वत पीला, माल्यवंत पर्वत नीला, सौमनस पर्वत रजतमय और विद्युत्प्रभ पर्वत जात्यतपनीयमय है। (२६२)

अट्ठ सया बायाला, एक्कारस सहस्स दो कलाओ य ।
विक्खंभो उ कुरूणं, तेवन्नं सहस्स जीवा सिं ॥ २६३ ॥

अर्थ – कुरु की चौड़ाई ११, ८४२ योजन २ कला है। उसकी जीवा ५३,००० योजन है। (२६३)

वइदेहा विक्खंभा, मंदरविक्खंभ सोहियद्धं जं ।
कुरुविक्खंभं जाणसु, जीवाकरणं इमं होइ ॥ २६४ ॥

अर्थ – विदेह की चौड़ाई में से मेरु की चौड़ाई बाद करके उसका जो आधा हो, वह कुरु की चौड़ाई जानें। जीवा का करण यह है – । (२६४)

मंदर पुव्वेणायय, बावीससहस्स भद्दसालवणं ।
दुगुणं मंदरसहियं, दुसेलरहियं च कुरुजीवा ॥ २६५ ॥

अर्थ – मेरु पर्वत के पूर्व में २२,००० योजन लम्बा भद्रशाल वन है। उसका दोगुना करके और मेरु पर्वत से युक्त करके दो पर्वतों से रहित वह कुरु की जीवा है। (२६५)

जीवा दुसेलसहिया, मंदरविक्खंभरहियसेसद्धं ।
पुव्वावरविक्खंभो, नायव्वो भद्दसालस्स ॥ २६६ ॥

अर्थ – जीवा को दो पर्वतों के सहित और मेरु पर्वत से रहित करें, शेष के आधे को भद्रशाल वन के पूर्व में और पश्चिम में चौड़ाई जानें । (२६६)

आयामो सेलाणं दोण्ह वि, मिलिओ कुरूण धणुपिट्ठं ।
धणुपिट्ठं दुविहत्तं, आयामो होइ सेलाणं ॥ २६७ ॥

अर्थ – एकत्र की गई दोनों पर्वतों की लम्बाई कुरु का धनु:पृष्ठ है। दो भागों में विभाजित धनु:पृष्ठ उस पर्वतों की लम्बाई है । (२६७)

चत्तारि सया अट्ठारसोत्तरा, सट्ठि चेव य सहस्सा ।
बारस य कला सकला-धणुपट्ठाइं कुरूणं तु ॥ २६८ ॥

अर्थ – कुरु का धनु:पृष्ठ ६०,४१८ योजन और सम्पूर्ण १२ कला है। (२६८)

देवकुराए गिरिणो, विचित्तकूडो य चित्तकूडो य ।
दो जमगपव्वयवरा वडिंसया उत्तरकुराए ॥ २६९ ॥

अर्थ – देवकुरु में विचित्रकूट और चित्रकूट पर्वत है । उत्तरकुरु में मुकुट के समान दो यमक पर्वत हैं । (२६९)

एए सहस्समुच्चा, हरिकूडसमा पमाणओ होंति ।
सीया सीओयाणं, उभओ कूले मुणेयव्वा ॥ २७० ॥

अर्थ – ये पर्वत १,००० योजन ऊँचे, प्रमाण से हरिकूट के समान और सीता-सीतोदा के दोनों किनारे जानें । (२७०)

सीयासीयोयाणं, बहुमज्झे पंच पंच हरयाओ ।
उत्तरदाहिणदीहा, पुव्वावरवित्थडा इणमो ॥ २७१ ॥

अर्थ – सीता-सीतोदा के बहुमध्य में उत्तर-दक्षिण लम्बे और पूर्व-पश्चिम चौड़े यह ५-५ ह्रद हैं । (२७१)

पढमे त्थ नीलवंतो, उत्तरकुरू हरय चंदहरओ य ।
एरावयद्दहो च्चिय, पंचमओ मालवंतो य ॥ २७२ ॥

अर्थ – यहाँ पहले नीलवंत, फिर उत्तरकुरु ह्रद, चन्द्र ह्रद, ऐरावत ह्रद और पाँचवाँ माल्यवंत ह्रद है । (२७२)

निसहद्दह देवकुरू, सूर सुलसे तहेव विज्जुपभे ।
पउमद्दह सरिसगमा, दहसरिसनामा उ देवित्थ ॥ २७३ ॥

अर्थ – निषधद्रह, देवकुरु, सूर, सुलस और विद्युत्प्रभ (द्रह हैं ।) वे पद्मद्रह जैसे हैं । यहाँ द्रह समान नामवाले देव हैं । (२७३)

दसजोयणअंतरिया, पुव्वेणवरेण चेव हरियाणं ।
दस दस च कंचनगिरी, दोन्नि सया होंति सव्वेऽवि ॥ २७४ ॥

अर्थ – ह्रदों के पूर्व में और पश्चिम में १० योजन के अन्तरवाले १०-१० कंचनगिरि पर्वत हैं । सभी २०० हैं । (२७४)

जोयणसयमुव्विद्धा, सयमेगं तेसि मूलविक्खंभो ।
पन्नासं उवरितले, पणसयरी जोयणा मज्झे ॥ २७५ ॥

अर्थ – वह १०० योजन ऊँचा है । उसकी मूल चौड़ाई १०० योजन, ऊपर की चौड़ाई ५० योजन और मध्य में चौड़ाई ७५योजन है । (२७५)

तिन्नि सया सोलहिया, सत्तत्तीसा सया भवे दोन्नि ।
सयमेगट्ठावन्नं, परिही तेसिं जहासंखं ॥ २७६ ॥

अर्थ – उसकी (जड़ में, मध्य में और ऊपर) परिधि अनुक्रम से ३१६ योजन, २३७ योजन और १५८ योजन है । (२७६)

कुरुविक्खंभा सोहिय, सहस्सआयाम जमगहरए य ।
सेसस्स सत्तभागं, अंतरिमो जाण सव्वेसिं ॥ २७७ ॥

अर्थ – कुरु के विष्कंभक में से १,००० योजन लम्बाईवाले यमकपर्वत और ह्रदों को बाद करके शेष के ७ भाग करें। वह सबका अन्तर जानें । (२७७)

अट्ठसया चउत्तीसा, चत्तारि य होंति सत्त भागाओ ।
दोसु वि कुरासु एयं, हरयनगाणंतरं भणियं ॥ २७८ ॥

अर्थ – ८३४ ४/७ योजन – दोनों ही कुरु में ह्रद – पर्वतों का अन्तर कहा गया है । (२७८)

जंबूनयमयं जंबूपीढ-मुत्तरकुराइ पुव्वद्धे ।
सीयाए पुव्वेण, पंचसयायामविक्खंभं ॥ २७९ ॥

अर्थ – उत्तरकुरु के पूर्वार्ध में, सीता के पूर्व में, ५०० योजन लम्बी-चौड़ी जांबूनदमय जंबूपीठ है । (२७९)

पन्नरसेक्कासीए, साहीए परिहि मज्झबाहल्लं ।
जोयण दु छक्क कमसो, हायंतंतेसु दो कोसा ॥ २८० ॥
सव्वरयणामइए, दुगाउ उच्चाइ तं परिखित्तं ।
पउमवरवेइयाए, रुंद्वाए धणुसए पंच ॥ २८१ ॥

अर्थ – (उसकी) परिधि साधिक १,५८१ योजन है, बीच में मोटाई १२ योजन है, क्रमशः घटती हुई अन्त में २ गाउ है । वह सर्वरत्नमय, २ गाउ ऊँची, ५००धनुष्य चौड़ी पद्मवरवेदिका से घिरा हुआ है । (२८०-२८१)

दो गाउ ऊसियाइं, गाउ य रुंदा चउद्दिसिं तस्स ।
पीढस्स दुवाराइं, सछत्तज्झयतोरणाइं च ॥ २८२ ॥

अर्थ – उस पीठ की चारों दिशाओं में २ गाउ ऊँचे, १ गाउ चौड़े, छत्र-ध्वज तोरणों से युक्त द्वार हैं । (२८२)

चउजोयणूसियाए, अट्ठेव य जोयणाइ रुंदाए ।
मणिपीढियाए जंबू, वेइहिं गुत्ता दुवालसहिं ॥ २८३ ॥

अर्थ – (पीठ के ऊपर) ४ योजन ऊँची, ८ योजन चौड़ी मणिपीठिका के ऊपर जंबूवृक्ष है । वह बारह वेदिकाओं (किलों) से गुप्त है । (२८३)

मूला वइरमया से, कंदो खंधो य रिट्ठ वेरुलिओ ।
सोवन्निया य साहा, पसाह तह जायरूवा य ॥ २८४ ॥
विडिमा रायय वेरुलिय, पत्त तवणिज्ज पत्तविंटा से ।
पल्लव अग्गपवाला, जंबूनयरायया तीसे ॥ २८५ ॥

अर्थ – उसका मूल वज्रमय, कंद और तना रिष्टरत्नमय और वैडूर्यमय, शाखा सुवर्ण की, प्रशाखा जातरूप सुवर्ण की विडिमा रजत की, पत्ते वैडूर्यरत्न के पत्तों के डंठल तपनीयमय, पल्लव (गुच्छा) और अग्रप्रवाल (अंकुर) जांबूनदमय और रजतमय है । (२८४-२८५)

रयणमया पुप्फफला, विक्खंभो अट्ठ अट्ठ उच्चत्तं ।
कोसदुगं उव्वेहो, खंधो दो जोयमुव्विद्धो ॥ २८६ ॥
दो कोसे वित्थिन्नो, विडिमा छ जोयणाणि जंबूए ।
चाउद्दिसिं पि सालो, पुव्विल्ले तत्थ सालम्मि ॥ २८७ ॥
भवणं कोसपमाणं, सयणिज्जं तत्थ णाढियसुरस्स ।
तिसु पायासा सेसेसु, तेसु सीहासणा रम्मा ॥ २८८ ॥

अर्थ – जंबूवृक्ष के पुष्प-फल रत्नमय हैं, चौड़ाई ८ योजन है, ऊँचाई ८ योजन है, गहराई २ गाउ है, तना २ योजन ऊँचा और २ गाउ चौड़ा है, विडिमा ६ योजन की है, चारों दिशाओं में शाखाएँ हैं, उनमें पूर्व की शाखा के ऊपर १ गाउ प्रमाणवाला भवन है, उसके ऊपर अनादृत देव की शय्या है, शेष ३ शाखाओं के ऊपर प्रासाद हैं, उसमें सुन्दर सिंहासन हैं । (२८६-२८७-२८८)

ते पासाया कोसं, समूसिया कोसमद्ध वित्थिन्ना ।
विडिमोवरि जिणभवणं, कोसद्धं होइ वित्थिन्नं ॥ २८९ ॥
देसूणकोसमुच्चं, जंबू अट्ठस्सएण जंबूणं ।
परिवारिया विरायइ, तत्तो अद्धप्पमाणेणं ॥ २९० ॥

अर्थ – वे प्रासाद १ गाउ ऊँचे हैं, १/२ गाउ चौड़े हैं, विडिमा के ऊपर १/२ गाउ चौड़ा और देशोन १ गाउ ऊँचा जिनभवन है। जंबूवृक्ष उससे आधा प्रमाणवाला १०८ जंबूवृक्ष से घिरा हुआ सुशोभित है। (२८९-२९०)

पउमद्दहे सिरिए, जो परिवारो कमेण निद्दिट्ठो।
सो चेव य नायव्वो, जंबूएऽणाढियसुरस्स ॥ २९१ ॥

अर्थ – पद्मद्रह में श्रीदेवी का जो परिवार क्रमशः कहा गया है, वही जंबूवृक्ष के अनादृत देवों का जानें। (२९१)

बहुविहरुक्खगणेहिं, वणसंडेहिं घणनिवहभूएहिं।
तिहिं जोयणसएहिं, सुदंसणा संपरिक्खित्ता ॥ २९२ ॥

अर्थ – अनेक वृक्षों के समूहवाले , बादलों के समूह जैसे, १०० योजन के तीन वनखंडों के द्वारा सुदर्शना (जंबूवृक्ष) घिरा हुआ है। (२९२)

जंबूओ पन्नासं, दिसिविदिसि गंतु पढमवणसंडे।
चउरो दिसासु भवणा, विदिसासु य होंति पासाया ॥ २९३ ॥

अर्थ – जंबूवृक्ष से प्रथम वनखंड में दिशा में और विदिशा में ५० योजन जाने पर दिशा में ४ भवन और विदिशा में ४ प्रासाद है। (२९३)

कोसपमाणा भवणा, चउवाविपरिग्गया य पासाया।
कोसद्धवित्थडा कोस-मूसियाणाढियसुरस्स ॥ २९४ ॥

अर्थ – अनादृतदेव के १ गाउ प्रमाणवाले, १/२ गाउ चौड़े, १ गाउ ऊँचे भवन और ४ वावडियों से युक्त प्रासाद हैं। (२९४)

पंचेव धणुसयाइं, उव्वेहेणं हवंति वावीओ।
कोसद्धवित्थडाओ, कोसायामाओ सव्वाओ ॥ २९५ ॥

अर्थ – सभी वावडियाँ गहराई में ५००धनुष्य, १/२ गाउ चौड़ी और १ गाउ लम्बी है। (२९५)

उत्तरपुरत्थिमाए, वावीनामा पयक्खिणा इणमो।
पउमा पउमाभ कुमुया, कुमुयाभा पढमपासाए ॥ २९६ ॥

अर्थ – ईशान कोण में प्रथम प्रासाद की वावडियों की प्रदक्षिणा के क्रम से नाम इस प्रकार हैं – पद्मा, पद्माभा, कुमुदा और कुमुदाभा। (२९६)

उप्पलभोमा निलणु-प्पलुज्जला उप्पला य बीयम्मि।
भिंगा भिंगनिभंजण, कज्जलपभ तइयए भणिया ॥ २९७ ॥

अर्थ – दूसरे (अग्नि कोण के) प्रासाद की वावडियों के नाम उत्पल, भौमा, नलिना, उत्पलोज्ज्वला और उत्पला। तीसरे (नैऋत्य कोण) के प्रासाद की वावडियों के नाम भृंगा, भृंगनिभा, अंजना और कज्जलप्रभा कहा गया है। (२९७)

सिरिकंता सिरिमहिया, सिरिचंदा पच्छिमम्मि सिरिनिलया।
पासायाण चउण्हं, भवणाणं अंतरे कूडा ॥ २९८ ॥

अर्थ – अन्तिम (वायव्य कोण के) प्रासाद की वावडियों के नाम श्रीकांता, श्रीमहिता, श्रीचंदा और श्रीनिलया है। चार प्रासादों और भवनों के अन्तर में कूट हैं। (२९८)

अट्ठुसहकूडसरिसा, सव्वे जंबूनयामया भणिया।
तेसुवरिं जिणभवणा, कोसपमाणा परमरम्मा ॥ २९९ ॥

अर्थ – आठ कूट वृषभकूट जैसे हैं। वे सभी जंबूनदमय कहे गए हैं। उसके ऊपर १ गाउ प्रमाणवाले परमरम्य जिनभवन हैं। (२९९)

देवकुरु पच्छिमद्धे, गरुडावासस्स सामलिदुमस्स।
एसेव कमो नवरं, पेढं कूडा य रययमया ॥ ३०० ॥

अर्थ – देवकुरु के पश्चिमार्ध में गरुड़वेगदेव के आवासरूप शाल्मलीवृक्ष का यही क्रम है, परन्तु पीठ और कूट रजतमय हैं। (३००)

दोसु वि कुरासु मणुआ, तिपल्लपरमाउणो तिकोसुच्चा।
पिट्ठकरंडसयाइं, दो छप्पण्णाइं मणुयाणं ॥ ३०१ ॥
सुसमसुसमाणुभावं, अणुहवमाणाणवच्चगोवणया।
अउणापण्णदिणाइं, अट्ठमभत्तस्स आहारो ॥ ३०२ ॥

अर्थ – दोनों कुरु में मनुष्य ३ पल्योपम के उत्कृष्ट आयुष्यवाले, ३ गाउ ऊँचे हैं। उन मनुष्यों के २५६ पृष्ठकरंडक पसली हैं। वे सुषम-सुषम (पहले आरे) के प्रभाव का अनुभव करते हैं। वे ४९ दिन सन्तानों का पालन करते हैं और आहार अट्ठमभक्त (३ दिनों के अन्तर में) करते हैं। (३०१-३०२)

लोगस्स नाभिभूओ, नवनवइसहस्स जोयणुव्विद्धो ।
मेरुगिरी रयणमओ, अवगाढो जोयणसहस्सं ॥ ३०३ ॥

अर्थ – लोक की नाभि के समान, ९९,००० योजन ऊँचा और १,००० योजन गहरा रजतमय मेरुपर्वत है। (३०३)

दस एक्कारस भागा, नउया दस चेव जोयणसहस्सा ।
मूले विक्खंभो से, धरणियले दससहस्साइं ॥ ३०४ ॥

अर्थ – उसके मूल में १०,०९० १०/११ योजन और पृथ्वीतल में १०,००० योजन चौड़ाई है। (३०४)

जोयणसहस्समुवरिं, मूले इगतीस जोयणसहस्सा ।
नवसय दसहिय तिन्नि य, एक्कारसभाग परिही से ॥ ३०५ ॥

अर्थ – उसके ऊपर की चौड़ाई १,००० योजन है, मूल में परिधि ३१,९१० ३/११ योजन है। (३०५)

धरणियले इगतीसं, तेवीसा छस्सया य परिही से ।
उवरिं तिन्नि सहस्सा, बावट्ठं जोयणसयं च ॥ ३०६ ॥

अर्थ – पृथ्वीतल पर उसकी परिधि ३१,६२३ योजन है और ऊपर परिधि ३,१६२ योजन है। (३०६)

जत्थिच्छसि विक्खंभं, मंदरसिहराहि उवइत्ताणं ।
एक्कारसहि विभत्तं, सहस्ससहियं च विक्खंभं ॥ ३०७ ॥

अर्थ – मेरुपर्वत के शिखर पर से उतरकर जहाँ चौड़ाई (जानना) चाहते हो, वह ११ से विभाजित और १,००० से युक्त वहाँ की चौड़ाई है । (३०७)

एमेव उप्पइत्ता, जं लद्धं सोहियाहि मूलिल्ला ।
वित्थारा जं सेसं, तो वित्थारो तहिं तस्स ॥ ३०८ ॥

अर्थ – इसी प्रकार ऊपर चढ़कर (जहाँ चौड़ाई जानना चाहते हैं, उसे ११ से विभाजित करें।) जो मिले उसे मूल विस्तार मे से बाद करें। जो शेष बचे वह उसका विस्तार है। (३०८)

उवरिमहिट्ठिल्लाणं, वित्थाराणं विसेसमद्धं च ।
उस्सेहरासिभइयं, वुड्ढी हाणी य एगत्तो ॥ ३०९ ॥

अर्थ – ऊपर के और नीचे के विस्तार के अन्तर का जो आधा है, वह ऊँचाई की राशि से विभाजित एक तरफ की वृद्धि-हानि है। (३०९)

सा चेव दोहिं गुणिया, उभओ पासम्मि होइ परिवुड्ढी ।
हाणी य गिरिस्स भवे, परिहायंतेसु पासेसु ॥ ३१० ॥

अर्थ – दो से गुणित (एक तरफ की वृद्धि-हानि) वही पर्वत के दोनों तरफ से घटाते हुए दोनों तरफ की वृद्धि और हानि है। (३१०)

जो जत्थ उ वित्थारो, गिरिस्स तं सोहियाहि मूलिल्ला ।
वित्थारा जं सेसं, सो छेयगुणो उ उस्सेहो ॥ ३११ ॥

अर्थ – पर्वत का जहाँ जो विस्तार है, उसे मूल विस्तार में से बाद करें। जो शेष बचे, वह छेद राशि से गुणित ऊँचाई है। (३११)

मेरुस्स तिन्नि कंडा, पुढवोवलवइरसक्करा पढमे ।
रयए य जायरूवे, अंके फलिहे य बियम्मि ॥ ३१२ ॥
एगागारं तइयं, तं पुण जंबूणयामयं होइ ।
जोयणसहस्स पढमं, बाहल्लेणं च बीयं तु ॥ ३१३ ॥
तेवट्ठिसहस्साइं, तइयं छत्तीस जोयणसहस्सा ।
मेरुस्स उवरि चूला, उव्विद्धा जोयणदुवीसं ॥ ३१४ ॥

अर्थ – मेरुपर्वत के ३ कांड हैं। पहले में पृथ्वी, पत्थर, वज्र और

कंकड़ हैं। दूसरे में रजत, सुवर्ण, अंकरत्न और स्फटिक है। तीसरा एकाकार है। वह जांबूनदमय है। मोटाई से पहला १,००० योजन, दूसरा ६३,००० योजन और तीसरा ३६,००० योजन है। मेरुपर्वत के ऊपर दो बीस (४०) योजन ऊँची चूला है। (३१२-३१३-३१४)

एवं सव्वग्गेणं, समूसिओ मेरु लक्खमइरित्तं।
गोपुच्छसंठियम्मि, ठियाइ चत्तारि य वणाइं॥ ३१५॥

अर्थ - इस प्रकार सम्पूर्ण रूप से मेरुपर्वत साधिक लाख योजन ऊँचा है। गोपुच्छाकार में अवस्थित उसमें चार वन हैं। (३१५)

भूमीइ भद्दसालं, मेहलजुयलम्मि दोन्नि रम्माइं।
नंदण-सोमणसाइं, पंडगपरिमंडियं सिहरं॥ ३१६॥

अर्थ - भूमि में भद्रशाल वन, दो मेखलाओं में सुन्दर दो नंदन और सौमनस वन तथा पंडक वन से सुशोभित शिखर हैं। (३१६)

बावीससहस्साइं, पुव्वावर मेरु भद्दसालवणं।
अड्ढाइज्जसया पुण, दाहिणपासम्मि उत्तरओ॥ ३१७॥

अर्थ - मेरु पर्वत के पूर्व-पश्चिम में भद्रशाल वन २२,००० योजन है और दक्षिण की तरफ तथा उत्तर की तरफ २५०योजन है। (३१७)

पुव्वेण मंदराओ, जो आयामो उ भद्दसालवणे।
अट्ठासीइविभत्तो, सो वित्थारो हु दाहिणओ॥ ३१८॥

अर्थ - मेरुपर्वत के पूर्व में भद्रशाल वन में जो लम्बाई है, वह ८८ से विभाजित दक्षिण तरफ का विस्तार है। (३१८)

दाहिणपासे गिरिणो, जो वित्थारो उ भद्दसालवणे।
अट्ठासीइगुणो सो, आयामो होइ पुव्विल्ले॥ ३१९॥

अर्थ - पर्वत के दक्षिण की तरफ भद्रशाल वन में जो विस्तार है, वह ८८ से गुणित पूर्व में लम्बाई है। (३१९)

चउपन्नसहस्साइं, मेरुवणं अट्ठभागपविभत्ते।
सीयासीओयाहिं, मंदर-वक्खारसेलेहिं॥ ३२०॥

अर्थ - ५४,००० योजन का मेरुपर्वत का वन सीता-सीतोदा के द्वारा और मेरुपर्वत-वक्षस्कार पर्वतों के द्वारा ८ भागों में विभाजित है। (३२०)

मेरुओ पन्नासं, दिसिविदिसि गंतु भद्दसालवणे।
चउरो सिद्धायणा, दिसासु विदिसासु पासाया॥ ३२१॥

अर्थ - भद्रशाल वन में मेरुपर्वत की दिशा में और विदिशा में ५० योजन जाकर दिशा में ४ सिद्धायतन और विदिशा में ४ प्रासाद हैं। (३२१)

छत्तीसुच्चा पणुवीस-वित्थडा दुगुणमाययाऽऽययणे।
चउवावीपरिक्खित्ता, पासाया पंचसयमुच्चा॥ ३२२॥

अर्थ - सिद्धायतन ३६ योजन ऊँचा, २५ योजन चौड़ा और उससे दोगुना लम्बा है। प्रासाद ४ वावड़ियों से घिरा हुआ ५०० योजन ऊँचा है। (३२२)

दीहाओ पन्नासं, पणुवीसं जोयणाणि वित्थिन्ना।
दस जोयणावगाढा, जंबूवावीसरिसनामा॥ ३२३॥

अर्थ - वावड़ियाँ ५० योजन लम्बी, २५ योजन चौड़ी, १० योजन गहरी और जंबूवृक्ष की वावड़ियों के समान नामवाली हैं। (३२३)

इसाणरसुत्तरिया, पासाया दाहिणा य सक्कस्स।
अट्ठदिसि हत्थिकूडा, सीआसीओयउभयकूले॥ ३२४॥

अर्थ - उत्तर के प्रासाद ईशानेन्द्र के और दक्षिण के शक्र के हैं। सीता-सीतोदा के दोनों किनारे ८ दिशाओं में दिग्हस्तिकूट हैं। (३२४)

दो दो चउद्दिसिं मंदरस्स, हिमवंत कूडसमकप्पा।
पउमोत्तरोऽत्थ पढमो, सीयापुव्वुत्तरे कूले॥ ३२५॥
तत्तो य नीलवंतो, सुहत्थि तह अंजनगिरी कुमुए।
तह य पलास वडिंसे, अट्ठमए रोयणगिरी य॥ ३२६॥

अर्थ – मेरुपर्वत की चारों दिशाओं में हिमवंतकूट के समान दो-दो कूट हैं। इसमें सीता के इशान कोण के किनारे पहला पद्मोत्तर है, उसके बाद नीलवन्त, सुहस्ति और अंजनगिरि, कुमुद तथा पलाश, अवतंसक और आठवाँ रोचनगिरि। (३२५-३२६)

पंचेव जोयणसए, उड्ढं गंतूण पंचसयपिहुलं।
नंदणवणं सुमेरुं, परिक्खिवत्ता ट्ठियं रम्मं ॥ ३२७ ॥

अर्थ – ५०० योजन ऊपर जाकर, ५०० योजन चौड़ा, मेरुपर्वत को आच्छादित करते हुए सुन्दर नन्दनवन है। (३२७)

बाहिं गिरिविक्खंभो, तहियं नवनवइजोयणसयाइं।
चउपन्न जोयणाणि य, एक्कारस भाग छच्चेव ॥ ३२८ ॥

अर्थ – वहाँ पर्वत के बाहर की चौड़ाई ९,९५४ ६/११ योजन है। (३२८)

अउणानउइ सयाइं, चउपन्नहियाइं नंदणवणम्मि।
अंतो गिरिविक्खंभो, एक्कारसभाग छच्चेव ॥ ३२९ ॥

अर्थ – नन्दनवन में पर्वत के अन्दर की चौड़ाई ८,९५४ ६/११ योजन है। (३२९)

इगतीससहस्साइं, चत्तारि सयाइं अउणसीयाइं।
बाहिं नगस्स परिही, सविसेसा नंदणवणम्मि ॥ ३३० ॥

अर्थ – नन्दवन के पर्वत की बाह्य परिधि साधिक ३१, ४७९ योजन है। (३३०)

अट्ठावीस सहस्सा, तिन्नि सया जोयणाण सोलहिया।
अंतोगिरिस्स परिओ, एक्कारस भाग अट्ठेव ॥ ३३१ ॥

अर्थ – पर्वत के अन्दर की परिधि २८,३१६ ८/११ योजन है। (३३१)

सिद्धाययणा चउरो, पासाया वाविओ तहा कूडा।
जह चेव भद्दसाले, नवरं नामाणि सिं इणमो ॥ ३३२ ॥

अर्थ – ४ सिद्धायतन, प्रासाद, वावड़ियाँ और कूट जैसे भद्रशाल वन में हैं, वैसे यहाँ भी हैं। परन्तु उनके नाम इस प्रकार हैं। (३३२)

नंदुत्तरनंदसुनंद-वद्धमाणनंदिसेणामोहा य।
गोत्थुह सुदंसणा वि य, भद्द विसाला य कुमुदा य ॥ ३३३ ॥
पुंडरिगिणि विजया, वेजयंति अपराजिया जयंती य।
कूडा नंदण मंदर, निसहे हेमवय रयए य ॥ ३३४ ॥
रुयगे सागरचित्ते, वइरो चिय अंतरेसु अट्ठसु वि।
कूडा बलकूडो पुण, मंदरपुव्वुत्तरदिसाए ॥ ३३५ ॥

अर्थ – नंदोत्तरा, नंदा, सुनंदा, वर्धमाना, नंदिषेणा, अमोघा, गोस्तूप, सुदर्शना, भद्रा, विशाला, कुमुदा, पुंडरीकिनी, विजया, वैजयंती, अपराजिता और जयंती – (ये वावड़ियों के नाम हैं।) नंदन, मेरु, निषध, हिमवंत, रजत, रुचक, सागरचित्र, वज्र कूट आठों आन्तरा में है। बलकूट मेरुपर्वत से ईशान कोण में है। (३३३-३३४-३३५)

एएसु उड्ढलोए, वत्थव्वाओ दिसाकुमारीओ।
अट्ठेव परिवसंति, अट्ठसु कूडेसु इणमाउ ॥ ३३६ ॥

अर्थ – इन ८ कूटों के ऊपर उर्ध्वलोक में रहनेवाली ये ८ दिशाकुमारियाँ निवास करती हैं। (३३६)

मेघंकर मेघवइ, सुमेह तह मेहमालिणि सुवच्छा।
तत्तो य वच्छमित्ता, बलाहगा वारिसेणा य ॥ ३३७ ॥

अर्थ – मेघंकरा, मेधवती, सुमेघा तथा मेघमालिनी, सुवत्सा, फिर वत्समित्रा, बलाहका और वारिषेणा। (३३७)

बासट्ठि सहस्साइं, पंचेव सयाइं नंदणवणाओ।
उड्ढं गंतूण वणं, सोमनसं नंदणसरिच्छं ॥ ३३८ ॥

अर्थ - नंदनवन से ६२,५०० योजन ऊपर जाकर नंदनवन जैसा सौमनस वन है। ३३८)

बावत्तराइं दोन्नि य, सयाइं चउरो य जोयणसहस्सा।

बाहिं गिरिविक्खंभो, एक्कारस भाग अट्ठेव ॥ ३३९ ॥

अर्थ - (वहाँ) पर्वत के बाहर की चौड़ाई ४,२७२ ८/११ योजन है। (३३९)

बावत्तराइं दोन्नि य, सयाइं तिन्नि य जोयणसहस्सा।

अंतो गिरिविक्खंभो, एक्कारस भाग अट्ठेव ॥ ३४० ॥

अर्थ - पर्वत के अन्दर की चौड़ाई ३, २७२ ८/११ योजन है। (३४०)

पंच सए एक्कारे, तेरसय हवंति जोयणसहस्सा।

छच्चेकारस भागा, बाहिं गिरिपरिरओ होइ ॥ ३४१ ॥

अर्थ - पर्वत के बाहर की परिधि १३,५११ ६/११ योजन है। (३४१)

जोयणसहस्स दसगं, तिन्नेव सयाणि अउणपन्नाणि।

अंतोगिरी परिरओ, एक्कारस भाग तिन्नेव ॥ ३४२ ॥

अर्थ - अन्दर की गिरिपरिधि १०,३४९ ३/११ योजन है। (३४२)

नंदणवणसरिसगमं, सोमणसं नवरि नत्थि कुडत्थ।

पुक्खरिणीओ सुमणा, सोमणसा सोमणंसा य ॥ ३४३ ॥

वावी मणोरमाऽवि य, उत्तरकुरु तह य होइ देवकुरु।

तत्तो य वारिसेणा, सरस्सइ तह विसाला य ॥ ३४४ ॥

वावी य माघभद्दा-ऽभयसेणा रोहिणी य बोधव्वा।

भद्दुत्तरा य भद्दा, सुभद्द भद्दावइ चेव ॥ ३४५ ॥

अर्थ - सौमसवन नंदनवन जैसा है, परन्तु कूट नहीं है। वावड़ियाँ सुमना, सौमनसा, सौमनांशा, मनोरमा वावड़ी, उत्तरकुरु तथा देवकुरु, फिर वारिषेणा, सरस्वती और विशाला, माघभद्रा वावड़ी, अभयसेना और रोहिणी जानें, भद्रोतरा, भद्रा, सुभद्रा और भद्रावती है। (३४३-३४४-३४५)

सोमणसाओ तीसं, छच्चसहस्से विलग्गिऊण गिरिं।

विमलजलकुंडगहणं, हवइ वणं पंडगं सिहरे ॥ ३४६ ॥

अर्थ - सौमनस वन से ३६,००० योजन पर्वत के ऊपर जाकर शिखर पर विमल जलवाले कुंडों से युक्त पंडकवन है। (३४६)

चत्तारि जोयणसया, चउणउया चक्कवालओ रुंदं।

इगतीस जोयणसया, बासट्ठी परिरओ तस्स ॥ ३४७ ॥

अर्थ - (वह) ४९४ योजन चक्राकार में चौड़ा है। उसकी परिधि ३,१६२ योजन है। (३४७)

दुगुणं जोयणवीसं, समूसिया विमलवेरुलियरूवा।

मेरुगिरिस्सुवरितले, जिणभवणविभूसिया चूला ॥ ३४८ ॥

अर्थ - मेरुपर्वत के ऊपर के तल पर दोगुना २० योजन (४० योजन) ऊँची, निर्मल वैडूर्यमय, जिनभवन से विभूषित चूला है। (३४८)

मूले मज्झे उवरिं, बारस अट्ठ चउरो य विक्खंभो।

सत्तत्तीसा पणवीस, बारसा अहिय परिही से ॥ ३४९ ॥

अर्थ - उसके मूल में, मध्य में और ऊपर १२, ८ और ४ योजन चौड़ाई है तथा परिधि साधिक ३७, साधिक २५ और साधिक १२ योजन है। (३४९)

जत्थिच्छसि विक्खंभं, चूलियसिहराहि उवइत्ताण।

तं पंचहि पविभत्तं, चउहिं जुयं जाण विक्खंभं ॥ ३५० ॥

अर्थ - चूलिका के शिखर से उतरकर जहाँ चौड़ाई जानना चाहते हैं, वह ५ से विभाजित और ४ से युक्त चौड़ाई जानें। (३५०)

जत्थिच्छसि विक्खंभं, चूलियमूलाउ उप्पइत्ताणं।
तं पणविभत्तमूलिल्ला, सोहियं जाण विक्खंभं ॥ ३५१ ॥

अर्थ - चूलिका के मूल से ऊपर जाकर जहाँ चौड़ाई जानना चाहते हैं, वह ५ से विभाजित मूल की चौड़ाई में से बाद की हुई चौड़ाई जानें। (३५१)

सिद्धाययणा वावी, पासाया चूलियाइ अट्ठदिसिं।
जह सोमणसे नवरं, इमाणि पोक्खरिणिनामाइं ॥ ३५२ ॥

अर्थ - चूलिका की ८ दिशाओं में सिद्धायतन, वावड़ियाँ, प्रासाद जैसे सौमनस वन में हैं वैसे ही हैं, परन्तु वावड़ियों के नाम इस प्रकार हैं। (३५२)

पुंडा पुंडप्पभवा, सुरत्त तह रत्तगावइ चेव।
खीररसा इक्खुरसा, अमयरसा वारुणी चेव ॥ ३५३ ॥
संखुत्तरा य संखा, संखावत्ता बलाहगा तह य।
पुप्फोत्तर पुप्फवइ, सुपुप्फ तह पुप्फमालिणिया ॥ ३५४ ॥

अर्थ - पुंड्रा, पुंडप्रभवा, सुरक्ता, रक्तावती, क्षीररसा, इक्षुरसा, अमृतरसा और वारुणी, शंखोत्तरा, शंखा, शंखावर्ता, बलाहका तथा पुष्पोत्तरा, पुष्पवती, सुपुष्पा तथा पुष्पमालिनिका। (३५३-३५४)

पंडगवणम्मि चउरो, सिलासु चउसु वि दिसासु चूलाए।
चउजोयणुसियाओ, सव्वज्जुणकंचणमयाओ ॥ ३५५ ॥
पंचसयायामाओ, मज्झे दीहत्तणद्धरुंदाओ।
चंदद्धसंठियाओ, कुसुओयरहारगोराओ ॥ ३५६ ॥

अर्थ - पंडकवन में चूला की चारों दिशाओं में ४ योजन ऊँची, सर्वअर्जुन सुवर्णमय, ५०० योजन लम्बी, मध्य में लम्बाई से आधी चौड़ी,

अर्धचन्द्र के आकारवाली, कुमुद के मध्यभाग और हार जैसी सफेद ४ शिलाएँ हैं। (३५५-३५६)

एगत्थ पंडुकंबल-सिल त्ति अइपंडुकंबला बीया।
रत्तातिरत्तकंबल-सिलाण जुयलं च रम्मयलं ॥ ३५७ ॥

अर्थ - इसमें एक पांडुकंबला शिला है, दूसरी अतिपांडुकंबला है, रक्तकंबला और अतिरक्तकंबला शिलाओं का रम्य तलवाला युगल है। (३५७)

पुव्वावरासु दो दो, सिलासु सिंहासणाइ रम्माइं।
जम्माइ उत्तराए, सिलाइ इक्किक्कयं भणियं ॥ ३५८ ॥

अर्थ - पूर्व और पश्चिम की शिलाओं पर सुन्दर दो-दो सिंहासन और दक्षिण तथा उत्तर की शिलाओं पर १-१ सिंहासन कहे गए हैं। (३५८)

सीयासीओयाणं, उभओकुलुब्भवा जिणवरिंदा।
पंडुसिलरत्तकंबल-सिलासु सिंहासणवरेसु ॥ ३५९ ॥
अइपंडुकंबलाए, अरित्ताए य बालभावम्मि।
भरहेरवयजिणिंदा, अभिसिच्चंते सुरिंदेहि ॥ ३६० ॥

अर्थ - सीता-सीतोदा के दोनों किनारे पर उत्पन्न होनेवाले जिनेश्वर पांडुकंबलाशिला और रक्तकंबलाशिला के ऊपर स्थित सिंहासनों पर और भरत-ऐरवत के जिनेश्वर (क्रमशः) अतिपांडुकंबलाशिला और अतिरक्तकंबला शिला पर स्थित सिंहासनों पर बालभाव में देवेन्द्रों के द्वारा अभिषेक कराए जाते हैं। (३५९-३६०)

पुव्वविदेहं मेरुस्स, पुव्वओ सीयानइं परिच्छिन्नं।
अवरेणऽवरविदेहं, सीओयाए परिच्छिन्नं ॥ ३६१ ॥

अर्थ - मेरु से पूर्व में पूर्वविदेह सीतानदी से दो भागों में विभाजित है। मेरु से पश्चिम में पश्चिमविदेह सीतोदा नदी से दो भागों में विभाजित है। (३६१)

सीयासीओयाणं, वासहराणं च मज्झयारम्मि ।
विजया वक्खारगिरी, अंतरनइ वणमुहा चउरो ॥ ३६२ ॥

अर्थ - सीता-सीतोदा और वर्षधर पर्वतों के मध्य में विजय, वक्षस्कार पर्वत, अंतरनदियाँ और ४ वनमुख हैं। (३६२)

वइदेहा विक्खंभा, नइमाणं पंच जोयणसयाइं ।
सोहित्ता तस्सद्धं, आयामो तेसिमो होइ ॥ ३६३ ॥

अर्थ - विदेह की चौड़ाई में से नदी का प्रमाण ५०० योजन बाद करके उसका आधा उनकी (विजय आदि की) लम्बाई है। वह इस प्रकार है। (३६३)

पंच सए बाणउए, सोलससहस्स दो कलाओ य ।
विजयावक्खाराणं, अंतरनइवणमुहाणं च ॥ ३६४ ॥

अर्थ - विजय, वक्षस्कार पर्वतों, अंतरनदियों और वनमुखों की लम्बाई १६,५९२ योजन २ कला है। (३६४)

चउणउए पंच सए, चउसट्ठिसहस्स दीववित्थारो ।
सोहिय सोलसभइए, विजयाणं होइ विक्खंभो ॥ ३६५ ॥

अर्थ - द्वीप के विस्तार में से ६४,५९४ योजन बाद करके १६ से विभाजित करने पर विजय की चौड़ाई आती है। (३६५)

छन्नवइ सहस्साइं, जंबूद्दीवा विसोहइत्ताणं ।
सेसे अट्ठहिं भइए, लद्धो वक्खारविक्खंभो ॥ ३६६ ॥

अर्थ - जंबूद्वीप (के विस्तार) में से ९६,००० योजन बाद करके शेष को ८ से विभाजित करने पर वक्षस्कार पर्वतों की चौड़ाई मिली। (३६६)

नवनउइ सहस्साइं, अड्ढाइज्जे सए य सोहित्ता ।
सेसे छक्कविहत्तं, लद्धे सलिलाण विक्खंभो ॥ ३६७ ॥

अर्थ - (जंबूद्वीप की चौड़ाई में से) ९९,२५० योजन बाद करके शेष को ६ से विभाजित करने पर नदियों की चौड़ाई मिली। (३६७)

चउणवइ सहस्साइं, छप्पन्न सयं च सोहु दीवाओ ।
दोहिं विभत्ते सेसं, सीयासीओयवणमाणं ॥ ३६८ ॥

अर्थ - जंबूद्वीप (चौड़ाई) में से ९४,१५६ योजन बाद करके शेष को दो से विभाजित करने पर सीता-सीतोदा के वनों का प्रमाण है। (३६८)

छायालीसं सहस्से, जंबूद्दीवा विसोहइत्ताणं ।
सेसं एगविहत्तं, मंदरवणमाणयं जाण ॥ ३६९ ॥

अर्थ - जंबूद्वीप (की चौड़ाई) में से ४६,००० योजन बाद करके शेष १ से विभाजित मेरुपर्वत के वन का प्रमाण जानें। (३६९)

विजयाणं विक्खंभो, बावीससयाइं तेरसहियाइं ।
पंच सए वक्खारा, पणवीससयं च सलिलाओ ॥ ३७० ॥

अर्थ - विजयों की चौड़ाई २,२१३ योजन है। वक्षस्कार पर्वतों (की चौड़ाई) ५०० योजन और नदियों (की चौड़ाई) १२५ योजन है। (३७०)

जत्तो वासहरगिरी, तत्तो जोयणसयं समोगाढा ।
चत्तारि जोयणराए, उव्विद्धा सव्वरयणमया ॥ ३७१ ॥
जत्तो पुण सलिलाओ, तत्तो पंचसयगाउओगाढा ।
पंचेव जोयणसए, उव्विद्धा आसखंधनिभा ॥ ३७२ ॥

अर्थ - (वक्षस्कारपर्वत) जिस तरफ वर्षधरपर्वत हैं, उस तरफ १०० योजन अवगाढ और ४००योजन ऊँचा है, जिस तरफ नदी है उस तरफ ५००गाउ अवगाढ और ५०० योजन ऊँचा है। वह सर्वरत्नमय और घोड़े के स्कंध जैसा है। (३७१-३७२)

चित्ते य बंभकूडे, नलिणीकूडे य एगसेले य ।
तिउडे वेसमणे वा, अंजणे मायंजणे चेव ॥ ३७३ ॥
अंकावइ पम्हावइ, आसीविस तह सुहावहे चंदे ।
सूरे नागे देवे, सोलस वक्खारगिरिनामा ॥ ३७४ ॥

अर्थ – चित्र, ब्रह्मकूट, नलिनीकूट, एकशैल, त्रिकूट, वैश्रमण, अंजन, मातंजन, अंकापाती, पक्ष्मापाती, आशीविष, सुखावह, चन्द्र, सूर, नाग और देव – ये वक्षस्कार पर्वत के १६ नाम हैं। (३७३-३७४)

गाहावइ दहवइ, वेगवइ तत्त मत्त उम्मत्ता।
खीरोय सीयसोया, तह अंतोवाहिणी चेव ॥ ३७५ ॥
उम्मीमालिणि गंभीर-मालिणी फेणमालिणी चेव।
एया कुंडप्पवहा, उव्वेहो जोयणा दसओ ॥ ३७६ ॥

अर्थ – गाहावती, द्रहावती, वेगवती, तप्ता, मत्ता, उन्मत्ता, क्षीरोदा, शीतस्रोता, अंतर्वाहिनी, उर्मिमालिनी, गंभीरमालिनी और फेनमालिनी ये कुंड में से निकलनेवाली नदियाँ हैं। उसकी गहराई १० योजन हैं। (३७५-३७६)

विजयाणं बत्तीसं, आसन्नं मालवंतसेलस्स।
काऊण पयाहीणा, इमाणि नामाणि अणुकमसो ॥ ३७७ ॥

अर्थ – ३२ विजयों के माल्यवंत पर्वत के नजदीक से प्रदक्षिणा करके अनुक्रम से ये नाम हैं। (३७७)

कच्छ सुकच्छ महाकच्छए य, कच्छावइ चउत्थोऽत्थ।
आवत्त मंगलावत्त, पुक्खले पुक्खलावइ य ॥ ३७८ ॥

अर्थ – कच्छ, सुकच्छ, महाकच्छ, यहाँ चौथी कच्छावती, आवर्त्त, मंगलावर्त्त, पुष्कल और पुष्कलावती। (३७८)

वच्छ सुवच्छ महावच्छए य, वच्छावइ चउत्थोऽत्थ।
रम्मे य रम्मएऽवि य, रमणिज्जे मंगलावइ य ॥ ३७९ ॥

अर्थ – वत्स, सुवत्स, महावत्स, यहाँ चौथी वत्सावती, रम्य और रम्यक भी, रमणीय और मंगलावती। (३७९)

पम्ह सुपम्ह महापम्हए य, प्माहवइ चउत्थोऽत्थ।
संखे नलिणे कुमुए, नलिणावइ अट्टमे भणिए ॥ ३८० ॥

अर्थ – पक्ष्म, सुपक्ष्मस, महापक्ष्म, यहाँ चौथी पक्ष्मावती, शंख, नलिन, कुमुद और आठवीं नलिनावती कही गई है। (३८०)

वप्प सुवप्प महावप्पए य, वप्पावइ चउत्थोऽत्थ।
वग्गु सुवग्गू गंधिल, गंधिलावइ अट्ठमे भणिए ॥ ३८१ ॥

अर्थ – वप्र, सुवप्र, महावप्र, यहाँ चौथी वप्रावती, वल्गु, सुवल्गु, गंधिल और आठवीं गंधिलावती कही गई है। (३८१)

(नवजोयणपिहुलाओ, बारसदीहा पवरनयरीओ।
अद्धाविजयाण मज्झे, इमेहिं नामेहिं नायव्वा ॥)
खेमा खेमपुरी वि य, अरिट्ठ रिट्ठावइ य नायव्वा।
खग्गी मंजुसा वि य, उसहिपुरी पुंडरीगिणि य ॥ ३८२ ॥
सुसीमा कुंडला चेव, अवरावइ तहा य पहंकरा।
अंकावइ पम्हावइ, सुहा रयणसंचया चेव ॥ ३८३ ॥
आसपुरी सीहपुरी, महापुरी चेव होइ विजयपुरी।
अवराजिया य अवरा, असोगा तह वीयसोगा य ॥ ३८४ ॥
विजया य वेजयंती, जयंति अपराजिया य बोधव्वा।
चक्कपुरी खग्गपुरी, वइ अवज्झा य अउज्झा य ॥ ३८५ ॥

अर्थ – (अर्धविजयों के मध्य में ९ योजन चौड़ी, १२ योजन लम्बी श्रेष्ठ नगरियाँ इन नामों से जानें) क्षेमा, क्षेमपुरी, अरिष्ट, रिष्टावती जानें, खड्गी, मंजूषा, औषधिपुरी, पुंडरीकिणी, सुसीमा, कुंडला, अपरावती, प्रभंकरा, अंकावती, पक्ष्मावती, शुभा, रत्नसंचया, अश्वपुरी, सिंहपुरी, महापुरी, विजयपुरी, अपराजिता, अपरा, अशोका तथा वितशोका, विजया, वैजयंती, जयंती और अपराजिता जानें, चक्रपुरी, खड्गपुरी, अवध्या, और अयोध्या। (३८२-३८३-३८४-३८५)

सीयाए उइन्नेसु, सीओयाए उ जम्मविजएसुं।
गंगा सिंधु नइओ, इयरेसु य रत्तरत्तवइ ॥ ३८६ ॥

अर्थ - सीता के उत्तर के विजयों में और सीतोदा के दक्षिण के विजयों में गंगा-सिन्धु नदियाँ हैं, अन्य विजयों में रक्ता-रक्तवती नदियाँ हैं । (३८६)

सीयासीओयाणं, उभओ कूलेसु वणमुहा चउरो ।
उत्तरदाहिणदीहा, पाइण पइण वित्थिन्ना ॥ ३८७ ॥

अर्थ - सीता-सीतोदा के दोनों किनारे उत्तर-दक्षिण लम्बे और पूर्व-पश्चिम चौड़े चार वनमुख हैं । (३८७)

अउणावीसइभागं, रुंदा वासहरपव्वयंतेणं ।
अउणत्तीस सया पुण, बावीसहिया नइजुत्तो ॥ ३८८ ॥

अर्थ - (वे) वर्षधर पर्वत की तरफ १/१९ योजन चौड़े हैं और नदी की तरफ २,९२२ योजन चौड़े हैं । (३८८)

पंच सए बाणउए, सोलस य हवंति जोयणसहस्सा ।
दो य कला अवराओ, आयामेणं मुणेयव्वा ॥ ३८९ ॥

अर्थ - (वह) लम्बाई से १६,५९२ योजन और अन्य २ कला जानें । (३८९)

जत्थिच्छसि विक्खंभं, सीयाए वणमुहस्स नाउं जे ।
अणत्तीससएहिं, बावीसहिएहिं तं गुणिए ॥ ३९० ॥
तं चेव पुणो रासिं, अउणावीसाइ संगुणेऊणं ।
सुन्निंदियदुगपंचय-इक्कगतिगभागहारो से ॥ ३९१ ॥
भइएण रासिणा तेण, एत्थ जं होइ भागलद्धं तु ।
सो सीयाए वणमुहे, तहिं तहिं होइ विक्खंभो ॥ ३९२ ॥

अर्थ - सीता के वनमुख की जहाँ चौड़ाई जानना चाहते हैं उसे २,९२२ से गुणा कर, उसी राशि को १९ से गुणा कर ३,१५,२५० उसका भागफल है । विभाजित उस राशि के द्वारा यहाँ जिस भाग में मिला, वह सीता के वनमुख में वहाँ-वहाँ चौड़ाई है । (३९०-३९१-३९२)

अविरयहियं जिणवरचक्कवट्टिबलदेववासुदेवेहिं ।
एयं महाविदेहं, बत्तीसाविजयपविभत्तं ॥ ३९३ ॥

अर्थ - यह महाविदेह क्षेत्र जिनेश्वर, चक्रवर्ती, बलदेव और वासुदेव से अविरहित है और ३२ विजयों में विभाजित है । (३९३)

मणुयाण पुव्वकोडी, आऊ पंचूसियाधणुसयाइं ।
दुसमसुसमाणुभावं, अणुहवंति नरा निययकालं ॥ ३९४ ॥

अर्थ - यहाँ मनुष्यों का आयुष्य १ (एक) पूर्वकरोडवर्ष है, मनुष्य ५०० धनुष्य ऊँचे हैं और हमेशा दुषमसुषमकाल के प्रभाव को अनुभव करते हैं । (३९४)

दो चंदा दो सूरा, नक्खत्ता खलु हवंति छप्पन्ना ।
छावत्तरं गहसयं, जंबूद्दीवे वियारी णं ॥ ३९५ ॥
एगं च सयसहस्सं, तित्तीसं खलु भवे सहस्सा य ।
नव य सया पन्नासा, तारागणकोडिकोडीणं ॥ ३९६ ॥

अर्थ - जंबूद्वीप में विचरण करनेवाले दो चन्द्र, दो सूर्य, ५६ नक्षत्र, १७६ ग्रह और १,३३,९५० कोटि-कोटि तारे हैं । (३९५-३९६)

जंबूद्दीवो नामं, खेत्तसमासस्स पढम अहिगारो ।
पढणे जाण समत्तो, ताण समत्ताइं दुक्खाइं ॥ ३९७ ॥

अर्थ - क्षेत्रसमास का जंबूद्वीप नामक पहला अधिकार पढना जिसका समाप्त हुआ, उसके दुःख समाप्त हो गए । (३९७)

गाहाणं तिन्नि सया, अट्ठाणउया य होंति नायव्वा ।
जंबूद्दीवसमासो, गाहग्गेणं विणिदिट्ठो ॥ ३९८ ॥

अर्थ - ३९८ गाथाएँ हैं, ऐसा जानें - (इस प्रकार) जंबूद्वीप का संक्षिप्त गाथा परिमाण कहा गया । (३९८)

प्रथम अधिकार समाप्त

द्वितीय अधिकार

लवणसमुद्र

दो लक्खा वित्थिन्नो, जंबूद्दीवं विट्ठिओ परिखिविउं ।
लवणे दारा वि य से, विजयाइं होंति चत्तारि ॥ ३९९ ॥ (१)

अर्थ – जंबूद्वीप को चारों तरफ से घेरे हुए २,००,००० योजन विस्तारवाला लवणसमुद्र है। उसके विजय आदि चार द्वार भी हैं। (३९९) (१)

पन्नरस सयसहस्सा, एगासीइ भवे सहस्साइं ।
ऊयालीसं च सयं, लवणजले परिरओ होइ ॥ ४०० ॥ (२)

अर्थ – लवणसमुद्र की परिधि १५,८१,१३९ योजन है। (४००) (२)

असीया दोन्नि सया, पणणउइ सहस्स तिन्नि लक्खाइं ।
कोसो एगं अंतरं, सागरस्स दाराण विन्नेयं ॥ ४०१ ॥ (३)

अर्थ – लवणसमुद्र के द्वारों का अन्तर ३,९५,२८० योजन और १ गाउ जानें। (४०१) (३)

पणनउइ सहस्साइं, ओगाहित्ता चउद्दिसिं लवणं ।
चउरोऽलिंजरसंठाण-संठिया हुंति पायाला ॥ ४०२ ॥ (४)

अर्थ – लवणसमुद्र की चारों दिशाओं में ९५,००० योजन में फैले हुए बड़े घड़े के आकार में स्थित चार पातालकलश हैं। (४०२) (४)

वलयमुहे केऊए, जुयए तह इसरे य बोधव्वे ।
सव्ववयरामयाणं, कूडा एएसि दससइया ॥ ४०३ ॥ (५)

अर्थ – (वह) वडवामुख, केयूप, यूप और ईश्वर जानें। (वह) सर्वरत्नमय है। उसकी दीवारें १,००० योजन की हैं। (४०३) (५)

जोयणसहस्सदसगं, मूले उवरिं च होंति वित्थिन्ना ।
मज्झे य सयसहस्सं, तत्तियमेत्तं च ओगाढा ॥ ४०४ ॥ (६)

अर्थ – (वह) मूल में और ऊपर १०,००० योजन विस्तारवाले हैं, मध्य में १,००,००० योजन (विस्तृत हैं) और उतने ही गहरे हैं। (४०४) (६)

अब्भिंतरबज्झाणं तु, परिरयाणं समासमद्धं जं ।
तं मज्झम्मि परिरओ, दीवसमुद्दाण सव्वेसिं ॥ ४०५ ॥ (७)

अर्थ – सभी द्वीप-समुद्रों के अभ्यंतर और बाह्य परिधि को एकत्र कर उसका जो आधा है, वह मध्य में परिधि है। (४०५) (७)

अडयालीस सहस्सा, तेसीया छस्सया य नव लक्खा ।
लवणस्स मज्झपरिही, पायालमुहा दस सहस्सा ॥४०६॥ (८)

अर्थ – लवणसमुद्र की मध्यपरिधि ९,४८,६८३ योजन है। पातालकलश का मुख १०,००० योजन (लम्ब-चौड़ा) है। (४०६) (८)

मज्झिल्लपरिरयाओ, पायालमुहेहि सुद्धसेसं जं ।
चउहि विहत्ते सेसं, जं लद्धं अंतरमुहाणं ॥ ४०७ ॥ (९)

अर्थ – मध्यम परिधि में से पातालकलश का मुख बाद करके जो शेष रहे, उसे चार से भाग देने पर जो शेष मिले, वह मुखों का अन्तर है। (४०७) (९)

सत्तावीस सहस्सा दो, लक्खा सत्तरं सयं चेगं ।
तिन्नेव चउब्भागा, पायालमुहंतरं होइ ॥ ४०८ ॥ (१०)

अर्थ – पातालकलशों के मुखों का अन्तर २,२७,११७ ३/४ योजन है। (४०८) (१०)

पलिओवमठिइया एएसिं अइवइ सुरा इणमो ।
काले य महाकाले, वेलंब पभंजणे चेव ॥ ४०९ ॥ (११)

अर्थ – उसका अधिपति पल्योपम की स्थितिवाले ये देव हैं – काल, महाकाल, वेलंब और प्रभंजन। (४०९) (११)

अन्नेऽवि य पायाला, खुड्डालिंजरसंठिया लवणे ।
अट्ठ सया चुलसीया, सत्त सहस्सा य सव्वेऽवि ॥४१०॥ (१२)

अर्थ – लवणसमुद्र में छोटे घड़े के आकार के अन्य पातालकलश भी हैं। वे सभी ७,८८४ हैं। (४१०) (१२)

जोयणसयवित्थिन्ना, मूलुवरिं दस सयाणि मज्झम्मि ।
ओगाढा य सहस्सं, दस जोयणिया य सिं कूडा ॥४११॥ (१३)

अर्थ – (वह) मूल में और ऊपर १०० योजन और मध्य में १,००० योजन विस्तारवाले हैं, १,००० योजन गहरे हैं। उसकी दीवारें १० योजन की हैं। (४११) (१३)

पायालाण विभागा, सव्वाण वि तिन्नि तिन्नि विन्नेया ।
हिट्ठिमभागे वाऊ, मज्झे वाऊ य उदगं च ॥ ४१२ ॥ (१४)
उवरिं उदगं भणियं, पढमगबीएसु वाउ संखुभिओ ।
उड्ढं वमेइ उदगं, परिवड्ढइ जलनिही खुहिओ ॥४१३॥ (१५)
परिसंठियम्मि पवणे, पुणरवि उदगं तमेव संठाणं ।
वड्ढेइ तेण चउही, परिहायइ अणुकमेणं च ॥ ४१४ ॥ (१६)

अर्थ – सभी पातालकलशों के ३-३ विभाग जानें – नीचे के भाग में वायु, बीच में वायु और पानी और ऊपर पानी कहा गया है। पहले और दूसरे (विभाग) में क्षुब्ध वायु ऊपर से पानी गिराता है, (जिससे) क्षुब्ध समुद्र बढ़ता है। पवन शान्त होने के बाद पानी पुनः उसी आकार का हो जाता है। जिसके कारण समुद्र क्रमशः बढ़ता है और घटता है। (४१२-४१३-४१४) (१४-१५-१६)

दसजोयणसहस्सा, लवणसिहा चक्कवालओ रुंदा ।
सोलस सहस्स उच्चा, सहस्समेगं च ओगाढा ॥ ४१५ ॥ (१७)

अर्थ – लवणसमुद्र की शिखा गोलाकार में १०,००० योजन चौड़ी, १६,००० योजन ऊँची और १,००० योजन अवगाढ है। (४१५) (१७)

देसूणमद्धजोयण, लवणसिहोवरि दगं दुवे काला ।
अइरेगं अइरेगं, परिवड्ढइ हायए वावि ॥ ४१६ ॥ (१८)

अर्थ – लवणशीखा के उपर दोनों काल देशोन अर्धयोजन पानी थोडा थोडा बढ़ता है या घटता है (४१६) (१८)

अब्भिंतरियं वेलं, धरंति लवणोदहिस्स नागाणं ।
बायालीस सहस्सा, दुसत्तरि सहस्स बाहिरियं ॥ ४१७ ॥ (१९)

अर्थ – लवणसमुद्र की अभ्यंतर वेला को ४२,००० नागकुमार देव रोकते हैं। ७२,००० (नागकुमारदेव) ब्रह्मवेला को रोकते हैं। (४१७) (१९)

सट्ठिं नागसहस्सा, धरंति अग्गोदयं समुद्दस्स ।
वेलंधरआवासा, लवणे चाउद्दिसिं चउरो ॥४१८ ॥ (२०)

अर्थ – लवणसमुद्र के ऊपर के पानी को ६०,००० नागकुमारदेव रोकते हैं। लवणसमुद्र की चारों दिशाओं में चार वेलंधर आवास हैं। (४१८) (२०)

पुव्वाइं अणुकमसो, गोत्थुभ दगभास संख दगसीमा ।
गोत्थुभ सिवए संखे, मणोसिले नागरायाणो ॥ ४१९ ॥ (२१)

अर्थ – वह पूर्व आदि में क्रमशः गोस्तूप, दक्भास, शंख और दकसीमा नामक हैं। (उसके अधिपति) गोस्तूप, शिव, शंख और मनःशिल नागकुमार देव हैं। (४१९) (२१)

अणुवेलंधरवासा, लवणे विदिसासु संठिया चउरो ।
कक्कोडग विज्जुप्पभ, कइलासरुणप्पभे चेव ॥४२०॥ (२२)

अर्थ – लवणसमुद्र में विदिशा में चार अनुवेलंधर आवास हैं – कर्कोटक, विद्युत्प्रभ, कैलाश और अरुणप्रभ। (४२०) (२२)

कक्कोडग कद्दमए, कैलासऽरुणप्पभे य रायाणो ।
बायालीस सहस्से, गंतुं उदहिम्मि सव्वेऽवि ॥ ४२१ ॥ (२३)

अर्थ – (उसके अधिपति) कर्कोटक, कर्दमक, कैलाश और अरुणप्रभ नागराज हैं। वे सभी समुद्र में ४२,००० योजन जाकर (उसके बाद अवस्थित हैं।) (४२१) (२३)

चत्तारि जोयणसए, तीसं कोसं च उवगया भूमिं ।
सत्तरस जोयणसए, इगवीसे ऊसिया सव्वे ॥ ४२२ ॥ (२४)

अर्थ – वे सभी ४३० योजन १ गाउ भूमि में प्रविष्ट हैं और १,७२१ योजन ऊँचे हैं। (४२२) (२४)

जत्थिच्छसि विक्खंभं, वेलंधरमाणुसोत्तरनगाणं ।
पंचसएहिं गुणए, अट्ठाणउएहिं तं रासिं ॥ ४२३ ॥ (२५)
तस्सेव उस्सएण उ, भयाहि जं तत्थ भागलद्धं तु ।
चउसय चउवीसजुयं, विक्खंभं तं वियाणाहि ॥ ४२४ ॥ (२६)

अर्थ – वेलंधर पर्वतों और मानुषोत्तर पर्वतों की जिस स्थान पर चौड़ाई जानना चाहते हैं, उस राशि को ५९८ से गुणा करें, उसी की ऊँचाई से विभाजित करें। उसके भाग में प्राप्त ४२४ से युक्त वह चौड़ाई जानें। (४२३-४२४) (२५-२६)

कमसो विक्खंभा सिं, दस बावीसाइं जोयणसयाइं ।
सत्त सए तेवीसे, चत्तारि सए य चउवीसे ॥ ४२५ ॥ (२७)

अर्थ – उसके (मूल में, मध्य में और ऊपर) क्रमशः चौड़ाई १,०२२ योजन, ७२३ योजन और ४२४ योजन है। (४२५) (२७)

मूले बत्तीस सए, बत्तीसे जोयणाणि किंचूणा ।
मज्झे बावीस सए, छलसीए साहिए परिही ॥ ४२६ ॥ (२८)

अर्थ – मूल में कुछ कम ३,२३२ योजन और मध्य में २,२८६ योजन परिधि है। (४२६) (२८)

तेरस सया उ उवरिं, इगयाला किंचि ऊणिया परिही ।
कणगंकरययफालिय, दिसासु विदिसासु रयणमया ॥४२७॥ (२९)

अर्थ – ऊपर कुछ कम १,३४१ योजन परिधि है। दिशा के पर्वत सुवर्ण अंकरत्न, रजत और स्फटिक के हैं। विदिशा के पर्वत रत्नमय हैं। (४२७) (२९)

बायालीस सहस्सा, दुगुणा गिरिवाससंजुया जाया ।
बावीसहिया पणसीइ, सहस्सा तस्स परिहीओ ॥४२८॥ (३०)
तेवट्ठा अट्ठ सया, अट्ठट्ठि सहस्स दोन्नि लक्खा य ।
जंबूद्दीवपरिरए, संमिलिए होइमो रासी ॥ ४२९ ॥ (३१)
इगनउया पणसीइ, सहस्स पण लक्ख इत्थ गिरिवासो ।
सोहे अट्ठविहत्ते, लवणगिरिणंतरं होइ ॥ ४३० ॥ (३२)

अर्थ – पर्वत के व्यास से युक्त दोगुना ४२,००० वह ८५,०२२ होता है। उसकी परिधि २,६८,८६३ योजन। जंबूद्वीप की परिधि में मीलाकर यह राशी ५८५०९१ योजन होती है।

इसमें से पर्वतों का व्यास बाद करें। फिर ८ से भाग देने पर लवणसमुद्र के पर्वतों का अन्तर आता है। (४२८-४२९-४३०) (३०-३१-३२)

तिन्नट्ठभाग विसयरि, सहस्स चोद्दस हियं सयं चेगं ।
कक्कोडाइनगाणं-तरं तु अट्ठण्ह मूलम्मि ॥ ४३१ ॥ (३३)

अर्थ – कर्कोटक आदि आठ पर्वतों का मूल में अन्तर ७२,११४ ३/८ योजन है। (४३१) (३३)

पंचाणउइ सहस्से, गोतित्थं उभओऽवि लवणस्स ।
जोयणसयाणि सत्त उ, दगपरिवुड्ढी वि उभओऽवि ॥४३२॥ (३४)

अर्थ – लवणसमुद्र के दोनों तरफ ९५,००० योजन गोतीर्थ है, दोनों तरफ जलवृद्धि भी ७०० योजन है। (४३२) (३४)

बारससहस्सपिहुलो, अवरेणुदहिम्मि तत्तियं गंतुं ।
सुट्ठियउदहीवइणो, गोयमदीवो त्ति आवासो ॥४३३॥ (३५)

अर्थ – १२,००० योजन चौड़ा, लवणसमुद्र में पश्चिममे उतना जाकर लवणसमुद्र के अधिपति सुस्थित देव का गौतमद्वीप नामक आवास है। (४३३) (३५)

सत्तत्तीस सहस्सा, अडयाला नव सया य से परिही।
लवणंतेण जलाओ, समूसिओ जोयणस्सद्धं ॥ ४३४ ॥ (३६)

अर्थ – उसकी परिधि ३७,९४८ योजन है। लवणसमुद्र की तरफ वह पानी के ऊपर अर्ध योजन ऊँचा है। (४३३)(३६)

जंबूद्दीवंतेणं, अडसीइ जोयणाणि उव्विद्धो।
पणनउइ भागाण य, दुगुणिय वीसं च दुक्कोसं ॥४३५॥ (३७)

अर्थ – जंबूद्वीप की तरफ वह ८८ ४०/९५ योजन और २ गाउ ऊँचा है। (४३५) (३७)

रविससिगोयमदीवा–णंतरदीवाण चेव सव्वेसिं।
वेलंधराणुवेलं–धराण सव्वेसिं करणमिमं ॥ ४३६ ॥ (३८)

अर्थ – सूर्य, चन्द्र और गौतमद्वीप, सभी अन्तरद्वीप, सभी वेलंधर–अनुवेलंधर पर्वतों का यह करण है। (४३६) (३८)

ओगाहिऊण लवणं, जो वित्थारो उ जस्स दीवस्स।
तहियं जो उस्सेहो, उदगस्स उ दोहि तं विभए ॥४३७॥ (३९)
जं हवइ भागलद्धं, सव्वेसिं अद्धजोयणं च भवे।
अब्भिंतरम्मि पासे, समूसिया ते जलंताओ ॥४३८॥ (४०)

अर्थ – लवणसमुद्र को छोड़कर जिस द्वीप का जो विस्तार हो, वहाँ पानी की जो ऊँचाई हो, उसे दो से विभाजित करें, भाग में जो मिले, उसमें अर्ध योजन (जोड़ें), जो आए, उतने सारे द्वीप अन्दर की तरफ पानी के स्तर से ऊंचे हैं। (४३७–४३८) (३९–४०)

वित्थारं सत्तगुणं, नव सय पन्नास भइयमुस्सेहं।
सदुगाउयमाइल्लं, लावणदीवाण जाणाहि ॥ ४३९ ॥ (४१)

अर्थ – सातगुणा विस्तार ९५० से विभाजित २ गाउ से युक्त लवणसमुद्र के द्वीपों की प्रारम्भिक ऊँचाई जानें। (४३९) (४१)

पणनउइसहस्सेहिं, सत्त सया उदगवुड्ढि जइ होइ।
बायालसहस्सेहिं, दगवुड्ढी नगाण का होइ ॥ ४४० ॥ (४२)

अर्थ – ९५,००० योजन के बाद जो ७०० योजन पानी की वृद्धि हो तो ४२,००० योजन के बाद पर्वतों के पानी की वृद्धि क्या होगी ? (४४०) (४२)

दगवुड्ढि तिसय नवहिय, पणयाला पंचनउइभागा य।
दस पणनउइभागा, चउसय बायाल ओगाहो ॥ ४४१ ॥ (४३)

अर्थ – जलवृद्धि ३०९ ४५/९५ योजन है। ४४२ १०/९५ योजन पानी की गहराई है। (४४१) (४३)

उभयं विसोहइत्ता, लवणगिरीणुस्सयाहितो सेसं।
उणसयरि नव सया विय, दुवीस पणनउइभागा य ॥४४२॥ (४४)
जंबूद्दीवंतेणं, एवइयं ऊसिया जलंताओ।
उदहिंतेण नव सए, तिसट्ठसत्तत्तरीभागा ॥ ४४३ ॥ (४५)

अर्थ – लवणसमुद्र के पर्वतों की ऊँचाई में से उन दोनों को बाद करके शेष ९६९ २२/९५ योजन (वे पर्वत) जंबूद्वीप की तरफ पानी से इतने ऊँचे हैं। समुद्र की तरफ ९६३ ७७/९५ योजन ऊँचे हैं। (४४२–४४३) (४४–४५)

अउणत्तरे नवसए, चत्तालीस पणनउइभागा य।
ओगाहियं गिरीणं, वित्थारो सत्तसय सट्ठी ॥ ४४४ ॥ (४६)
पणनउइभागे असिइ, सवन्नए बिसत्तरी सहस्साइं।
दो य सया आसीया, लद्धं तेरासिएण इमं ॥ ४४५ ॥ (४७)
किंचूणा अडवन्ना, पणनउइभागा जोयणा पंच।
पुरिमनगस्स य सुद्धे, एयम्मि उ पच्छिमो होइ ॥४४६॥ (४८)

अर्थ – ९६९ ४०/९५ योजन छोड़कर पर्वतों का विस्तार ७६० ८०/९५ योजन है। एकरूप करने पर ७२,२८०होता है। त्रिराशि से यह मिला कुछ कम ५ ५८/९५ योजन। पूर्व में कथित पर्वतों की ऊँचाई में से इसे बाद करने पर पीछे (लवणसमुद्र की तरफ) की पानी के ऊपर की (पर्वतों की) ऊँचाई है। (४४४-४४५-४४६) (४६-४७-४८)

गोयमदीवस्सुवरिं, भोमिज्जं कीलवासनामं तु।
बासट्ठि जोयणाइं, समूसियं जोयणद्धं तु॥ ४४७ ॥(४९)

अर्थ – गौतमद्वीप के ऊपर क्रीडावास नामक ६२ १/२ योजन ऊँचा भौमेय आवास है। (४४७) (४९)

तस्सद्धं वित्थिन्नं, तस्सुवरि सुट्ठियस्स सयणिज्जं।
दीवु व्व लावणब्भि-तराण एमेव रविदीवा॥ ४४८ ॥(५०)

अर्थ – उसके ऊपर उससे आधे विस्तारवाली सुस्थितदेव की शय्या है। गौतमद्वीप की तरह उसी प्रकार लवणसमुद्र के अंदर के सूर्यों का सूर्यद्वीप है। (४४८) (५०)

एमेव चंददीवा, नवरं पुव्वेण वेइयंताओ।
दीविच्चय चंदाणं, अब्भिंतरलावणाणं च॥ ४४९ ॥(५१)

अर्थ – इसी प्रकार जंबूद्वीप के और अभ्यंतर लवणसमुद्र के चन्द्रों के चन्द्रद्वीप हैं, परन्तु वह जंबूद्वीप की वेदिका से पूर्व में है। (४४९) (५१)

बाहिर लावणगाण वि, धायइसंडा उ बारससहस्से।
ओगाहिय रविदीवा, पुव्वेणेमेव चंदाणं॥ ४५० ॥(५२)

अर्थ – धातकीखंड से १२,००० योजन छोड़कर बाह्य लवणसमुद्र के सूर्यों का सूर्यद्वीप है। इसी प्रकार पूर्व में चन्द्रों का चन्द्रद्वीप है। (४५०) (५२)

धाइयसंडब्भिंतर, रविदीवा बारसहस्स लवणजलं।
ओगाहिउ रविदीवा, पुव्वेणेमेव चंदाणं॥ ४५१ ॥(५३)

अर्थ – धातकीखंड के अन्दर के सूर्यों के सूर्यद्वीप लवणसमुद्र में १२,००० योजन छोड़कर स्थित हैं। इसी प्रकार पूर्व में चन्द्रों के चन्द्रद्वीप हैं। (४५१) ५३

जोयणबिसट्ठि अद्धं च, ऊसिया वित्थरेण तस्सऽद्धं।
एएसि मज्झयारे, पासाया चंदसूराणं॥ ४५२ ॥(५४)

अर्थ – उसके मध्य में ६२ १/२ योजन ऊँचा और उससे आधा चौड़ा चन्द्र-सूर्य के प्रासाद है। (४५२) (५४)

चुल्लहिमवंत पुव्वावरेण, विदिसासु सागरं तिसए।
गंतूणंतरदीवा, तिन्नि सए होंति वित्थिन्ना॥ ४५३ ॥(५५)

अर्थ – लघुहिमवंत के पूर्व-पश्चिम छोर से विदिशा में समुद्र में ३०० योजन जाकर ३०० योजन विस्तारवाले अन्तरद्वीप हैं। (४५३) (५५)

अउणापन्नअ नवसए, किंचूणे परिहि तेसिमे नामा।
एगोरुय आभासिय, वेसाणा चेव लंगूणो॥ ४५४ ॥(५६)

अर्थ – उसकी परिधि कुछ कम ९४९ योजन है। उसके ये नाम हैं – एकोरुक, आभाषिक, वैषाणिक और लांगूलिक। (४५४) (५६)

एएसिं दीवाणं, परओ चत्तारि जोयणसयाइं।
ओगाहिउण लवणं, सपडिदिसिं चउसयपमाणा॥४५५॥(५७)

चत्तारंतरदीवा, हयगयगोकन्नसक्कुलीकन्ना।
एवं पंच सयाइं, छस्सत्त य अट्ठ नव चेव॥ ४५६ ॥(५८)

ओगाहिउण लवणं, विक्खंभोगाहसरिसया भणिया।
चउरो चउरो दीवा, इमेहि नामेहि नायव्वा॥ ४५७ ॥(५९)

अर्थ – उन द्वीपों के बाद लवणसमुद्र में ४०० योजन जाकर अपनी विदिशा में ४०० योजन प्रमाणवाला हयकर्ण, गजकर्ण, गोकर्ण और शष्कुलीकर्ण नामक चार अन्तर्द्वीप हैं। इस प्रकार लवणसमुद्र में ५००, ६००, ७००, ८०० और ९०० योजन छोड़कर समान चौड़ाई और

अवगाहवाले चार-चार द्वीप कहे गए हैं। उन्हें इन नामों से जानें। (४५५-४५६-४५७) (५७-५८-५९)

आयंसमिंढगमुहा, अओमुहा गोमुहा य चउरो य।
आसमुहा हत्थिमुहा, सीहमुहा चेव वग्घमुहा ॥४५८॥ (६०)
तत्तो य आसकन्ना, हरिकन्नाकन्नकन्नपाउरणा।
उक्कमुहा मेहमुहा, विज्जुमुहा विज्जुदंता य ॥४५९॥ (६१)
घणदंत लट्ठदंता, निगूढदंता य सुद्धदंता य।
वासहरे सिहरम्मि वि, एवं चिय अट्ठवीसा वि ॥४६०॥ (६२)

अर्थ – आदर्शमुख, मेंढकमुख, अयोमुख और गोमुख – चार; अश्वमुख, हस्तिमुख, सिंहमुख और व्याघ्रमुख, उसके बाद अश्वकर्ण, हरिकर्ण, अकर्ण और कर्णप्रावरण; उल्कामुख, मेघमुख, विद्युन्मुख और विद्युद्दंत; धनदन्त, लष्टदन्त, निगूढ़दन्त और शुद्धदन्त। शिखरी वर्षधर पर्वत की दाढ़ा पर भी इसी प्रकार २८ अंतरद्वीप हैं। (४५८-४५९-४६०) (६०-६१-६२)

तिन्नेव होंति आइ, एकोत्तरवड्ढिया नव सयाओ।
ओगाहिऊण लवणं, तावइयं चेव वित्थिन्ना ॥४६१॥ (६३)

अर्थ – लवणसमुद्र में ३०० योजन छोड़कर (अंतरद्वीपों की) शुरुआत है, फिर एकोत्तर वृद्धि से बढ़ा हुआ ९०० योजन (छोड़कर अन्य द्वीप हैं)। वे उतने ही विस्तारवाले हैं। (४६१) (६३)

पढमचउक्कपरिरया,
बीयचउक्कस्स परिओ अहिओ।
सोलसहिएहिं तिहिं,
जोयणसएहिं (एमेव) सेसाणं ॥४६२॥ (६४)

अर्थ – पहले के चार द्वीपों की परिधि से अन्य चार द्वीपों की परिधि ३१६ योजन अधिक है। इसी प्रकार अन्य के भी जानें। (४६२) (६४)

एगोरुयपरिक्खेवो, नव चेव सयाइ अउणपन्नाइं।
बारस पन्नट्ठाइं, हयकन्नाणं परिक्खेवो ॥ ४६३ ॥ (६५)

अर्थ – एकोरुक द्वीपों की परिधि ९४९ योजन है। हयकर्ण द्वीपों की परिधि १,२६५ योजन है। (४६३) (६५)

पन्नरसिक्कासीया, आयंसमुहाण परिओ होइ।
अट्ठार सत्तणउया, आसमुहाणं परिक्खेवो ॥ ४६४ ॥ (६६)

अर्थ – आदर्शमुखों की परिधि १,५८१ योजन है। अश्वमुखों की परिधि १८९७ योजन है। (४६४) (६६)

बावीसं तेराइं, परिक्खेवो होइ आसकन्नाणं।
पणवीस अउणतीसा, उक्कमुहाणं परिक्खेवो ॥ ४६५ ॥ (६७)

अर्थ – अश्वकर्णों की परिधि २,२१३ योजन है। उल्कामुखों की परिधि २,५२९ योजन है। (४६५) (६७)

दो चेव सहस्साइं, अट्ठेव सया हवंति पणयाला।
घणदंतगदीवाणं, परिक्खेवो होइ बोधव्वो ॥ ४६६ ॥ (६८)

अर्थ – धनदन्त द्वीपों की परिधि २,८४५ योजन है, ऐसा जानें। (४६६) (६८)

अड्ढाइज्जा य दुवे, अद्धुट्ठा अद्धपंचमा चेव।
दो चेव अद्ध छ सत्तद्ध, सत्तमा होइ एक्को य ॥४६७॥ (६९)

एकूणिया य नवइ, जोयणमद्धेण होइ ऊणाओ।
जंबूद्दीवंतेणं, दीवाणं होइ उस्सेहो ॥ ४६८ ॥ (७०)

वीसा नउइ पन्नट्ठि, चत्त पन्नरस पंचसीया य।
सट्ठी चत्ता चेव य, गोयमदीवस्स भागाणं ॥४६९ ॥ (७१)

अर्थ – दो की २ १/२ योजन, ३ १/२ योजन ४ १/२ योजन, दो

की ५ १/२ योजन, सातवाँ एक ६ १/२ योजन, अर्ध न्यून ८९ योजन जंबूद्वीप की तरफ द्वीपों की (अंतरद्वीप और गौतमद्वीपों की) ऊँचाई है। (अंतरद्वीपों का) २०, ९०, ६५,४०, १५, ८५, ६० और ४० गौतमद्वीप के (योजन का पंचानवेवाँ) भाग हैं। (४६७-४६८-४६९) (६९-७०-७१)

जावइय दक्खिणाओ, उत्तरपासे वि तत्तिया चेव ।
चुल्लसिहरिम्मि लवणे, विदिसासु अओ परं नत्थि ॥४७०॥ (७२)

अर्थ - दक्षिण में जितने हैं उत्तर में भी उतने ही हैं। वह लवणसमुद्र में लघुहिमवंत और शिखरी पर्वत की विदिशा में है, उसके बाद नहीं है। (४७०) (७२)

अंतरदीवेसु नरा, धणुसय अट्ठुस्सिया सया मुइया ।
पालंति मिहुणधम्मं, पल्लस्स असंखभागाउ ॥ ४७१ ॥ (७३)

अर्थ - अंतरद्वीपों में मनुष्य ८०० धनुष्य ऊँचे, सदा आनंदवाले, पल्योपम के असंख्यातवें भाग के आयुष्यवाले हैं और मिथुन (युगल) धर्म पालते हैं। (४७१) (७३)

चउसट्ठी पिट्ठकरंडयाण, मणुयाण तेसिमाहारो ।
भत्तस्स चउत्थस्स य, उणसीइ दिणाणि पालणया ॥४७२॥ (७४)

अर्थ - ६४ पृष्ठकरंडवाले उन मनुष्यों का आहार चोथभक्त (एकांतर) है और सन्तानपालन ७९ दिन है। (४७२) (७४)

पंचाणउइ लवणे, गंतूणं जोयणाणि उभओऽवि ।
जोयणमेगं लवणो, ओगाहेणं मुणेयव्वो ॥ ४७३ ॥ (७५)

अर्थ - दोनों तरफ से लवणसमुद्र में ९५ योजन जाकर लवणसमुद्र गहराई से १ योजन जानें। (४७३) (७५)

पंचाणउइं सहस्से, गंतूणं जोयणाणि उभओऽवि ।
जोयणसहस्समेगं, लवणे ओगाहओ होइ ॥ ४७४ ॥ (७६)

अर्थ - दोनों तरफ से ९५,००० योजन जाकर लवणसमुद्र की गहराइ १,००० योजन है। (४७४) (७६)

पंचाणउइं लवणे, गंतूणं जोयणाणि उभयोऽवि ।
उस्सेहेणं लवणो, सोलस किल जोयणे होइ ॥ ४७५ ॥ (७७)

अर्थ - लवणसमुद्र में दोनों तरफ से ९५ योजन जाकर लवणसमुद्र ऊँचाई से १६ योजन है। (४७५) (७७)

पंचाणउइ सहस्से, गंतूणं जोयणाणि उभओऽवि ।
उस्सेहेणं लवणो, सोलससाहस्सिओ भणिओ ॥ ४७६ ॥ (७८)

अर्थ - दोनों तरफ से ९५,००० योजन जाकर लवणसमुद्र ऊँचाई से १६,००० योजन कहा गया है। (४७६) (७८)

वित्थाराओ सोहिय, दस य सहस्साइ सेस अद्धम्मि ।
ते चेव पक्खिवित्ता, लवणसमुद्दस्स सा कोडी ॥४७७॥ (७९)

अर्थ - विस्तार में से १०,००० योजन बाद करके शेष के अर्ध में वह (१०,००० योजन) जोड़कर वह लवणसमुद्र की कोटि होती है। (४७७) (७९)

लक्ख पंच सहस्सा, कोडीए तीइ संगुणेऊणं ।
लवणस्स मज्झपरिहि, ताहे पयरं इमं होइ ॥ ४७८ ॥ (८०)

अर्थ - वह कोटि से १,०५,००० योजन को गुणाकर लवणसमुद्र की मध्य परिधि होती है। तब प्रतर (क्षेत्रफल) यह है (४७८) (८०)

नवनउइं कोडिसया, एगट्ठी कोडि लक्ख सत्तरस ।
पन्नरस सहस्साणि य, पयरं लवणस्स निद्दिट्ठं ॥४७९॥ (८१)

अर्थ - लवणसमुद्र का प्रतर ९९,६१,१७,१५,००० योजन कहा गया है। (४७९) (८१)

जोयणसहस्स सोलस, लवणसिहाऽहोगया सहस्सेगं ।
पयरं सत्तरस सहस्स, संगुणं लवणधणगणियं ॥४८०॥ (८२)

अर्थ – लवणशिखा १६,००० योजन है और १,००० योजन नीचे गई है। १७,००० से गुणा किया हुआ प्रतर लवणसमुद्र का घनगणित है। (४८०) (८२)

सोलस कोडाकोडी, केणउइ कोडिसयसहस्साइं ।
ऊयालीस सहस्सा, नव कोडिसया य पन्नरसा ॥४८१॥ (८३)

पन्नास सयसहस्सा, जोयणाणं भवे अणूणाइं ।
लवणसमुद्दस्सेहिं, जोयणसंखाइ घनगणियं ॥ ४८२ ॥ (८४)

अर्थ – अन्यून १,६९,३३,९९,१५,५०,००,००० इतनी योजन संख्या से लवणसमुद्र का घनगणित है। (४८१-४८२) (८३-८४)

जत्थिच्छसि विक्खंभं, ओगाहित्ताण नउयसयगुणियं ।
तं सोलसहि विभत्तं, उवरिमसहियं भवे गणियं ॥४८३॥ (८५)

अर्थ – (लवणशिखा में) उतरकर जहाँ चौड़ाई चाहते हैं, वह १९० से गुणा किया गया, १६ से विभाजित और ऊपर की चौड़ाई सहित गणित (चौड़ाई) होती है। (४८३) (८५)

जत्थिच्छसि उस्सेहं, ओगाहित्ताण लवणसलिलस्स ।
पंचाणउइविभत्ते, सोलसगुणिए गणियमाहु ॥ ४८४ ॥ (८६)

अर्थ – लवणसमुद्र के पानी को छोड़कर जहाँ ऊँचाई चाहते हैं, वह ९५ से विभाजित होने पर १६ से गुणित होने पर (ऊँचाई का) गणित कहा गया है। (४८४) (८६)

जत्थिच्छसि उव्वेहं, ओगाहित्ताण लवणसलिलस्स ।
पंचाणउइविभत्ते, जं लद्धं सो उ उव्वेहो ॥ ४८५ ॥ (८७)

अर्थ – लवणसमुद्र के पानी को छोड़कर जहाँ गहराई चाहते हैं, वह ९५ से विभाजित होने पर जो मिलता है, वह गहराई है। (४८५) (८७)

चत्तारि चेव चंदा, चत्तारि य सूरिया लवणतोए ।
बारं नक्खत्तसयं, गहाण तिन्नेव बावन्ना ॥ ४८६ ॥ (८८)

अर्थ – लवणसमुद्र में चार चन्द्र, चार सूर्य, ११२ नक्षत्र, और ३५२ ग्रह हैं। (४८६) (८८)

दो चेव य सयसहस्सा, सत्तट्ठी खलु भवे सहस्सा य ।
नव य सया लवणजले, तारागणकोडिकोडीणं ॥४८७॥ (८९)

अर्थ – लवणसमुद्र में २,६७,९०० कोटि-कोटि तारे हैं। (४८७) (८९)

लवणोयही समत्तो, खित्तसमासस्स बीयअहिगारो ।
गाहापरिमाणेणं, नायव्वो एस नवइओ ॥ ४८८ ॥ (९०)

अर्थ – क्षेत्रसमास का लवणसमुद्र नामक द्वितीय अधिकार समाप्त हुआ। गाथा परिमाण से यह ९० संख्यावाला जानें। (४८८) (९०)

द्वितीय अधिकार समाप्त

□□ □□ □

तृतीय अधिकार

धातकी खंड

चत्तारि सयसहस्सा, धायइसंडस्स होइ विक्खंभो ।
चत्तारि य से दारा, विजयाइया मुणेयव्वा ॥ ४८९ ॥ (१)

अर्थ – धातकीखंड की चौड़ाई चार लाख योजन है। विजय आदि उसके चार द्वार जानें। (४८९) (१)

इयालीसं लक्खा, दस य सहस्साइं जोयणाणं तु ।
नव य सया एगट्ठा, किंचूणा परिरओ होइ ॥ ४९० ॥ (२)

अर्थ – घातकीखंड की परिधि कुछ न्यून ४१,१०,९६१ योजन है। (४९०) (२)

पणतीसा सत्त सया, सत्तावीसा सहस्स दस लक्खा ।
धायइसंडे दारंतरं तु, अवरं च कोसतिगं ॥ ४९१ ॥ (३)

अर्थ – धातकीखंड में द्वारों का अन्तर १०,२७,७३५ योजन और ३ गाउ है। (४९१) (३)

पंचसयजोयणुच्चा, सहस्समेगं तु होंति वित्थिन्ना ।
कालोययलवणजले, पुट्ठा ते दाहिणुत्तरओ ॥ ४९२ ॥ (४)
दो उसुयारनगवरा, धायइसंडस्स मज्झयारठिया ।
तेहि दुहा निद्दिस्सइ, पुव्वद्धं पच्छिमद्धं च ॥ ४९३ ॥ (५)

अर्थ – धातकीखंड के मध्य में, दक्षिण में और उत्तर में अवस्थित दो इषुकार पर्वत ५०० योजन ऊँचे, १,००० योजन चौड़े और कालोदधि तथा लवणसमुद्र के पानी को स्पर्श किए हुए हैं। इस कारण से धातकीखंड के दो भाग कहे जाते हैं – पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध। (४९२-४९३) (४-५)

पुव्वद्धस्स य मज्झे, मेरू तस्सेव दाहिणुत्तरओ ।
वासाइ तिन्नि तिन्नि य, विदेहवासं च मज्झम्मि ॥ ४९४ ॥ (६)

अर्थ – पूर्वार्ध के मध्य में मेरुपर्वत है। उसके दक्षिण की तरफ और उत्तर की तरफ ३-३ क्षेत्र हैं और बीच में महाविदेह क्षेत्र है। (४९४) (६)

अरविवर संठियाइं, चउलक्खा आययाइं खित्ताइं ।
अंतो संखित्ताइं, रुंदतराइं कमेण पुणो ॥ ४९५ ॥ (७)

अर्थ – क्षेत्र आरा के अन्तरों के आकार के चार लाख योजन लम्बे, अन्दर सँकड़े और फिर क्रमशः चौड़े हैं। (४९५) (७)

जंबूद्दीवा दुगुणा, वासहरा हुंति धायइसंडे ।
उसुयारा साहस्सा, ते मिलिया हुंतिमे खित्तं ॥ ४९६ ॥ (८)

अर्थ – धातकीखंड में वर्षधर पर्वत (की चौड़ाई) जंबूद्वीप की अपेक्षा दोगुनी है। इषुकार पर्वत १,००० योजन (चौड़े) हैं। इन सबों को मिलाकर इस प्रकार क्षेत्र होता है। (४९६) (८)

एगं च सयसहस्सं, हवंति अट्ठत्तरी सहस्सा य ।
अट्ठ सया बायाला, वासविहीणं तु जं खित्तं ॥ ४९७ ॥ (९)
लवणस्स परिहिसुद्धं, एयं धुवरासि धायइसंडे ।
लक्खा चोद्दस बावीस, सयाइं सत्तणउइ य ॥ ४९८ ॥ (१०)

अर्थ – १,७८,८४२ योजन क्षेत्रों से रहित जो क्षेत्र है, उसे लवणसमुद्र की परिधि में से बाद करें। धातकीखंड में यह ध्रुवराशि है – १४,०२,२९७ योजन (४९७- ४९८) (९-१०)

जावंतावेहिगुणा, एसो भइओ य दुसयबारेहिं ।
अब्भिंतरविक्खंभो, धायइसंडस्स भरहाइ ॥ ४९९ ॥ (११)

अर्थ – इस ध्रुवराशि को जिस किसी गुणाकार के द्वारा गुणित करने और २१२ से भाग देने पर धातकीखंड के भरत आदि के अन्दर की चौड़ाई आती है। (४९९) (११)

जावंता वास भरहे, एक्को चत्तारि हुंति हेमवए ।
सोलस हरिवासम्मि, महाविदेहम्मि चउसट्ठी ॥ ५०० ॥ (१२)

अर्थ – जो कोई भी गुणाकार भरत में १, हिमवंत में ४, हरिवर्ष में १६ और महाविदेह में ६४ है। (५००) (१२)

भरहे मुहविक्खंभो, छावट्ठि सयाइं चोद्दसहियाइं ।
अउणत्तीसं च सयं, बारस हिय दुसयभागाणं ॥५०१॥ (१३)

अर्थ – भरतक्षेत्र की मुखचौड़ाई ६,६१४ १२९/२१२ योजन है। (५०१) (१३)

छव्वीसं तु सहस्सा, चत्तारि सयाइं अट्ठपन्नाइं ।
बाणउइ चेव अंसा, मुहविक्खंभो उ हेमवए ॥ ५०२ ॥ (१४)

अर्थ – हिमवंतक्षेत्र की मुखचौड़ाई २६,४५८ ९२/२१२ योजन है। (५०२) (१४)

एगं च सयसहस्सं, अट्ठावन्नं सया य तित्तीसा ।
अंससयं छप्पन्नं, मुहविक्खंभो उ हरिवासे ॥ ५०३ ॥ (१५)

अर्थ – हरिवर्ष क्षेत्र की मुखचौड़ाई १,०५,८३३ १५६/२१२ योजन है। (५०३) (१५)

चत्तारि सयसहस्सा, तेवीस सहस्स तिसय चउतीसा ।
दो चेव य अंससया, मुहविक्खंभो विदेहस्स ॥ ५०४ ॥ (१६)

अर्थ – महाविदेह क्षेत्र की मुखचौड़ाई ४,२३,३३४ २००/२१२ योजन है। (५०४) (१६)

ते चेव य सोहेज्जा, मज्झे जो होइ परिरओ तम्हा ।
सो मज्झे धुवरासी, धायइसंडस्स दीवस्स ॥ ५०५ ॥ (१७)

अर्थ – मध्य में जो परिधि है, उसमें से उसे (क्षेत्रों से रहित क्षेत्र को) ही बाद करें। धातकीखंड द्वीप के मध्य में वह ध्रुवराशि है। (५०५) (१७)

अट्ठावीसं लक्खा, सहस्स छायाल चेव पन्नासा ।
मज्झम्मि परिरओ से, धायइसंडस्स दीवस्स ॥ ५०६ ॥ (१८)

अर्थ – उस धातकीखंड द्वीप के मध्य में परिधि २८,४६,०५० योजन है। (५०६) (१८)

अट्ठहिया दुन्नि सया, सत्तट्ठि सहस्स लक्ख छव्वीसा ।
धायइवरस्स मज्झे, धुवरासी एस नायव्वो ॥ ५०७ ॥ (१९)

अर्थ – २६,६७,२०८ योजन – धातकीवर के मध्य में यह ध्रुवराशि जानें। (५०७) (१९)

बारस चेव सहस्सा, एक्कासीयाणि पंच य सयाणि ।
छत्तीस चेव अंसा भरहस्स उ मज्झ विक्खंभो ॥५०८॥ (२०)

अर्थ – भरतक्षेत्र की मध्यचौड़ाई १२,५८१ ३६/२१२ योजन है। (५०८) (२०)

तिन्नि सया चउवीसा, पन्नास सहस्स जोयणाणं तु ।
चोयालं अंससयं, हेमवए मज्झविक्खंभो ॥ ५०९ ॥ (२१)

अर्थ – हिमवंतक्षेत्र की मध्य चौड़ाई ५०,३२४ १४४/२१२ योजन है। (५०९) (२१)

दो चेव सयसहस्सा, अट्ठाणउया य बारस सया य ।
बावन्नं अंससयं, हरिवासे मज्झ विक्खंभो ॥ ५१० ॥ (२२)

अर्थ – हरिवर्ष क्षेत्र की मध्यचौड़ाई २,०१,२९८ १५२/२१२ योजन है। (५१०) (२२)

अट्ठेव सयसहस्सा, एगावन्ना सया य चउणउया ।
चुलसीयं अंससयं, विदेहमज्झम्मि विक्खंभो ॥ ५११ ॥ (२३)

अर्थ – महाविदेह क्षेत्र के मध्य में चौड़ाई ८,०५,१९४ १८४/२१२ योजन है। (५११) (२३)

तं चेव य सोहिज्जा, धायइसंडस्स परीरयाहिंतो ।
सो बाहिं धुवरासी, भरहाइसु धायइसंडे ॥ ५१२ ॥ (२४)

अर्थ – धातकीखंड की परिधि में से उसे (क्षेत्रों से रहित क्षेत्र को) ही बाद करें। धातकीखंड में भरत आदि क्षेत्रों में वह बाह्य ध्रुवराशि है। (५१२) (२४)

उणवीसहियं च सयं, बत्तीस सहस्स लक्ख ऊयालं ।
धायइसंडस्सेसो, धुवरासी बाहि विक्खंभो ॥ ५१३ ॥ (२५)

अर्थ – ३९,३२,११९ योजन धातकीखंड के (भरत आदि क्षेत्रों की) बाह्य चौड़ाई (लाने) यह ध्रुवराशि है। (५१३) (२५)

अट्ठारस य सहस्सा, पंचेव सया हवंति सीयाला ।
पणपन्नं अंससयं, बाहिरओ भरहविक्खंभो ॥ ३१४ ॥ (२६)

अर्थ – भरतक्षेत्र की बाह्य चौड़ाई १८,५४७ १५५/२१२ योजन है। (५१४) (२६)

चउहत्तरी सहस्सा, नउयसयं चेग जोयणाण भवे ।
छन्नउयं अंससयं, हेमवए बाहिविक्खंभो ॥ ५१५ ॥ (२७)

अर्थ – हिमवंत क्षेत्र की बाह्य चौड़ाई ७४,१९० १९६/२१२ योजन है। (५१५) (२७)

तेवट्ठा सत्तसया, छन्नउइ सहस्स दो सयसहस्सा ।
अडयालं अंससयं, हरिवासे बाहिविक्खंभो ॥ ५१६ ॥ (२८)

अर्थ – हरिवर्ष क्षेत्र की बाह्य चौड़ाई २,९६,७६३ १४८/२१२ योजन है। (५१६) (२८)

इक्कारस लक्खाइं, सत्तासीया सहस्स चउप्पन्ना ।
अट्ठट्ठं अंससयं, बाहिरओ विदेहविक्खंभो ॥ ५१७ ॥ (२९)

अर्थ – महाविदेह क्षेत्र की बाह्य चौड़ाई ११,८७,०५४ १६८/२१२ योजन है। (५१७) (२९)

चउगुणिय भरहवासो, हेमवए तं चउगुणं तइए ।
हरिवासं चउगुणियं, महाविदेहस्स विक्खंभो ॥ ५१८ ॥ (३०)

अर्थ – चार से गुणित भरतक्षेत्र का विष्कंभ हिमवंतक्षेत्र की चौड़ाई है। वह चार गुनी तीसरे (हरिवर्षक्षेत्र) की चौड़ाई है। चार से गुणित हरिवर्षक्षेत्र की चौड़ाई महाविदेहक्षेत्र की चौड़ाई है। (५१८) (३०)

जह विक्खंभो दाहिण-दिसाए तह उत्तरेऽवि वासतिए ।
जह पुव्वद्धे सत्तओ, तह अवरद्धेऽवि वासाइं ॥ ५१९ ॥ (३१)

अर्थ – जिस प्रकार दक्षिण दिशा में चौड़ाई कही गई है, उसी प्रकार उत्तर में भी तीन क्षेत्रों की चौड़ाई जानें। जिस प्रकार पूर्वार्ध में सात क्षेत्र हैं उसी प्रकार पश्चिमार्ध में भी हैं। (५१९) (३१)

बायाला अट्ठ सया, सहस्स अट्ठत्तरी सयसहस्सं ।
वासविहूणं खित्तं, धायइसंडम्मि दीवम्मि ॥ ५२० ॥ (३२)

अर्थ – धातकीखंड द्वीप में १,७८,८४२ योजन क्षेत्रों से रहित क्षेत्र है। (५२०) (३२)

एयं दुसहस्सूणं, इच्छासंगुणिय चउरसीभइयं ।
वासो वासहराणं, जावंतविक्कचउसोला ॥ ५२१ ॥ (३३)

अर्थ – २,००० योजन न्यून यह क्षेत्र इच्छित (भाग) से गुणित और ८४ से विभाजित वर्षधर पर्वतों का व्यास है। जितने-उतने गुणाकार १, ४, १६ हैं। (५२१) (३३)

इगवीस सया पणहिय, बावीसं चउरसीइ भागो य ।
चुल्लहिमवंतवासो, धायइसंडम्मि दीवम्मि ॥ ५२२ ॥ (३४)

अर्थ – धातकीखंड में लघुहिमवंत पर्वत का व्यास २,१०५ २२/८४ योजन है। (५२२) (३४)

इगवीस चुलसीइ, सया उ चत्तारि चेव अंसा उ ।
वासो महाहिमवए, धायइसंडम्मि दीवम्मि ॥ ५२३ ॥ (३५)

अर्थ – धातकीखंड में महाहिमवंत पर्वत का व्यास ८,४२१ ४/८४ योजन है। (५२३) (३५)

तित्तीसं च सहस्सा, छच्चेव सया हवंति चुलसीया ।
सोलस चेव य अंसा, विक्खंभो होइ निसहस्स ॥५२४॥ (३६)

अर्थ – निषधपर्वत की चौड़ाई ३३,६८४ १६/८४ योजन है। (५२४) (३६)

जह विक्खंभो दाहिण-दिसाए तह उत्तरेऽवि तिण्ह गिरि ।
छप्पुव्वद्धे जह तह, अवरद्धे पव्वया छा उ ॥ ५२५ ॥ (३७)

अर्थ – जिस प्रकार दक्षिण दिशा में कही गई है उसी प्रकार उत्तर में भी तीन पर्वतों की चौड़ाई जानें। जिस प्रकार पूर्वार्ध में छः पर्वत हैं उसी प्रकार पश्चिमार्ध में भी छः पर्वत हैं। (५२५) (३७)

वासहरगिरी वक्खार-पव्वया पुव्वपच्छिमद्धेसु ।
जंबूद्दीवगदुगुणा, वित्थरओ उस्सए तुल्ला ॥ ५२६ ॥ (३८)

अर्थ – पूर्वार्ध में और पश्चिमार्ध में वर्षधर पर्वत और वक्षस्कार पर्वत जंबूद्वीप की अपेक्षा विस्तार में दोगुना और ऊँचाई में समान है। (५२६) (३८)

वासहरकुरुसु दहा, नइण कुंडाइ तेसु जे दीवा ।
उव्वेहुस्सयतुल्ला, विक्खंभायामओ दुगुणा ॥ ५२७ ॥ (३९)

अर्थ – वर्षधर पर्वत और कुरु में जो द्रह, नदी के कुंड, उसमें द्वीप (जंबूद्वीप के द्रह-कुंड-द्वीप की अपेक्षा) गहराई-ऊँचाई में समान और चौड़ाई-लम्बाई में दोगुना है। (५२७) (३९)

सव्वाओ वि नइओ, विक्खंभोव्वेहदुगुणमाणाओ ।
सीयासीओयाणं, वणाणि दुगुणाणि विक्खंभे ॥५२८॥ (४०)

अर्थ – सभी नदियाँ (जंबूद्वीप की अपेक्षा) चौड़ाई में और गहराई में दोगुना प्रमाणवाली हैं। सीता-सीतोदा के वन चौड़ाई में दोगुने हैं। (५२८) (४०)

कंचणगजमगसुरकुरु-नगा य वेयड्ढ दीहवट्टा य ।
विक्खंभोव्वेहसमु-स्सएण जह जंबूद्दीवि व्व ॥ ५२९ ॥ (४१)

अर्थ – कंचनगिरि, यमकपर्वत, देवकुरु के पर्वत, वैताढ्य और दीर्घवैताढ्य पर्वत चौड़ाई-गहराई-ऊँचाई में जंबूद्वीप के समान हैं। (५२९) (४१)

चउणउइ सए मेरुं, विदेहमज्झा विसोहइत्ताणं ।
सेसस्स य जं अद्धं, सो विक्खंभो कुरूणं तु ॥५३०॥ (४२)

अर्थ – महाविदेह क्षेत्र के मध्य में से मेरुपर्वत के ९,४०० बाद करके शेष का जो अर्ध वह कुरु की चौड़ाई है। (५३०) (४२)

सत्ताणवइ सहस्सा, सत्ताणउयाइ अट्ठ य सयाइं ।
तिन्नेव य लक्खाइं, कुरूण भागा उ बाणउइ ॥ ५३१ ॥ (४३)

अर्थ – कुरु की चौड़ाई ३,९७,८९७ ९२/२१२ योजन है। (५३१) (४३)

हरया य दुसाहस्सा, जमगाण सहस्स सोहय कुरूओ ।
सेसस्स सत्तभागं, अंतरमो जाण सव्वेसिं ॥ ५३२ ॥ (४४)

अर्थ – कुरु की चौड़ाई में से ह्रदों के २,००० और यमक पर्वतों के १,००० योजन बाद करने पर शेष को ७ से विभाजित करें। उन सबों का अन्तर जानें। (५३२) (४४)

पणपन्न सहस्साइं, दो चेव सयाइं एगसयराइं ।
दोसु वि कुरुसु एयं, हरयनगाणंतरं होइ ॥ ५३३ ॥ (४५)

अर्थ – ५५,२७१ योजन इस दोनो हीं कुरु में ह्रदों और पर्वतों का अन्तर है। (५३३) (४५)

लक्खा सत्त सहस्सा, अउणासीइ य अट्ठ य सयाइं ।
वासो उ भद्दसाले, पुव्वेणमेव अवरेणं ॥ ५३४ ॥ (४६)

अर्थ – भद्रशाल वन में पूर्व में और पश्चिम में व्यास १,०७,८७९ योजन है। (५३४) (४६)

आयामेणं दुगुणा, मंदरसहिया दुसेलविक्खंभं।
सोहित्ता जं सेसं, तं कुरुजीवं वियाणाहि ॥ ५३५ ॥ (४७)

अर्थ – लम्बाई में भद्रशाल वन से दोगुनी, मेरुपर्वत सहित, दो पर्वतों के विष्कंभ को बाद करके जो शेष बचे वह कुरु की जीवा जानें। (५३५) (४७)

अडवन्नसयं तेवीस-सहस्सा दो य लक्ख जीवा उ।
दोण्ह गिरीणायामो, संखित्तो तं धणु कुरूणं ॥ ५३६ ॥ (४८)

अर्थ – कुरु की जीवा २,२३,१५८ योजन है। दोनों (गजदंत) पर्वतों की लम्बाई को जोड़ें तो कुरु का धनुःपृष्ठ है। (५३६) (४८)

लक्खाइ तिन्नि दीहा, विज्जुप्पभगंधमायणा दोऽवि।
छप्पन्नं च सहस्सा, दोन्नि सया सत्तवीसा य ॥ ५३७ ॥ (४९)

अर्थ – विद्युत्प्रभ और गंधमादन दोनों पर्वत ३,५६,२२७ योजन लम्बे हैं। (५३७) (४९)

अउणट्ठा दोन्नि सया, उणसयरि सहस्स पंच लक्खा य।
सोमनसमालवंता, दीहा रुंदा दस सयाइं ॥ ५३८ ॥ (५०)

अर्थ – सौमनस और माल्यवंत ५,६९,२५९ योजन लम्बे और १,००० योजन चौड़े हैं। (५३८) (५०)

नव चेव सयसहस्सा, पणवीसं खलु भवे सहस्सा य।
चत्तारिसया छलसीया, धणुपट्ठाइं कुरूणं तु ॥५३९॥ (५१)

अर्थ – कुरु का धनुःपृष्ठ ९,२५,४८६ योजन है। (५३९) (५१)

पुव्वेण मंदराणं, जो आयामो उ भद्दसालवणे।
सो अडसीइ विभत्तो, विक्खंभो दाहिणुत्तरओ ॥५४०॥ (५२)

अर्थ – मेरुपर्वत के पूर्व में भद्रशाल वन की जो लम्बाई है, उसे ८८ से विभाजित करने पर दक्षिण में और उत्तर में (भद्रशाल वन का) विष्कंभ है। (५४०) (५२)

बार सया छव्वीसा, किंचूणा जम्मुइण वित्थारो।
अट्ठासीइगुणो पुण, एसो पुव्वावरो होइ ॥ ५४१ ॥ (५३)

अर्थ – (भद्रशाल वन का) दक्षिण में और उत्तर में विस्तार कुछ न्यून १,२२६ योजन है। ८८गुना यह विस्तार पूर्व में और पश्चिम में लम्बाई है। (५४१) (५३)

उत्तरुकुराइ धायइ, होइ महाधायइ य रुक्खा य।
तेसिं अहिवइ सुदंसण-पियदंसणनामया देवा ॥ ५४२ ॥ (५४)

अर्थ – उत्तरकुरु में धातकी और महाधातकी वृक्ष हैं। उनके अधिपति सुदर्शन और प्रियदर्शन नामक देव हैं। (५४२) (५४)

जो भणिओ जंबूए, विही उ सो चेव होइ एएसिं।
देवकुराए संवलि-रुक्खा जह जंबूद्दीवम्मि ॥ ५४३ ॥ (५५)

अर्थ – जंबूवृक्ष की जो विधि कही गई है, वही इसकी है। देवकुरु में जंबूद्वीप की भांति शाल्मलीवृक्ष हैं। (५४३) (५५)

अडवन्नसयं पणुवीस, सहस्सा दो य लक्ख मेरुवणं।
मंदरवक्खारनइहिं, अट्ठहा होंति पविभत्तं ॥ ५४४ ॥ (५६)

अर्थ – मेरुवन (भद्रशालवन) २,२५,१५८ योजन (लम्बा) है और मेरुपर्वत-वक्षस्कार (गजदंत) पर्वत-नदी से आठ भागों में विभक्त है। (५४४) (५६)

धायइसंडे मेरू, चुलसीइ सहस्स ऊसिया दोऽवि।
ओगाढा य सहस्सं, तं चिय सिहरम्मि वित्थिन्ना ॥५४५॥ (५७)

अर्थ – धातकीखंड में दोनों मेरुपर्वत ८४,००० योजन ऊँचे हैं और १,००० योजन (भूमि में) गहरे हैं। उतने ही (१,००० योजन) शिखर पर चौडे है। (५४५) (५७)

मूले पणनउय सया, चउणउय सया य होइ धरणीयले ।
विक्खंभो चत्तारि य, वणाइ जह जंबूद्दीवम्मि ॥५४६॥ (५८)

अर्थ – (मेरुपर्वत की) चौड़ाई मूल में ९,५०० योजन और पृथ्वीतल पर ९,४०० योजन है । जंबूद्वीप की भांति उसमें चार वन हैं । (५४६) (५८)

जत्थिच्छसि विक्खंभं, मंदरसिहरादि उच्चइत्ताणं ।
तं दसहिं भइय लद्धं, सहस्ससहियं तु विक्खंभं ॥५४७॥ (५९)

अर्थ – मेरुपर्वत के शिखर से उतरकर जहाँ चौड़ाई जानना चाहते हैं, उसे १० से विभाजित कर जो मिले, वह १,००० सहित चौड़ाई है । (५४७) (५९)

पंचेव जोयणसए, उड्ढं गंतूण पंचसयपिहुलं ।
नंदणवणं सुमेरुं, परिक्खिवित्ता ठियं रम्मं ॥ ५४८ ॥ (६०)

अर्थ – ५०० योजन ऊपर जाकर ५०० योजन चौड़ा मेरुपर्वत को चारों ओर से घेरकर स्थित सुन्दर नंदनवन है । (५४८) (६०)

नव चेव सहस्साइं, अद्धुट्ठाइं च जोयणसयाइं ।
बाहिरओ विक्खंभो, उ नंदणे होइ मेरूणं ॥ ५४९ ॥ (६१)

अर्थ – नंदनवन में मेरुपर्वत की बाह्य चौड़ाई ९,३५० योजन है । (५८९) (६१)

अट्ठेव सहस्साइं, अद्धुट्ठाइं च जोयणसयाइं ।
अब्भितरविक्खंभो, उ नंदणे होइ मेरूणं ॥ ५५० ॥ (६२)

अर्थ – नंदनवन में मेरुपर्वत की अंदरको चौड़ाई ८,३५० योजन है । (५५०) (६२)

तत्तो य सहस्साइं, उड्ढं गंतूण अद्धछप्पन्नं ।
सोमणसं नाम वणं, पंचसए होइ वित्थिन्नं ॥ ५५१ ॥ (६३)

अर्थ – वहाँ से ५५,००० योजन ऊपर जाकर ५०० योजन चौड़ा सौमनस वन है । (५५१) (६३)

तिन्नेव सहस्साइं, अट्ठेव सयाइं जोयणाणं तु ।
सोमणसवणे बाहिं, विक्खंभो होइ मेरूणं ॥ ५५२ ॥ (६४)

अर्थ – सौमनस वन में मेरुपर्वत की बाह्य चौड़ाई ३,८०० योजन है। (५५२) (६४)

दो चेव सहस्साइं, अट्ठेव सयाइं जोयणाणं तु ।
अंतो सोमणसवणे, विक्खंभो होइ मेरूणं ॥ ५५३ ॥ (६५)

अर्थ – सौमनस वन में मेरुपर्वत के अन्दर की चौड़ाई २,८०० योजन है । (५५३) (६५)

अट्ठावीस सहस्सा, सोमणसवणा उ उप्पइत्ताणं ।
चत्तारि सए रुंदं, चउणउए पंडगवणं तु ॥ ५५४ ॥ (६६)

अर्थ – सौमनस वन से २८,००० योजन ऊपर जाकर ४९४ योजन चौड़ा पंडकवन है । (५५४) (६६)

इसिं अंतो अंता, विजया वक्खारपव्वया सलिला ।
धायइसंडे दीवे, दोसु वि अद्धेसु नायव्वा ॥ ५५५ ॥ (६७)

अर्थ – धातकीखंड द्वीप में दोनों अर्ध में विजय, वक्षस्कार पर्वत तथा नदियों के अन्दर की तरफ थोड़ा सँकड़ा जानें। (५५५) (६७)

सीयासीओयवणा, एक्कारस सहस्स छ सय अडसीया ।
वक्खारट्ठ सहस्सा, पन्नरस सया उ सलिलाओ ॥५५६॥ (६८)
मेरू चउणउइसए, मेरूस्सुभओ वणस्सि संमाणं ।
अडपन्ना सत्त सया, पन्नरस सहस्स दो लक्खा ॥५५७॥ (६९)

अर्थ – सीता-सीतोदा के वन ११,६८८ योजन, वक्षस्कार पर्वत ८,००० योजन, नदियाँ १५,००० योजन, मेरुपर्वत ९,४०० योजन, मेरुपर्वत के दोनों तरफ वन का प्रमाण २,१५,७५८ योजन है । (५५६-५५७) (६८-६९)

छायाला तिन्नि सया, छायालसहस्स दोन्नि लक्खा य ।

वणनगनइमेरुवणाण, वित्थारो मेलिओ एसो ॥ ५५८ ॥ (७०)

अर्थ – २,४६,३४६ योजन – ये वन, पर्वत, नदी, मेरुपर्वत तथा वनों का एकत्र किया गया विस्तार है। (५५८) (७०)

दीवस्स य विक्खंभा, एवं सोहेउ जं भवे सेसं ।

सोलसविहत्तलद्धं, विजयाणं होइ विक्खंभो ॥ ५५९ ॥ (७१)

अर्थ – द्वीप की चौड़ाई में से इसे बाद करके, जो शेष रहे, उसे १६ से विभाजित कर जो मिले, वह विजयों की चौड़ाई है। (५५९) (७१)

एगं च सयसहस्सं, तेवन्नं जोयणाण य सहस्सा ।

छच्च सया चउपन्ना, विसुद्धसेसं हवइ एयं ॥ ५६० ॥ (७२)

अर्थ – १,५३,६५४ योजन – यह बाद करके बचा हुआ शेष है। (५६०) (७२)

नव चेव सहस्साइं, छच्चेव सया तिउत्तरा होंति ।

सोलसभागा छच्चिय, विजयाणं होइ विक्खंभो ॥५६१॥ (७३)

अर्थ – विजयों की चौड़ाई ९,६०३ ६/१६ योजन है। (५६१) (७३)

छस्सय चउपन्नहिया, तेवन्न सहस्स सयसहस्सं च ।

विजयखित्तपमाणे, वणनइमेरुवणं छूढं ॥ ५६२ ॥ (७४)

बिणवइ सहस्स लक्ख-तियं च जायं तु दीवओ सोहे ।

सेसट्ठहिए भागे, वक्खारगिरीण विक्खंभो ॥ ५६३ ॥ (७५)

अर्थ – १,५३,६५४ योजन विजय के क्षेत्रप्रमाण में वन, नदी, मेरुपर्वत तथा वन का विस्तार जोडने सें। ३,९२,००० योजन होता है। उसे द्वीप (की चौड़ाइ) में से बाद करें। शेष को आठ से विभाजित करें। वह वक्षस्कार पर्वत की चौड़ाई है। (५६२-५६३)(७४-७५)

पंच सया लक्खतियं, अडनउइ सहस्स दीवओ सोहे ।

सेसस्स य छब्भागे, विक्खंभो अंतरनइणं ॥ ५६४ ॥ (७६)

अर्थ – द्वीप में से ३,९८,५०० योजन बाद करें। शेष के छः भाग करें। वह अंतरनदी की चौड़ाई है। (५६४) (७६)

बारससहिय तिन्नि सया, अडसीइ सहस्स तिन्नि लक्खा य ।

दीवाओ सोहेउं, सेसद्धं वणमुहाणं तु ॥ ५६५ ॥ (७७)

अर्थ – द्वीप (की चौड़ाई) में से ३,८८,३१२ योजन बाद करके शेष का अर्ध, वह वनमुखों की चौड़ाई है। (५६५) (७७)

बायाला अट्ठ सया, चउसयरि सहस्स सयसहस्सं च ।

धायइविक्खंभाओ, सोहेउ मंदरवणं तु ॥ ५६६ ॥ (७८)

अर्थ – धातकीखंड की चौड़ाई में से १.७४,८४२ योजन बाद करके मेरुपर्वत और वन की चौड़ाई है। (५६६) (७८)

चउवीसं ससिरविणो, नक्खत्तसया य तिन्नि छत्तीसा ।

एगं च गहसहस्सं, छप्पन्नं धायइसंडे ॥ ५६७ ॥ (७९)

अर्थ – धातकीखंड में २४ चंद्र-सूर्य, ३३६ नक्षत्र, १,०५६ ग्रह हैं। (५६७) (७९)

अट्ठेव सयसहस्सा, तिन्नि सहस्सा य सत्त य सयाओ ।

धायइसंडे दीवे, तारागणकोडिकोडीणं ॥ ५६८ ॥ (८०)

अर्थ – धातकीखंड द्वीप में ८,०३,७०० कोटि-कोटि तारे हैं। (५६८) (८०)

धायइसंडो दीवो, खित्तसमासस्स तइय अहिगारो ।

गाहापरिमाणेणं, नायव्वो एगसीईओ ॥ ५६९ ॥ (८१)

अर्थ – क्षेत्रसमास की धातकीखंड नामक तीसरा अधिकार हुआ। वह गाथा परिमाण से ८१ संख्या का है। (५६९) (८१)

तृतीय अधिकार समाप्त

चतुर्थ अधिकार

कालोद समुद्र

अट्ठेव सयसहस्सा, कालाओ चक्कवालओ रुंदो ।
जोयणसहस्समेगं, ओगाहेणं मुणेयव्वो ॥ ५७० ॥ (१)

अर्थ - कालोद समुद्र की चक्रवाल चौड़ाई ८,००,००० योजन और गहराई १,००० योजन जानें । (५७०) (१)

इगनउइ सयसहस्सा, हवंति तह सत्तरी सहस्सा य ।
छच्च सया पंचहिया, कालोयहिपरिरओ एसो ॥ ५७१ ॥ (२)

अर्थ - ९१,७०,६०५ यह कालोदधि की परिधि है । (५७१) (२)

छायाला छच्च सया, बाणउइ सहस्स लक्ख बावीसं ।
कोसा य तिन्नि दारं-तरं तु कालोयहिस्स भवे ॥ ५७२ ॥ (३)

अर्थ - कालोदधि के द्वारों का अन्तर २२,९२,६४६ योजन ३ गाउ है। (५७२) (३)

जोयणसहस्स बारस, धायइवरपुव्वपच्छिमंताओ ।
गंतूणं कालोए, धायइसंडाण ससिरवीणं ॥ ५७३ ॥ (४)
जोयणसहस्स बारस, पुक्खर-वरपुव्वपच्छिमंताओ ।
गंतूणं कालोए, कालोयाणं ससिरवीणं ॥ ५७४ ॥ (५)
भणिया दीवा रम्मा, गोयमदीवसरिसा पमाणेणं ।
नवरं सव्वत्थ समा, दो कोसुच्चा जलंताओ ॥ ५७५ ॥ (६)

अर्थ - धातकीखंड के पूर्व-पश्चिम छोर से कालोद समुद्र में १२,००० योजन जाकर धातकीखंड के चन्द्र-सूर्य के, पुष्करवर के पूर्व-पश्चिम छोर से कालोद समुद्र में १२,००० योजन जाकर कालोद समुद्र के

चन्द्र-सूर्य का सुन्दर, प्रमाण से गौतमद्वीप जैसे द्वीप कहे गए हैं। वह सर्वत्र समान और पानी के अंत से २ गाउ ऊँचा है । (५७३-५७४-५७५) (४-५-६)

पयइए उदगरसं, कालोए उदग मासरासिनिभं ।
कालमहाकाला वि य, दो देवा अहिवई तस्स ॥ ५७६ ॥ (७)

अर्थ - कालोद समुद्र में पानी स्वभाव से पानी के स्वादवाला और उडद के ढेर जैसा (काला) है। उसके अधिपति काल-महाकाल दो देव हैं। (५७६) (७)

बायालीसं चंदा, बायालीसं च दिणयरा दित्ता ।
कालोयहिम्मि एए, चरंति संबद्धलेसागा ॥ ५७७ ॥ (८)

अर्थ - कालोदधि में (जंबूद्वीप के चन्द्र-सूर्य के साथ) संबद्ध लेश्यावाले (एक पंक्ति में रहनेवाले) देदीप्यमान ये ४२ चन्द्र और ४२ सूर्य विचरण करते हैं । (५७७) (८)

नक्खत्ताण सहस्सं, सयं च छावत्तरं मुणेयव्वं ।
छच्च सया छन्नउया, गहाण तिन्नेव य सहस्सा ॥ ५७८ ॥ (९)

अर्थ - नक्षत्र १,१७६ और ग्रह ३,६९६ जानें । (५७८) (९)

अट्ठावीसं कालोयहिम्मि, बारस य सहस्साइं ।
नव य सया पन्नासा, तारागणकोडिकोडीणं ॥ ५७९ ॥ (१०)

अर्थ - कालोदधि में २८,१२,९५० कोटि-कोटि तारे हैं। (५७९) (१०)

कालोयही समत्तो, खित्तसमासे चउत्थ अहिगारो ।
गाहापरिमाणेणं, एक्कारस होंति गाहाओ ॥ ५८० ॥ (११)

अर्थ - क्षेत्रसमास में कालोदधि नामक चौथा अधिकार समाप्त हुआ। गाथा परिमाण से इसकी ११ गाथाएँ हैं। (५८०) (११)

चतुर्थ अधिकार समाप्त

पंचम अधिकार

पुष्करवरद्वीप

पुक्खरवरदीवेणं, वलयगिइसंठिएण कालोओ ।
परिवेढिउं समंता, सोलस लक्खा य पिहुलो सो ॥५८१॥ (१)

अर्थ – कालोद समुद्र वलयाकृति से संस्थित ऐसे पुष्करवरद्वीप से चारों ओर से घिरा हुआ है। वह (पुष्करवरद्वीप) १६,००,००० योजन चौड़ा है। (५८१) (१)

एयस्स मज्झयारे, नामेणं माणुसोत्तरो सेलो ।
जगइ व जंबुद्दीवं, वेढेत्तु ठिओ मणुयलोयं ॥ ५८२ ॥ (२)

अर्थ – इसके मध्य में मानुषोत्तर नामक पर्वत है। जिस प्रकार जगती जंबूद्वीप को घेरे हुए है, उसी प्रकार वह मनुष्यलोक को घेरे हुए है। (५८२) (२)

सत्तरस जोयणसए, इगवीसे सो समुसिओ रम्मो ।
तीसे चत्तारि सए, कोसं च अहो समोगाढो ॥ ५८३ ॥ (३)

अर्थ – वह सुन्दर, १,७२१ योजन ऊँचा और ४३० योजन १ गाउ नीचे अवगाढ है। (५८३) (३)

मूले दस बावीसे, रुंदो मज्झम्मि सत्त तेवीसे ।
उवरिं चत्तारि सए, चउवीसे होइ विच्छिन्नो ॥ ५८४ ॥ (४)

अर्थ – वह मूल में १,०२२ योजन, मध्य में ७२३ योजन और ऊपर ४२४ योजन विस्तीर्ण है। (५८४) (४)

एगा जोयणकोडी, लक्खा बायाल तीस य सहस्सा ।
दो य सय अउणपन्ना, अब्भिंतरपरिरओ तस्स ॥ ५८५ ॥ (५)

अर्थ – उसकी अभ्यंतर परिधि १,४२,३०,२४९ योजन है। (५८५) (५)

एगा जोयणकोडी, छत्तीस सहस्स लक्ख बायाला ।
तेरसहिय सत्त सया, बाहिरपरिही गिरिवरस्स ॥ ५८६ ॥ (६)

अर्थ – (मानुषोत्तर) गिरिवर की बाह्य परिधि १,४२,३६,७१३ योजन है। (५८६) (६)

जंबूनयमओ सो, रम्मो अद्धजवसंठिओ भणिओ ।
सीहनिसाइ जेणं, दुहा कओ पुक्खरद्दीवो ॥ ५८७ ॥ (७)

अर्थ – वह जांबूनदमय, अर्धयव के आकार में, बैठे हुए सिंह के जैसा है, जिसने पुष्करवरद्वीप के दो भाग किए। (५८७) (७)

अट्ठेव सयसहस्सा, अब्भिंतरपुक्खरस्स विक्खंभो ।
उत्तरदाहिणदीहा, उसुयारा तस्स मज्झम्मि ॥ ५८८ ॥ (८)

धायइसंडयतुल्ला, कालोययमाणुसोत्तरे पुट्ठा ।
तेहिं दुहा निद्दिस्सइ, पुव्वद्धं पच्छिमद्धं च ॥ ५८९ ॥ (९)

अर्थ – अभ्यंतर पुष्करवरद्वीप की चौड़ाई ८,००,००० योजन है। उसके मध्य में उत्तर-दक्षिण लम्बे, धातकीखंड के समान, कालोदसमुद्र और मानुषोत्तर पर्वत को स्पर्श किए हुए इषुकार पर्वत हैं। उससे दो भाग कहलाते हैं – पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध। (५८८-५८९) (८-९)

तिन्नेव सयसहस्सा, नवनउइ खलु भवे सहस्सा य ।
पुक्खरवरदीवड्ढे, ओगाहित्ताण दो कुंडा ॥ ५९० ॥ (१०)

दो चेव सहस्साइं, वित्थिन्ना होंति आणुपुव्वीए ।
दस चेव जोयणाइं, उव्वेहेणं भवे कुंडा ॥ ५९१ ॥ (११)

अर्थ – पुष्करवरद्वीपार्ध में ३,९९,००० योजन जाकर क्रमश: २,००० योजन विस्तारवाले और १० योजन गहरे दो कुंड हैं। (५९०-५९१) (१०-११)

उव्वेहो वेयड्ढाणं, जोयणाइं तु छस्सकोसाइं ।
पणुवीसं उव्विद्धा, दो चेव सयाइं वित्थिन्ना ॥ ५९२ ॥ (१२)

अर्थ – वैताढ्य पर्वतों की गहराई (भूमि में) ६ योजन १ गाउ है। वह २५ योजन ऊँचा और २०० योजन विस्तीर्ण है। (५९२) (१२)

धायइसंडइदुगुणा, वासहरा होंति पुक्खरद्धम्मि ।
उसुयारा साहस्सा, ते मिलिया होंतिमं खित्तं ॥ ५९३ ॥ (१३)

अर्थ – पुष्करार्ध में वर्षधरपर्वत धातकीखंड की अपेक्षा दोगुना (विस्तारवाला) है। इषुकार पर्वत १,००० योजन (विस्तारवाला) है। वह मिलकर यह क्षेत्र होता है। (५९३) (१३)

पणपन्नं च सहस्सा, छच्चेव सया हवंति चुलसीया ।
तिन्नेव सयसहस्सा, वासविहीणं तु जं खित्तं ॥ ५९४ ॥ (१४)

एयं पुण सोहिज्जा, कालोयहिपरिरया उ सेसमिणं ।
चउदस सहस्स नव सय, इगवीसइ लक्ख अडसीइ ॥५९५॥ (१५)

अर्थ – ३,५५,६८४ योजन क्षेत्रं से रहित जो क्षेत्र है, उसे कालोदधि की परिधि में से बाद करें। शेष यह है – ८८,१४,९२१ योजन है। (५९४-५९५) (१४-१५)

वासहरविरहियं खलु, जं खित्तं पुक्खरद्धदीवम्मि ।
जावंतावेहि गुणं, भय दोहिं सएहिं बारेहिं ॥ ५९६ ॥ (१६)

अर्थ – पुष्करवरद्वीप में वर्षधरपर्वत से रहित जो क्षेत्र उसे जितने-उतने गुणकारों से गुणित करें और २१२ से विभाजित करें। (५९६) (१६)

इयालीस सहस्सा, पंचेव सया हवंति गुणसीया ।
तेवत्तरमंससयं, मुहविक्खंभो भरहवासे ॥ ५९७ ॥ (१७)

अर्थ – भरतक्षेत्र की मुखचौड़ाई ४१,५७९ १७३/२१२ योजन है। (५९७) (१७)

उणवीसा तिन्नि सया, छावट्ठि सहस्स सयसहस्सं च ।
अंसा वि य छप्पन्नं, मुहविक्खंभो उ हेमवए ॥ ५९८ ॥ (१८)

अर्थ – हिमवंतक्षेत्र की मुखचौड़ाई १,६६,३१९ ५६/२१२ योजन है। (५९८) (१८)

सत्तत्तर दोन्नि सया, पण्णट्ठि सहस्स छच्च लक्खा य ।
बारस चेव य अंसा, मुहविक्खंभो उ हरिवासे ॥५९९॥ (१९)

अर्थ – हरिवर्षक्षेत्र की मुखचौड़ाई ६,६५,२७७ १२/२१२ योजन है। (५९९) (१९)

अटठुत्तरसयमेगं, एगट्ठि सहस्स लक्ख छव्वीसं ।
अडयालीसं अंसा, मुहविक्खंभो विदेहस्स ॥ ६०० ॥ (२०)

अर्थ – महाविदेहक्षेत्र की मुखचौड़ाई २६,६१,१७८ ४८/२१२ योजन है। (६००) (२०)

तं चेव य सोहिज्जा, पुक्खरअद्धद्धपरिरया सेसं ।
जावंतावेहि गुणे, मज्झे खित्ताण विक्खंभो ॥ ६०१ ॥ (२१)

अर्थ – पुष्करवरार्ध के अर्ध की परिधि में से उसे (क्षेत्रों से रहित क्षेत्र को) बाद करें। शेष को जितने-उतने गुणाकारों से गुणा करें। वह क्षेत्र के मध्य में चौड़ाई है। (६०१) (२१)

सत्तावीसा चउरो, सया उ सत्तरस सयसहस्सा य।
एगा य होइ कोडी, पुक्खरअद्धद्धपरिहीओ ॥ ६०२ ॥ (२२)

अर्थ – पुष्करावर्ध के अर्ध की परिधि १,१७,००,४२७ योजन है। (६०२) (२२)

कोडी तेरस लक्खा, चोयाला सहस्स सत्त तेयाला।
पुक्खरवरस्स मज्झे, धुवरासी एस नायव्वो ॥ ६०३ ॥ (२३)

अर्थ – १,१३,४४,७४३ योजन – पुष्करवर के मध्य में यह ध्रुवराशि जानें। (६०३) (२३)

तेवन्नं च सहस्सा, पंच सया बारसुत्तरा होंति।
नवणउयं अंससयं, मज्झे भरहस्स विक्खंभो ॥ ६०४ ॥ (२४)

अर्थ – भरतक्षेत्र के मध्य में चौड़ाई ५३,५१२ १९९/२१२ योजन है। (६०४) (२४)

एगावन्ना चउदस, सहस्स दो चेव सयसहस्सा य।
सट्ठि अंसाण सयं, हेमवए मज्झविक्खंभो ॥ ६०५ ॥ (२५)

अर्थ – हिमवंतक्षेत्र की मध्य चौड़ाई २,१४,०५१ १६०/२१२ योजन है। (६०५) (२५)

सत्तहिया दोन्नि सया, छप्पन्न सहस्स अट्ठ लक्खा य।
चत्तारि चेव अंसा, हरिवासे मज्झविक्खंभो ॥ ६०६ ॥ (२६)

अर्थ – हरिवर्षक्षेत्र की मध्यचौड़ाई ८,५६,२०७ ४/२१२ योजन है। (६०६) (२६)

अडवीसा अट्ठ सया, चउवीस सहस्स लक्ख चउतीसं।
सोलस चेव य अंसा, मज्झविदेहस्स विक्खंभो ॥६०७॥ (२७)

अर्थ – मध्यमहाविदेह क्षेत्र की (मध्य) चौड़ाई ३४,२४,८२८ १६/२१२ योजन है। (६०७) (२७)

ते चेव य सोहिज्जा, माणुसखेत्तस्स परिरया सेसं।
जावंतावेहि गुणं, बाहिरखेत्तस्स विक्खंभो ॥ ६०८ ॥ (२८)

अर्थ – मनुष्यक्षेत्र की परिधि में से उसे (क्षेत्रों से रहित क्षेत्र को) ही बाद करें। शेष को जितने-उतने गुणाकारों से गुणा करें। वह क्षेत्रों की बाह्य चौड़ाई है। (६०८) (२८)

अट्ठत्तीसं लक्खा, कोडी चउहत्तरी सहस्सा य।
पंच सया पन्नट्ठा, विसुद्धसेसं हवइ एवं ॥ ६०९ ॥ (२९)

अर्थ – १,३८,७४,५६५ योजन – यह बाद करने के बाद शेष है। (६०९) (२९)

पन्नट्ठि सहस्साइं, चत्तारि सया हवंति छायाला।
तेरस चेव य अंसा, बाहिरओ भरहविक्खंभो ॥ ६१० ॥ (३०)

अर्थ – भरतक्षेत्र की बाह्य चौड़ाई ६५,४४६ १३/२१२ योजन है। (६१०) (३०)

चुलसीया सत्तसया, एगट्ठि सहस्स दोन्नि लक्खा य।
अंसा वि य बावन्नं, हेमवए बाहिविक्खंभो ॥ ६११ ॥ (३१)

अर्थ – हिमवंतक्षेत्र की बाह्य चौड़ाई २,६१,७८४ ५२/२१२ योजन है। (६११) (३१)

सयमेगं छत्तीसं, सीयाल सहस्स दस य लक्खाइं।
अट्ठहिया दोन्नि सया, भागा हरिवासविक्खंभो ॥६१२॥ (३२)

अर्थ – हरिवर्षक्षेत्र की बाहय चौड़ाई १०,४७,१३६ २०८/२१२ योजन है। (६१२) (३२)

सीयाला पंच सया, अडसीइ सहस्स लक्ख इयाला।
छन्नउयं अंससयं, विदेहविक्खंभ बाहिरओ ॥ ६१३ ॥ (३३)

अर्थ – महाविदेहक्षेत्र की बाह्य चौड़ाई ४१,८८,५४७ १९६/२१२ योजन है। (६१३) (३३)

वासविहूणं खित्तं, दुसहस्सूणं तु पुक्खरद्धम्मि।
जावंतावेहि गुणं, चुलसीइहियम्मि गिरिवासो ॥ ६१४ ॥ (३४)

अर्थ – पुष्करार्ध में क्षेत्रों से रहित क्षेत्र को २,००० योजन न्यून करके, जितने-उतने गुणाकारों से गुणा करके ८४ से भाग देने पर वर्षधर पर्वतों का व्यास आता है। (६१४) (३४)

दसहिय बायाल सया, चोयाल कला य चुल्लहिमवंते।
बीए कलट्ठ सोलस, सहस्स बायाल अट्ठ सया ॥६१५॥ (३५)

अर्थ – ४,२१० ४४/८४ योजन लघुहिमवंत पर्वत की चौड़ाई है। अन्य (महाहिमवंत पर्वत) की चौड़ाई १६,८४२ ८/८४ योजन है। (६१५) (३५)

सत्तट्ठि सहस्साइं, तिन्नेव सया हवंति अट्ठट्ठा।
बत्तीस कला निसहे, विक्खंभो पुक्खरद्धम्मि ॥ ६१६ ॥ (३६)

अर्थ – पुष्करार्ध में निषधपर्वत की चौड़ाई ६७,३६८ ३२/८४ योजन है। (६१६) (३६)

अहवा धायइदीवे, जो विक्खंभो उ होइ उ नगाणं।
सो दुगुणो नायव्वो, पुक्खरद्धे नगाणं तु ॥ ६१७ ॥ (३७)

अर्थ – अथवा धातकीखंड में पर्वतों की जो चौड़ाई है वह दोगुनी हुई पुष्करार्ध में पर्वतों की चौड़ाई है। (६१७) (३७)

वासहरा वक्खारा, दहनइकुंडा वणा य सीयाए।
दीवे दीवे दुगुणा, वित्थरओ उस्सए तुल्ला ॥ ६१८ ॥ (३८)

अर्थ – प्रत्येक द्वीप पर वर्षधर पर्वत, वक्षस्कारपर्वत, द्रह, नदियाँ, कुंड और सीता के वन विस्तार से दोगुने और ऊँचाई में समान हैं। (६१८) (३८)

उसुयारजमगकंचण-चित्तविचित्ता य वट्टवेयड्ढा।
दीवे दीवे तुल्ला, तुएहला जे य वेयड्ढा ॥ ६१९ ॥ (३९)

अर्थ – ईषुकारपर्वत, यमकगिरि, कंचनगिरि, चित्र-विचित्र पर्वत, वृत्तवैताढ्यपर्वत, दो मेखलाओंवाले जो वैताढ्य पर्वत वे सभी द्वीपों में समान हैं। (६१९) (३९)

सेव्वेऽवि पव्वयवरा, समयखित्तम्मि मंदरविहूणा।
धरणियलं ओगाढा, उस्सेहचउत्थयं भागं ॥ ६२० ॥ (४०)

अर्थ – समयक्षेत्र (मनुष्यक्षेत्र) में मेरुपर्वत के अतिरिक्त सभी पर्वत ऊँचाई के चौथे भाग जितने पृथ्वीतल में अवगाढ हैं। (६२०) (४०)

चउणउइसयं मेरुं, विदेहमज्झा विसोहइत्ताणं।
सेसस्स य जं अद्धं, तं विक्खंभो कुरूणं तु ॥ ६२१ ॥ (४१)

अर्थ – महाविदेहक्षेत्र के मध्य (चौड़ाई) में से ९,४०० योजन मेरुपर्वत को बाद करके शेष का जो अर्ध है वह कुरु की चौड़ाई है। (६२१) (४१)

सत्तत्तरिसयाइं, चउदसअहियाइं सत्तरसलक्खा।
होइ कुरुविक्खंभो, अट्ठ य भागा य परिसेसा ॥६२२॥ (४२)

अर्थ – कुरु की चौड़ाई १७,०७,७१४ ८/२१२ योजन है। (६२२) (४२)

हरया चउसहस्सा, जमगाण सहस्स सोहय कुरुओ।
सेसस्स सत्तभागं, अंतरमो जाण सव्वेसिं ॥ ६२३ ॥ (४३)

अर्थ – ४,००० योजन ह्रद, यमकपर्वतों का १,००० योजन कुरु में से बाद करें। शेष के सात भाग करें। वह सबों का अन्तर है। (६२३) (४३)

चत्तालीस सहस्सा, दो लक्खा नव सया य अउणट्ठा।
एगो य सत्तभागो, हरयनगाणंतरं भणियं ॥ ६२४ ॥ (४४)

अर्थ – ह्रदों और पर्वतों का अन्तर २,४०,९५९ १/७ योजन कहा गया है। (६२४) (४४)

अडवन्ना सत्तसया, पन्नरस सहस्स दुन्नि लक्खा य।
वासो उ भद्दसाले, पुव्वेणेमेव अवरेण ॥ ६२५ ॥ (४५)

अर्थ – भद्रशालवन का पूर्व में व्यास २,५०,७५८ योजन है। इसी प्रकार पश्चिम में है। (६२५) (४५)

तस्सायामा दुगुणा, मंदरसहिया दुसेलविक्खंभं।
सोहित्ता जं सेसं, कुरूण जीवा उ जाणाहि ॥ ६२६ ॥ (४६)

अर्थ – मेरुपर्वत सहित उसकी दोगुनी लम्बाई में से दो पर्वतों की चौड़ाई बाद करके जो शेष रहे, उसे कुरु की जीवा जानें। (६२६) (४६)

चत्तारि लक्ख छत्तीस, सहस्सा नव सया य सोलहिया।
दोण्ह गिरीणायामो, संखित्तो तं धणु कुरूणं ॥ ६२७ ॥ (४७)

अर्थ – ४,३६,९१६ योजन (कुरु की जीवा है।) एकत्र की गई दो पर्वतों की लम्बाई कुरु का धनुःपृष्ठ है। (६२७) (४७)

सोमणसमालवंतो, दीहा वीसं भवे सयसहस्सा।
तेयालीस सहस्सा, अउणावीसा य दुन्नि सया ॥ ६२८ ॥ (४८)

अर्थ – सौमनस तथा माल्यवंत पर्वत २०,४३,२१९ योजन लम्बा है। (६२८) (४८)

सोलसहिय सयमेगं, छव्वीससहस्स सोलस य लक्खा।
विज्जुप्पभो नगो, गंधमायणो चेव दीहाओ ॥ ६२९ ॥ (४९)

अर्थ – विद्युत्प्रभ और गन्धमादन पर्वत १६,२६,११६ योजन लम्बे हैं। (६२९) (४९)

अउणत्तरी सहस्सा, लक्खा छत्तीस तिन्नि य सयाइं।
पणतीस जोयणाणि य, धणुपुट्ठाइ कुरूणं तु ॥६३०॥ (५०)

अर्थ – कुरु का धनुःपृष्ठ ३६,६९,३३५ योजन है। (६३०) (५०)

पुव्वेण मंदराणं, जो आयामो उ भद्दसालवणे।
सो अडसीइ विहत्तो, विक्खंभो दाहिणुत्तरओ ॥६३१॥ (५१)

अर्थ – मेरुपर्वत के पूर्व में भद्रशाल वन की जो लम्बाई है, उसे ८८ से भाग देने पर दक्षिण-उत्तर की चौड़ाई आती है। (६३१) (५१)

इगवन्ना चउवीसं, सया उ सयरि अडसीइ भागा य ।
जम्मुत्तर वित्थारो, अडसीइ गुणो उ विवरीओ ॥६३२॥ (५२)

अर्थ – (भद्रशालवन का) दक्षिण-उत्तर विस्तार २,४५१ ७०/८८ योजन है । वह ८८ गुणा विपरीत (पूर्वमें-पश्चिम में) लम्बाई है । (६३२) (५२)

पउमे य महापउमे, रुक्खा उत्तरुकुरसु जंबुसमा ।
एएसु वसंति सुरा, पउमे तह पुंडरीए य ॥ ६३३ ॥ (५३)

अर्थ – उत्तरकुरु में जंबूवृक्ष के समान पद्मवृक्ष और महापद्मवृक्ष हैं। उनमें पद्म और पुंडरीकदेव निवास करते हैं। (६३३) (५३)

धायइसंडयमेरुहिं, समाणा दोऽवि मेरुणो नवरिं ।
आयामो विक्खंभो उ, दुगुणिओ भद्दसालवणे ॥६३४॥ (५४)

अर्थ – दोनों मेरुपर्वत धातकीखंड के मेरुपर्वत के समान हैं, परन्तु भद्रशाल वन की लम्बाई और चौड़ाई दोगुनी है । (६३४) (५४)

सीयासीओयवणा, तेवीस सहस्स ति सय छस्सयरा ।
सलिला तिन्नि सहस्सा, वक्खारा सोलस सहस्सा ॥६३५॥ (५५)

मेरु चउणउइ सए, मेरुस्सुभओ वणस्सिमं माणं ।
सोलसहिय पंच सया, इगतीस सहस्स लक्ख चऊ ॥६३६॥ (५६)

अर्थ – सीता-सीतोदा के वन २३,३७६ योजन, नदियाँ ३,००० योजन, वक्षस्कार पर्वत १६,००० योजन, मेरुपर्वत ९,४०० योजन है। मेरु की दोनों तरफ के वन का यह प्रमाण है – ४,३१,५१६ योजन। (६३५-६३६) (५५-५६)

सव्वं पि इमं मिलियं, हवंति चत्तारि सयसहस्साइं ।
तेसीइं च सहस्सा, बाणउया दोन्नि उ सयाइं ॥ ६३७ ॥ (५७)

अर्थ – यह सब इकट्ठा किया हुआ ४,८३,२९२ योजन है । (६३७) (५७)

दीवस्स उ विक्खंभा, एयं सोहेउ जं भवे सेसं ।
सोलसविहत्तलद्धं, जाणसु विजयाण विक्खंभं ॥६३८॥ (५८)

अर्थ – द्वीप की चौड़ाई में से इसे बाद कर जो शेष हो, उसे १६ से भाग देने पर विजयों की चौड़ाई जानें। (६३८) (५८)

उणवीस सहस्साइं, सत्तेव सया हवंति चउणउया ।
भागा चउरो य भवे, विजयाणं होइ विक्खंभो ॥६३९॥ (५९)

अर्थ – विजयों की चौड़ाई १९,७९४ ४/१६ योजन है । (६३९) (५९)

अट्ठहिया सत्तसया, सोलस साहस्सिया तिलक्खं च ।
विजया खित्तपमाणे, वणनइमेरुवणे छूढे ॥ ६४० ॥ (६०)

जायं चुलसीइ सहस्सा, सत्त लक्खा उ दीवओ सोहे ।
सेसट्ठहिए भागे, वक्खारगिरीण विक्खंभो ॥ ६४१ ॥ (६१)

अर्थ – विजयों का क्षेत्रप्रमाण ३,१६,७०८ योजन में वन, नदियाँ, मेरुपर्वत और वनों को भी जोड़ें। ७,८४,००० होता है। उसे द्वीप (की चौड़ाई) में से बाद करें। शेष को ८ से भाग देने पर वक्षस्कारपर्वतों की चौड़ाई आती है। (६४०-६४१) (६०-६१)

सत्ताणउइ सहस्सा, सत्त य लक्खा उ दीवओ सोहे ।
सेसस्स य छब्भाए, विक्खंभो अंतरनइणं ॥ ६४२ ॥ (६२)

अर्थ - द्वीप में से ७,९७,००० बाद करें। शेष को छः से भाग देने पर अंतरनदी की चौड़ाई आती है। (६४२) (६२)

छावत्तरी सहस्सा, सत्त य लक्खा य छसय चउवीसा।
दीवाओ सोहेसो, सेसद्धं वणमुहं जाण ॥ ६४३ ॥ (६३)

अर्थ - द्वीप में से ७,७६,६२४ योजन बाद करके शेष का अर्ध वनमुख जानें। (६४३) (६३)

अउणट्ठि सहस्साइं, चुलसीइ जोयण तिलक्खं च।
सोहित्तु पुक्खरद्धा, मेरुवणं होइमं तं च ॥ ६४४ ॥ (६४)

चत्तालीस सहस्सा, चउरो लक्खा य नव सया सोला।
पुक्खरवरदीवड्ढे, मेरुवणस्सेस आयामो ॥ ६४५ ॥ (६५)

अर्थ - पुष्करार्ध में से ३,५९,०८४ योजन बाद करके मेरु का वन होता है। वह ४,४०,९१६ योजन है। पुष्करवरद्वीपार्ध में यह मेरु के वन की लम्बाई है। (६४४-६४५) (६४-६५)

बावत्तरिं च चंदा, बावत्तरिमेव दिणयरा दित्ता।
पुक्खरवरदीवड्ढे, चरंति एए पयासंता ॥ ६४६ ॥ (६६)

अर्थ - ७२ चन्द्र और देदीप्यमान ७२ सूर्य पुष्करवरद्वीपार्ध में प्रकाश करते हुए विचरण करते है। (६४६) (६६)

तिन्नि सया छत्तीसा, छच्च सहस्सा महग्गहाणं तु।
नक्खत्ताणं तु भवे, सोलाणि दुवे सहस्साणि ॥ ६४७ ॥ (६७)

अर्थ - ६,३३६ महाग्रह हैं। नक्षत्र २,०१६ हैं। (६४७) (६७)

अडयाल सयसहस्सा, बावीसं खलु भवे सहस्साइं।
दो य सय पुक्खरद्धे, तारागणकोडिकोडीणं ॥ ६४८ ॥ (६८)

अर्थ - पुष्करार्ध में ४८,२२,२०० कोटि-कोटि तारे हैं। (६४८) (६८)

अट्ठासीइं च गहा, अट्ठावीसं तु होंति नक्खत्ता।
एगससीपरिवारो, इत्तो ताराण वोच्छामि ॥ ६४९ ॥ (६९)

अर्थ - ८८ ग्रह और २८ नक्षत्र एक चन्द्र का परिवार है। अब तारों के विषय में कहूँगा। (६४९) (६९)

छावट्ठि सहस्साइं, नव चेव सयाइं पंचसयराइं।
एगससीपरिवारो, तारागणकोडिकोडीणं ॥ ६५० ॥ (७०)

अर्थ - ६६,९७५ कोटि-कोटि तारे एक चन्द्र के परिवार हैं। (६५०) (७०)

ससिरविणो इक्किक्का, दुगुणा दीवे चउग्गुणा लवणे।
लावणिगा य तिगुणिया, ससिसूरा धायइसंडे ॥६५१॥ (७१)

अर्थ - १-१ चन्द्र-सूर्य (जंबू)द्वीप में दोगुने हैं, लवणसमुद्र में चार गुणा हैं। लवणसमुद्र के चन्द्र-सूर्य तीन गुणा धातकीखंड में हैं। (६५१) (७१)

दो चंदा इह दीवे, चत्तारि य सायरे लवणतोए।
धायइसंडे दीवे, बारस चंदा य सूरा य ॥ ६५२ ॥ (७२)

अर्थ - इस द्वीप में दो चन्द्र हैं। लवणसमुद्र में चार हैं। धातकीखंड द्वीप में १२ चन्द्र और १२ सूर्य हैं। (६५२) (७२)

धायइसंडप्पभिई, उद्दिट्ठा तिगुणिया भवे चंदा।
आइल्लचंदसहिया, अणंतराणंतरे खित्ते ॥ ६५३ ॥ (७३)

अर्थ - धातकीखंड से लेकर बाद में आनेवाले क्षेत्र (द्वीपसमुद्र) में

आदि के चन्द्रसहित तीनगुणा उद्दिष्ट चन्द्र हैं। (६५३) (७३)

रिक्खग्गहतारग्गं, दीवसमुद्दे जइच्छसे नाउं।
तस्स ससीहिं गुणियं, रिक्खग्गहतारग्गं तु ॥ ६५४ ॥ (७४)

अर्थ – जिस द्वीप-समुद्र में नक्षत्र-ग्रह और तारों को जानना चाहते हैं, उसके चन्द्रों से गुणित (एक चन्द्र के) नक्षत्र-ग्रह-तारे (उस द्वीप-समुद्र में हैं।) (६५४) (७४)

गाहाणं छच्च सया, सत्तत्तीसा य होंति पडिपुन्ना।
(पणपन्ना हुंति इत्थ सत्थम्मि)
खित्तसमासं पगरणं, निद्दिट्ठं पुव्वसूरीहिं ॥ ६५५ ॥ (७५)
(निद्दिट्ठं सव्वसंखाए)

अर्थ – पूर्वाचार्य भगवन्तों के द्वारा कथित क्षेत्रसमास प्रकरण ६३७ गाथाओं का परिपूर्ण है। (इस शास्त्र में कहा गया क्षेत्रसमास प्रकरण सर्वसंख्या से ६५५ गाथाप्रमाण है।) (६५५) (७५)

समयखित्तसमासं, जो पढइ य जो य णं निसामेइ।
तेसिं सुयंगदेवी, उत्तमसुयसंपयं देउ ॥ ६५६ ॥ (७६)

अर्थ – समयक्षेत्र के समास को जो पढ़ता है और जो सुनता है, उसे श्रुतांगदेवी उत्तम श्रुत की सम्पदा प्रदान करें। (६५६) (७६)

पंचम अधिकार समाप्त

बृहत् क्षेत्र समासना गाथा-शब्दार्थ समाप्त

● ● ●

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभण्डार परिचय

(१) शा. सरेमल जवेरचंदजी बेडावाला परिवार द्वारा स्वद्रव्य से संवत् २०६३ में निर्मित...

(२) गुरुभगवंतो के अभ्यास के लिये २५०० प्रताकार ग्रंथ व २१००० से ज्यादा पुस्तको के संग्रह में से ३३००० से ज्यादा पुस्तके इस्यु की है...

(३) श्रुतरक्षा के लिए ४५ हस्तप्रत भंडारो को डिजिटाईजेशन के द्वारा सुरक्षित किया है और उस में संग्रहित ८०००० हस्तप्रतो में से १८०० से ज्यादा हस्तप्रतो की झेरोक्ष विद्वान गुरुभगवंतो को संशोधन संपादन के लिये भेजी है...

(४) जीर्ण और प्रायः अप्राप्य २२२ मुद्रित ग्रंथो को डिजिटाईजेशन करके मर्यादित नकले पुनः प्रकाशित करके श्रुतरक्ष व ज्ञानभंडारो को समृद्ध बनाया है...

(५) अहो ! श्रुतज्ञानम् चातुर्मासिक पत्रिका के ४६ अंक श्रुतभक्ति के लिये स्वद्रव्य से प्रकाशित किये है...

(६) ई-लायब्रेरी के अंतर्गत ९००० से ज्यादा पुस्तको का डिजिटल संग्रह पीडीएफ उपलब्ध है, जिसमें से गुरुभगवंतो की जरुरियात के मुताबिक मुद्रित प्रिन्ट नकल भेजते है...

(७) हर साल पूज्य साध्वीजी म.सा. के लिये प्राचीन लिपि (लिप्यंतरण) शीखने का आयोजन...

(८) बच्चों के लिये अंग्रेजी में सचित्र कथाओं को प्रकाशित करने का आयोजन...

(९) अहो ! श्रुतम् ई परिपत्र के द्वारा अद्यावधि अप्रकाशित आठ कृतिओं को प्रकाशित की है...

(१०) नेशनल बुक फेर में जैन साहित्य की विशिष्ट प्रस्तुति एवं प्रचार प्रसार।

(११) पंचम समिति के विवेकपूर्ण पालन के लिये उचित ज्ञान का प्रसार एवं प्रायोगिक उपाय का आयोजन।

(१२) चतुर्विध संघ उपयोगी प्रियम् के ६० पुस्तको का डिजिटल प्रिन्ट द्वारा प्रकाशन व गुरुभगवंत व ज्ञानभंडारो के भेट।

● ● ●